मैं वही हूँ
(उपन्यास)



लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

सुनील
गंगोपाध्याय

रंजना और व्रतीन मुखोपाध्याय
को ।

अभी अच्छी तरह सवेरा नहीं हुआ है। आकाश मेघिल है। जंगल की ओर अँधेरा अब भी परत-दर-परत जमा हुआ है। नदी के उस पार थोड़ी दूरी पर जो पहाड़ है, उसकी चोटी पर रक्तिम आभा है। दसों दिशाओं में सन्नाटा तैर रहा है।

कल रात भी हल्की बर्फ गिरी थी। झाऊ, चिनार और शीशम के वृक्षों पर जहाँ-तहाँ फूलों के गुच्छे की तरह बर्फ जमी हुई है। हवा में ठिठुरन है।

पहाड़ और जंगल के बीच एक सुन्दर उपत्यका। यहाँ की मिट्टी उर्वर है, बीच-बीच में छोटे-छोटे टीले हैं। निकट की एक पहाड़ी की चोटी एक ओर इस तरह झुकी हुई है कि खतरनाक प्रतीत होती है। प्रकृति यहाँ बहुत दूर तक फैली हुई है। उषाकाल के प्रकाश और वायु में एक ताजा गंध मिली हुई है।

एक पुरुष ढालू उपत्यका से नदी की ओर उतर रहा है। पुरुष का चेहरा विशाल है, उसकी लंबाई जितनी है, वक्षस्थल भी उतना ही चौड़ा है। शरीर गठा हुआ, कमर पतली, लंबे-लंबे हाथ, तीक्ष्ण लोचन। वह प्रौढ़ता की सीमा में पहुँच चुका है। भेड़े के चमड़े का एक टुकड़ा वह पहने है और दूसरा टुकड़ा चादर के मानिन्द उसकी पीठ पर रखा हुआ है। उसके तलवे से बँधे चमड़े के दो टुकड़े जूतों का काम कर रहे हैं। मुख-मण्डल लालछौंह दाढ़ी से भरा है, शरीर का रंग झरने के पानी में पड़े छोटे-छोटे सुडौल पत्थर जैसा है।

पहाड़ी पथ से कुछ दूर, नीचे उतरने के बाद पुरुष ठिठककर खड़ा हो गया। सतर्क नयनों से चारों ओर देखा। उसकी दृष्टि नदी के छोर पर स्थिर हो गयी, हिलते-डुलते कुछेक काले-काले बिन्दुओं की ओर। पुरुष थोड़ी दूर और नीचे उतरा और एक पत्थर की ओट में खड़ा हो

उसी ओर आँख टिकाये रहा। उसके चेहरे पर प्रशान्ति का भाव है, चिन्ता की कोई लकीर नहीं दिखाई पड़ती।

नदी के किनारे कुछेक भेड़िए किसी मरे हुए पशु का मांस खा रहे हैं। उनमें किसी तरह का झगड़ा नहीं हो रहा है। बीच-बीच में उनके मुँह से आनन्द की ध्वनि निकलती है, गर्रर-गर्रर····

पुरुष स्थिरता के साथ खड़ा रहा। दिन के प्रकाश में भेड़िए आमतौर से जंगल छोड़कर खुली जगह में नहीं रहना चाहते हैं। अब भी सूर्य की किरणें नहीं फूटी हैं, इसीलिए वे शिकार की खोज में इस ओर रह गये हैं। थोड़ी देर वाद ही लौट जायेंगे।

पहाड़ के पीछे की ओर वहुत दूर तक जंगल फैला हुआ है। वहुत समय के पुराने वृक्ष एक दूसरे से माथा ऊपर रखने की प्रतियोगिता में वादलों का करीव-करीव स्पर्श कर रहे हैं। कभी-कभी ज़ोरों से आँधी आती है तो दो-चार वृक्ष जड़-मूल समेत उखड़कर धरती पर गिर पड़ते हैं—और उसकी आवाज़ नदी के ऊपर के पर्वत से टकराकर बहुत देर तक प्रतिध्वनित होती रहती है। इस अरण्य में वहुत सारी अशुभ शक्तियाँ वास करती हैं। अरण्य को पार करने के वाद एक और मनोहर उपत्यका मिलती है। यह पुरुष अपने जीवन में वहाँ मात्र दो वार गया है। वहुत सारे व्यक्ति जाकर लौट नहीं सके हैं।

भेड़ियों ने मृत पशु का मांस समाप्त कर ऊपर की ओर देखते हुए उल्लास के साथ 'उफ-उफ' आवाज़ की। उसके वाद अचानक जंगल की ओर दौड़ पड़े। वे जव तक आँखों से ओझल न हो गये, पुरुष चुपचाप खड़ा रहा। उसके वाद पत्थर की ओट से वाहर आ उन्मुक्त अंचल की ओर चल दिया। थोड़ी दूर आगे वढ़ने के वाद एक जगह अत्यन्त साफ-सुथरी ज़मीन पर घुटने के वल वैठ गया। मिट्टी की ओर माथा झुकाये वह कुछ वुदवुदाया। जव उसने सिर उठाया तो देखने पर लगा, इस धरती पर जीवित रहने के कारण वह स्वयं को धन्य-धन्य समझ रहा है। इस जीवन के लिये वह आकाश और वायु में वास करने

वाली बहुत प्रकार की अदृश्य शक्तियों के प्रति आभार व्यक्त कर रहा है।

अब वह नदी के किनारे चला जाया। नदी का पानी अत्यन्त शीतल है। धारा बहुत ही तेज। इस नदी में बारहों महीने पानी रहता है। सरदियों में इसका पानी कभी पूरी तरह नही जमता है। पैदल चलकर पार करने का प्रश्न हो नहीं उठता। और-और मौसम में पानी लबालब भरा रहता है। सरदियों के दिन करीब-करीब समाप्त हो गये हैं। अभी पक्षियों की आँखों जैसा निर्मल जल बिजली की तरंग की तरह दौड़ लगाता है। नदी यहाँ खासी अच्छी चौड़ी है।

पुरुष ने ठण्डे पानी को अंजुली में भरकर अपनी आँख और मुँह पर छींटा मारा। हथेली से मुँह पोछा। उसके बाद नदी के पार की ओर ताकने लगा।

इस ओर थोड़ी-सी समतल भूमि है। यहाँ पत्थर की जगह मुलायम, चिकनी बालू फैली है। नदी का पानी जब बढ़ने लगता है तो उसका बढ़ाव इसी ओर होता है। समतल भूमि जहाँ जाकर समाप्त हो जाती है, वहाँ थोड़े-बहुत झाड़ी-झुरमुट हैं। उसके बाद एक बहुत ही ऊँचा पहाड़ मिलता है। इस अंचल में यही पहाड़ सबसे बड़ा है। उसके पीछे की ओर से सूर्य उगता है और वन की ओट में जाकर अस्त हो जाता है।

नदी के इस किनारे की अपेक्षा दूसरा किनारा अधिक सुन्दर और बसने योग्य प्रतीत होता है। लेकिन उस ओर जाया नही जा सकता। साथ ही साथ दिगन्त की पृष्ठभूमि में खड़े पहाड़ की ओट में अज्ञात विपत्ति की संभावना है।

कई दिनों से यह पुरुष सवेरे नींद खुलते ही नदी के किनारे आकर खड़ा हो जाता है और अपलक दूसरे किनारे की ओर ताकता रहता है। माथे को इधर-उधर घुमाता है। लेकिन उसे कुछ भी नहीं दिखायी पड़ता। ऐसी हालत में वह अपने मुँह के दोनों ओर हाथ रखकर

एक तरह की आवाज़ करता है। वह आवाज़ यद्यपि ज़ोरदार और मेघ मन्द्र गंभीर है लेकिन उसमें एक प्रकार का स्वर रहता है। सरगम की सात ध्वनियों में से कम-से-कम पाँच इसमें खोजने से मिल जायेंगी। वायु की तरंग की तरह उस स्वर में उतार-चढ़ाव है।

कुछ देर तक यही क्रम चलता रहता है। पुरुष में ज़रा भी थकावट नहीं आती। ऐसी स्थिति में समझ में आ जाता है कि वह स्वर की साधना नहीं कर रहा है बल्कि किसी को पुकार रहा है। कुछ दिन पूर्व यहाँ एक अजीब दुर्घटना हो गयी है।

उन दिनों मनुष्य स्नान करने के ठीक से अभ्यस्त नहीं हुए थे। तब तब धरती का पानी बेहद ठण्डा था। नदी तटवर्ती मनुष्यों का यह कबीला इस नदी से बचकर चलता है। अपनी आवश्यकता के लिए पानी लाने और हाथ-मुंह धोने के लिए वे आमतौर से थोड़ी दूर के एक झरने के पास जाते हैं। यह नदी भयंकर है, पहाड़ी ढलान से होती हुई नीचे उतरी है और कोस भर की दूरी पर जाकर विशाल जल-प्रपात के रूप में परिणत हो गयी है। असावधानी से कोई यदि इस नदी में उतर पड़ता है तो पानी की धारा के वेग से नीचे समा जाता है। उसके बाद जल-प्रपात में गिरकर शरीर टुकड़ा-टुकड़ा हो जाता है। बच्चे खेलते-खेलते अकस्मात् इसी तरह मृत्यु के मुंह में समा जाते हैं। माताएँ बहुधा उन्हें बचाने के उपक्रम में स्वयं भी बह गयी हैं।

यहाँ मृत्यु के लिए किसी प्रकार का शोक नहीं मनाया जाता।

कुछ दिन पहले सत्रह वर्ष का एक युवक तीसरे पहर दूर के झरने के पास भेड़ियों के बीच घिर गया था। उनसे लड़ते हुए चिल्लाकर संगी-साथियों को पुकारा था। पत्थर फेंक-फेंककर भेड़िए के झुण्ड पर आघात करते हुए वह पीछे की ओर हट रहा था। अचानक उसका पैर फिसल गया और वह पहाड़ से लुढ़कते हुए नदी में गिर पड़ा। कुछ क्षणों तक वह चीखता-चिल्लाता रहा। लेकिन धारा से बचकर नहीं निकल सका। सबको यह विश्वास हो गया कि वह मर चुका है।

लेकिन दूसरे दिन सवेरे वह अप्रत्याशित रूप में नदी के उस पार दिखायी पड़ा। दैवयोग से तरंगित धारा से जल-प्रपात में गिरने के पूर्व ही दूसरे किनारे के एक पत्थर से अटक गया था। वह बच गया है? यहां के लिए यह इस तरह की पहली घटना है।

अब उसके कारण एक समस्या पैदा हो गयी है। उसे इस पार लाने का कोई उपाय नहीं है। उस पार भी किसी के लिए अधिक दिनों तक जीवित रहना संभव नहीं है। पहाड़ से लुढ़कते हुए गिरने के समय उसका एक पैर आहत हो गया था। वह लँगड़ाकर चलता है। उसके पास कोई हथियार नहीं है। उस पार के पहाड़ों पर यदि शिकार के योग्य कोई पशु होगा तो भी उसकी शारीरिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह शिकार कर सके। सबसे बड़ी बात है कि वह संगीहीन है। उन दिनों पृथ्वी के किसी एकाकी मनुष्य के लिए जीवित रहना कठिन था।

उस पार का वह तरुण इस पार के इस गौरवर्ण पुरुष का इकलौता पुत्र है। प्रत्येक दिन सवेरे नींद से जगते ही वह देखने आता है कि उसका लड़का उस दिन भी जीवित है या नहीं।

उसके अनवरत चीत्कार से भी उस पार प्राण का कोई लक्षण नहीं दिखायी पड़ता। हो सकता है वह अब भी भूख-प्यास से व्याकुल होकर कहीं सोया हुआ हो। या फिर हिंसक जन्तु के आक्रमण से सम्भवतः मृत्यु के मुख में समा गया है। तब हाँ, साधारणतः उस पार कोई जन्तु दिखायी नहीं पड़ता है।

विशालकाय पुरुष के चीत्कार से यहां बहुतों की नींद टूट जाती है। पहाड़ के बीचोबीच थोड़ी-सी समतल भूमि है जहां बरगद की लकड़ी का प्रकोष्ठ जैसा एक स्थान है। उसके बाहर चारों कोनों में आग जल रही है। अन्दर स्त्री, पुरुष और बच्चे हैं।

उस विशाल प्रकोष्ठ के चारों ओर संपूर्ण उपत्यका में बहुत सी लकड़ी के बने गृह हैं। लगभग दो सौ व्यक्तियों की एक बस्ती। पर

साफ़-सुथरे हैं लेकिन उनमें उपकरणों का बाहुल्य नहीं है। प्रत्येक गृह से लगा हुआ एक लंबा ऊँचा स्थान है जहाँ परिवार के पशु रहते हैं।

कुछेक नारी और पुरुष नींद बोझिल आँख पोंछते-पोंछते नदी के किनारे पहुँच जाते हैं। सबों के शरीर का रंग एक जैसा ही है। नारी और पुरुषों का पहरावा भी एक जैसा है—भेड़ के चमड़े से कमर के आस-पास का हिस्सा ढका हुआ है। पीठ के ऊपर भी चमड़े का एक टुकड़ा बँधा है। पुरुषों की तरह नारियों का भी वक्षस्थल खुला है। लाखों वर्ष के अनुभव के बाद उन्हें पता चला है कि छाती की अपेक्षा पीठ में अधिक ठण्ड लगती है और तलवे में शीतलता का अनुभव होने से शरीर दुर्बल हो जाता है।

इन लोगों का शरीर दुर्लभ प्रस्तर मूर्ति की तरह सबल है। रुक्षता के साथ अतुल सौंदर्य मिश्रित है। किसी के भी शरीर में चर्बी की अधिकता नहीं है। कमर पतली है, बाहु बलिष्ठ और गरदन लंबी। मस्तक पर कत्थई और सुनहले के बीच के रंग की केशराशि, आँखों की पुतली नीलवर्ण की। स्त्रियों की तुलना में पुरुषों का स्कंध भाग प्रशस्त है, उसी प्रकार पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का नितंबदेश प्रशस्त है। पुरुषों का वक्षस्थल ईषत् लोमश है। स्त्रियों की त्वचा अत्यन्त मसृण और पीनोन्नत स्तन सुडौल। लेकिन नारी और पुरुष दोनों की चाल में क्षिप्रता और सहजता है।

ये लोग जब नदी के किनारे आकर जमा हो गये तो पता चला कि पहलेवाला पुरुष इनके बीच सबसे अधिक शक्तिशाली है और उसके चेहरे पर आँख जाते ही लगता है कि वह किसी के आदेश का पालन नहीं करता बल्कि स्वयं आदेश देता है। निःसन्देह वही कबीले का सरदार है।

दो युवतियाँ पास आ उस पुरुष के स्वर से स्वर मिलाकर चिल्लाने लगीं। पुरुष और नारियों के गंभीर और तीव्र स्वर में और भी तेजी आ गयी।

इस तरह का क्रम कुछ देर तक चलते रहने के बाद नदी के उस पार, खासी अच्छी दूरी पर कोई वस्तु हिलती-डुलती हुई दिखायी पड़ी। जब वह और निकट आ गया तो सबने युवक को पहचान लिया। वे लोग एक साथ आनन्द से चिल्लाने लगे।

युवक इन कई दिनों के बीच दुर्बल हो गया है, यद्यपि खड़ी नाक और चमकती आँखो के चलते उसके मुखमण्डल पर अब भी सौंदर्य खेल रहा है।

वह अत्यन्त रूपवान है। लँगड़ाते हुए धीरे-धीरे चलकर वह नदी के बिलकुल किनारे आकर खड़ा हो गया। पता चल जाता है कि उपवास और शीत के प्रकोप से वह धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है। उसे सहायता की जाये, इसका कोई उपाय नहीं है। नदी के एक ओर जल-प्रपात है—दूसरी ओर उसका उद्‌गम-स्थान कितनी दूर है, इसकी जानकारी किसी को भी नहीं है। उद्‌गम-स्थान की खोज में जाने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इस पर्वत के दूसरे छोर पर किरात श्रेणी के मानवों का एक दल रहता है—और वे लोग दुर्दान्त हिंसक योद्धा हैं।

नदी के इस पार और उस पार से सवाल-जवाब शुरू हुआ। नारियाँ व्याकुल स्वर में चिल्लाकर बहुत-कुछ जानना चाहती हैं। उस पार का युवक रुक-रुक कर टूटे स्वर में उत्तर देता है। वायु और दूरवर्ती जल-प्रपात के कारण बहुत कुछ समझ में नहीं आया।

कबीले का सरदार अब गंभीर और चुपचाप खड़ा है। उसके ललाट पर बल पड़ गये हैं। उसने हाथ से इशारा कर एक युवक को अपने पास बुलाया।

इस युवक का भी व्यक्तित्व दर्शनीय है। उसका शरीर यद्यपि अत्यंत शक्तिशाली नहीं है लेकिन वह और-और लोगों से लंबा है। उसकी आँखों में सर्वदा चंचलता तैरती रहती है और उसकी गरदन दाहिने ओर झुकी रहती है। किसी समय उसकी गरदन में चोट लगी

यह युवक कबीले के सरदार का सबसे बड़ा पुत्र है। पत्थर का नुकीला तीर छोड़ने और बर्छा चलाने में अत्यन्त निपुण है। बहुत दूर से बर्छा फेंककर भेड़िए के झुण्ड पर आक्रमण कर सकता है।

कबीले के सरदार की पुकार पर वह निकट आया और अपना एक घुटना मोड़कर सिर झुकाये बैठ गया। कबीले के सरदार ने उसके कंधे पर हाथ रखकर शान्ति के साथ कुछ कहा। उसने सिर हिलाकर हामी भरी। उसके बाद वह उठकर खड़ा हो गया और तीर के वेग से पहाड़ के ऊपर अपने घर की ओर दौड़ पड़ा। शीघ्र ही वह एक छोटे से पशु को गोद में लिए वहाँ लौट आया।

वह पशु आइवेक्स श्रेणी का घुमावदार सींगवाला रोयेंदार बकरी का छौना था। युवक जैसे ही उसे लेकर पहुँचा सभी कौतूहल वश उसके चारों ओर आकर खड़े हो गये। कबीले के सरदार ने तत्काल सबको अलग हटकर खड़े होने का आदेश दिया। लंबा युवक उस किनारे की ओर आँख टिकाये आइवेक्स की टाँगों को हिलाने लगा।

अब उसके उद्देश्य का पता चला। उस पार के युवक के भोजन की व्यवस्था के लिए आइवेक्स के छौने को उस पार भेजने की चेष्टा की जायेगी। उस पार का युवक यदि आग न जला सके तो कच्चा मांस ही खा सकता है क्योंकि यह प्रथा अब भी कमोवेश चालू है।

लंबा युवक बहुत देर तक आइवेक्स को हिलाते-डुलाते रहा। उसकी आँखें चमक रही हैं, गरदन और अधिक दाहिनी ओर झुक गयी है। वह मन को एकाग्र कर स्नायुओं को इस कार्य के लिए प्रस्तुत कर रहा है। सभी मौन हो जाते हैं। इतनी दूर से पशु को उस पार भेजना यद्यपि असंभव प्रतीत होता है पर युवक में असीम निपुणता है। और-और लोग उस पर भरोसा रख सकते हैं। उस पार का युवक नदी के पानी में एक पैर रख और हाथ फैलाये भिखमंगे जैसा खड़ा है। लंबा युवक कुछेक डग दौड़ता हुआ गया और आइवेक्स के छौने को फेंक दिया। वह तीव्र वेग से शून्य की ओर चला गया और मृत्यु के भय से

पाँवों को नचाने लगा। दौड़ के वेग के कारण लंबा युवक कहीं पानी में न गिर पड़े, इसलिए कबीले के सरदार ने जल्दी से आकर उसकी कमर को कसकर पकड़ लिया। दोनों व्यग्रता के साथ शून्य की ओर निहार रहे हैं।

फेंकने की गति को देखकर लगा था, छौना अवश्य ही पहुँच जायेगा। लेकिन वायु की गति अनुकूल नहीं थी। उस पार से चार-एक हाथ की दूरी पर छौना पानी में गिर पड़ा। सबके मुँह से निराशा की एक आवाज निकल पड़ी। परस्पर मिली लंबी साँसों की तरह वह आवाज सुनायी पड़ी—हा...।

आइवेक्स नदी किनारे के निकट से बह रहा है, लंबा युवक किनारे-किनारे उसके साथ दौड़ने लगा—यदि कहीं किसी पत्थर में अटक जाये। इस किनारे के भी सब लोग दौड़ रहे हैं। लेकिन कुछ क्षणों के बाद ही छौना गहरे पानी की ओर जाकर अन्दर समा गया। आइवेक्स जैसे सुस्वादु प्राणी के नष्ट हो जाने से सबका उत्साह बुझ गया।

एक मात्र कबीले के सरदार में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह अपनी संतान के प्राणों की रक्षा के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। उसके प्रशस्त ललाट पर चिन्ता की रेखा उभर आती है। वह अपनी शक्ति के कारण ही नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में उचित निर्णय की सामर्थ्य रखने के कारण भी कबीले का सरदार है। लेकिन इस प्रकार की घटना इससे पहले कभी नहीं घटी है। उसकी व्यस्क सन्तानों में से दो की मृत्यु शत्रुओं के आक्रमण या दुर्घटना के कारण हो चुकी है। उसकी दो लड़कियों को दूसरे कबीले के लोग उठाकर ले गये हैं। उस समय कबीले का सरदार घायल था। अब उसे उन लोगों की याद जागृत हो जाती है। लेकिन इस लड़के को, जो आँखों के सामने डूब रहा है, जीवित रखने का उपाय खोजे भी नहीं मिल रहा है।

कबीले के सरदार ने उस पार की पर्वत-श्रेणी की ओर देखा। पर्वत के टुकड़े की ओट में अब सूर्य का थोड़ा-बहुत ढूँढ़ता उजाला बाहर निकल-

रहा है। कई दिनों से सूर्य भली-भाँति नहीं उगा था। सूर्यदेव अप्रसन्न हैं, इसीलिए यह बुरा समय आया है। इस पहाड़ के उस पार सूर्योदय का देश है। कबीले का सरदार उस ओर कभी नहीं गया है। और जाना भी संभव नहीं है। उसकी माँ की नानी अभी तक जीवित है जो सर-दियों के एक सौ वर्ष व्यतीत कर चुकी है। वह कहती है, सूर्योदय के उस देश में एक प्रकार के मनुष्य वास करते हैं, जिनके बाल अत्यन्त काले हैं और आकार की दृष्टि से वे बहुत नाटे हैं। वे लोग अत्यन्त ही उदर परायण हैं और स्त्रियों से अत्यधिक परिश्रम कराते हैं। इसके अतिरिक्त वे बहुत ही क्रूर हैं और बर्बरों की तरह एक साथ चिल्लाकर गीत गाते हैं।

कबीले के सरदार ने अपने पुत्र को खाद्य के संधान में पहाड़ पार-कर सूर्योदय के देश में जाने से मना किया है। अनजान जगह कोई कभी अकेला नहीं जाता। बिना लड़ाई लड़े नितान्त पशु की तरह दूसरे कबीले का शिकार बनने की अपेक्षा बिना खाये मृत्यु का वरण करना कहीं अधिक सम्मानजनक है।

इस पहाड़ की चोटी पर वृक्षों के मूल में बाज और चीलों के घोंसले हैं। घायल युवक अन्ततः अनाहार के चलते यदि मर जाता है तो वे सब पक्षी उसकी देह नोच-नोचकर खायेंगे। पक्षी यदि किसी मनुष्य का शरीर खा डाले तो उस मनुष्य का वंश नष्ट हो जाता है। प्रमातामही का कहना है कि अपने यौवन-काल में उसने अपनी आँखों से देखा है, अरण्यवासी एक उपजाति मृतकों को ज़मीन में गाड़ने के बजाय फेंक देते थे। फल यह हुआ कि शीघ्र ही अमंगल आत्मा के क्रोध के कारण वे पूरी तरह विलुप्त हो गये। इससे तो अच्छा यही था कि वह युवक पानी में ही बह गया होता।

कबीले के सरदार ने लंबे युवक को बुलाकर पुनः कुछ आदेश दिया। युवक दौड़ता हुआ अपने घर गया और भेड़ के एक बच्चे को ले आया। भेड़े की देह पर सफ़ेद रंग के ऊन हैं, मुँह प्यारा-प्यारा जैसा लगता है।

देखते ही सहलाने की इच्छा होती है। इस भेड़े को नष्ट कर दिया जायेगा, यह देखकर कुछ लोगों के चेहरे पर अशान्ति की रेखा उभर आयी। मगर कबीले के सरदार की बात पर कभी कोई जरा आपत्ति नही करता।

अबकी लंबा युवक लता की कई डोरियाँ भी ले आया है। लताएँ बहुत ही मजबूत हैं। उनमें गाँठ लगाकर एक बहुत बड़ी रस्सी तैयार की गयी। उसके बाद उस रस्सी से भेड़े के छौने के दो पाँव बांध दिये गये। छौने ने कोई आपत्ति नहीं की। वह अपनी गहरी आँखों से यह खेल देखता रहा। एक बार लाड़ से कबीले के सरदार की देह चाटने लगा।

कबीले का सरदार रस्सी का एक छोर अपने हाथ में थामे रहा। लंबा युवक छौने को अपने हाथ मे लेकर हिलाने-डुलाने लगा। छौना भय और यंत्रणा से भें-भें चिल्लाने लगा। लंबे युवक ने अबकी पहले की अपेक्षा अधिक जोर से उसे शून्य में फेंक दिया। लेकिन वह पहले की अपेक्षा कम ही दूरी पर पानी मे जाकर गिर पड़ा। क्योंकि रस्सी के पिछले हिस्से के कारण गति में थोड़ी बाधा पहुँच चुकी थी।

भेड़ा जैसे ही पानी में गिरा, कबीले का सरदार उसे खींचने लगा। मजबूत बंधन रहने पर भी वह आसानी से खिंच नहीं रहा था। धारा बहुत ही तीव्र थी। अन्ततः जब भेड़े को किनारे से बाहर लाया गया तो उसकी आँखें उलट चुकी थी, पिछले दोनों पैर बलात् हिल-डुल रहे थे। उसकी मृत्यु में कुछ ही क्षण बाक़ी रह गये थे।

तत्क्षण दो स्त्रियाँ घुटनो के बल मिट्टी पर बैठ गयी और भेड़े को चित सुला दिया। एक स्त्री ने पत्थर की छुरी से उसका पेट फाड़ दिया। पित्त की थैली निकालकर पानी में फेंक दिया। उसके बाद वे दोनो उसे लेकर ऊपर की ओर दौड़ती हुई चली गयी। उसे अभी तुरन्त आग में झुलसाना जरूरी है। मृत पशु का मांस खाने में उन्हे घृणा का अनुभव होता है।

समय : साढ़े तीन हज़ार वर्ष से कुछ अधिक। स्थान: निकटवर्ती प्राच्य पर्वत प्रदेश। हमें इन लोगों का नाम मालूम नहीं, हम इनकी भाषा नहीं जानते। हम इनके मुख में भाषा देंगे।

साइबेरिया के निम्न प्रान्तर की तृणभूमि में जो घुमक्कड़ मानव-गोष्ठी वास करती थी, वे लोग गरमी और खाद्य पदार्थ की खोज में एक दिन विभिन्न स्थानों में बिखर गये थे। उसके बाद बहुत दिनों के बाद कॉकेशस पहाड़ के आश्रयस्थल को त्यागकर उनका एक कबीला कास्पियन प्रान्त से होता हुआ दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ गया था। क्रमशः उनका दल बँट गया। उपत्यकावासी इसी प्रकार के एक कबीले के बारे में यह कहानी है।

कबीले के सरदार का नाम भल्ल है। वह इस कुरु गोष्ठी का नेता है। उसे अकेले भी देखकर दूसरे-दूसरे कबीले के लोग भयभीत हो उठते हैं। वह साहसी है मगर निष्ठुर नहीं। उसके न्याय की ख्याति फैली हुई है। वह धीर और गंभीर है लेकिन क्रोध आने पर रुद्र के जैसा ...ीप लगता है।

अभी वह क्रोध में है। जहाँ आहत भेड़े के छौने का रक्त गिरा था, वहाँ जाकर अपने हाथ घिसने लगा। उसके बाद रक्त से लथपथ हाथों को नदी के पानी में डुबोकर उसने वज्र गंभीर स्वर में कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस नदी की हत्या करूँगा। हे सूर्य, हे आकाश के अधिपति, आप मेरे प्रति सदय होवें। मेरी शपथ यदि असत्य हो जाये तो मेरा मस्तक चूर-चूर हो जाये। आगामी शीतऋतु के पहले ही मेरे कबीले के लोग इस नदी को प्रतिहत कर उस पार के तृणवन में पशु चराने जायेंगे। हे नदी, तुम मेरी शपथ सुन लो। तुममें और मुझमें मृत्यु की प्रतियोगिता चले।"

वर्षा बहुत पहले ही आरंभ हो चुकी है। चारों ओर एकरस बरसात की आवाज सुनायी पड़ रही है। अभी कोई बाहर नहीं है, उपत्यका के सभी अधिवासी अपने-अपने घरों में हैं—कोई लेटा हुआ है और कोई बैठा हुआ। बच्चे उछल-कूद रहे हैं। कुछ लोग रसोई के काम में लगे हैं। भल्ल का बड़ा लड़का पत्थर को घिस-घिसकर बर्छा बना रहा है। भल्ल अपने घर के लकड़ी के पल्लों को चमड़े और लता से बांध रहा है।

मनुष्य का जाना-पहचाना विश्व अभी बहुत छोटा हो गया है। लग रहा है, समूची धरती पर यह बरसात इसलिए हो रही है कि मनुष्य को निकम्मा बनाकर रख दे। प्रकृति पग-पग पर मनुष्य को असहाय बना देती है।

यहाँ का मौसम चरम सीमा में रहता है। सरदियों के प्रारंभ में असह्य चुभन भरी हवा चलती है। उस हवा से शरीर का चमड़ा फट-कर दर्द करने लगता है। पेड़-पौधे शीघ्र ही पत्रहीन हो जाते हैं। सर-दियों के प्रारंभ में किसी-किसी वर्ष पशुओं में महामारी फैल जाती है। सरदियों के बीतने के बाद जब काम करने का समय होता है, जोरों से बरसात शुरू हो जाती है। इस बरसात में किसी तरह का सौंदर्य नहीं रहता। उसके बाद कुछेक पखवारे बीतने पर आकाश शुष्क हो जाता है और तीखी धूप पड़ने लगती है।

भल्ल की माँ की वय यद्यपि एक सौ वर्ष से अधिक है लेकिन अब भी वह चल-फिर लेती है। केवल आँख से ही कुछ कम दिखायी पड़ता है। उसने इस बरसात में भी बाहर जाने की इच्छा प्रकट की। भल्ल ने उससे पूछा, "प्रवीणा, इस आँधी-पानी में बाहर जाकर क्या करोगी?"

प्रवीणा बोली, "तुझे किसी तरह की गंध महसूस नहीं हो रही है?"
भल्ल ने जी भर सांस ली और परीक्षा की। उसके बाद बोला, "कहाँ? किस चीज़ की गंध है?"

प्रवीणा बोली, "बाहर आ, तभी पता चलेगा।"

भल्ल बूढ़ी का हाथ थामे बाहर आ खड़ा हुआ। बूढ़ी के माथे पर न जैसे बालों की जटा है, शरीर का रंग पुराने हाथी के दाँत की तरह।

प्रवीणा बोली, "बरसात के समय किसी-किसी दिन मिट्टी से अचानक धुआँ निकलने लगता है। उसी धुएँ की गंध महसूस कर रही हूँ। तुझे महसूस नहीं हो रही है?"

भल्ल ने फिर लंबी-लंबी साँस ली और कहा, "नहीं।"

प्रवीणा बोली, "तुम लोग घर के भीतर रहते हो इसलिए तुम लोगों की घ्राणशक्ति नष्ट हो गयी है। धीरे-धीरे तुम लोगों की आँखें भी नष्ट हो जायेंगी। तुम लोग पशु हो जाओगे।"

यह सुनकर भल्ल मुसकरा दिया। बूढ़ी एक बार बोलना शुरू करती है तो सरलता से रुकने का नाम ही नहीं लेती। गृहस्थी बसाने के नाम पर बूढ़ी बहुत चिढ़ती है। बूढ़ी के यौवन-काल में उन लोगों का कबीला कड़ था। वे लोग एक स्थान में अधिक दिनों तक नहीं रुकते थे। का अब भी वैसा ही जीवन पसन्द है। उम्र हो जाने के कारण बूढ़ी को अब अधिकांश समय घर के भीतर ही रहना पड़ता है। मक्खी और डाँस उस पर बहुत अत्याचार करते हैं। मक्खियों को भगाते-भगाते वह परेशान हो उठती है। बूढ़ी कहती है, "जन्तु और जानवरों के ही शरीर पर कीड़े-मकोड़े होते हैं, मक्खियाँ बैठती हैं, क्योंकि वे निश्चित स्थान पर पड़े रहते हैं। पहले मनुष्य एक ही स्थान पर अधिक दिनों तक नहीं टिकते थे, एक ही स्थान में अधिक दिनों तक मल-मूत्र त्याग कर उसे गन्दा नहीं बनाते थे। फलस्वरूप कीड़े-मकोड़े उनके पास नहीं फटकते थे। अब समय कैसा आ गया?"

बूढ़ी के बुड़बुड़ाने का क्रम चलता ही रहा। भल्ल ने कौतूहलवश उसकी ठोड़ी हिला दी और कहा, "चलो प्रवीणा, हम-तुम निकल पड़ें हम पुनः पृथ्वी की सुस्निग्ध कुमारी भूमि की खोज पड़ताल करेंगे।"

प्रवीणा हँसने लगी और बोली, "तू क्या यही सोचता है कि मेर

सारी शक्ति समाप्त हो गयी है ? इतना अवश्य है कि मेरे आलिंगन में अब उत्ताप नहीं रहा, मगर मेरी बुद्धि ठीक ही है।"

भल्ल ने बूढ़ी के गालों को चूमकर कहा, "कौन कहता है कि उत्ताप नहीं है। जिस तरह तुषारमंडित पर्वत भी अचानक अग्नि उगलकर जता देता कि उसमें कितना उत्ताप है, उसी तरह मुझे तुम्हारी देह के उत्ताप की जानकारी है। मेरी दृष्टि में अब भी तुम अत्यन्त सुन्दरी हो। आज मैं तुम्हारे पास लेटूं ?"

प्रवीणा बोली, "ऐसा होने पर द्राखमा ईर्ष्या से जलने लगेगी।"

भल्ल ने पीछे की ओर मुड़ अपनी संतान की जननी द्राखमा की ओर एक बार ताका। द्राखमा भूमि पर पैर फैलाये बैठी थी और अपनी गोद की सन्तान को स्तन्य-पान करा रही थी। भल्ल से आँखें मिलते ही उसकी भौंहों पर बल पड़ गये।

भल्ल ने गरदन घुमाकर कहा, "द्राखमा में ईर्ष्या नाम मात्र की भी नहीं है और वह बहुत ही सेवा-परायणा नारी है। मैं कहूँगा तो वह तुम्हारा पैर दबा देगी।"

प्रवीणा बोली, "मुझे यह सब ज्यादती पसन्द नहीं है।"

उसके बाद वह उत्तेजना भरे स्वर में बोली, "मुझे फिर वही गंध महसूस हो रही है—मिट्टी से धुआँ निकलने की गंध। जानता है, इसका अर्थ क्या है ? अब वर्षा रुक जायेगी।"

भल्ल बोला, "अब वर्षा नहीं रुकेगी तो लड़के को जीवित रखना कठिन हो जायेगा। पता नहीं, अभी वह क्या कर रहा है।"

"तेरे पिता के युग में प्रत्येक दिन प्रभातकाल में सूर्य की पूजा की जाती थी। तुम लोग इसे पूरी तरह भुला बैठे ? प्रत्येक दिन उपासना न करने से देवता कहाँ प्रसन्न होते हैं ?"

"हाँ, यह सच है कि कई दिनों से सूर्य की पूजा नहीं की गयी है।"

"आजकल के लड़के ऐसे हो गये हैं कि किसी बात पर कान ही नहीं देते। तुम लोगों में बुद्धि नहीं है। हम लोगों की बात न मानोगे तो किसी

दिन पूरे वंश का संहार हो जायेगा।"

"प्रवीणा, अभिशाप नहीं दो।"

"मूर्ख, तुझे इस बात का भी पता नहीं कि माताओं का अभिशाप कभी बाल-बच्चों पर फलता-फूलता नहीं? ऐसा नहीं होता तो इतने दिनों में पुरुष निर्वंश हो गये होते।"

बूढ़ी न केवल इस युग की कटु आलोचना करती है बल्कि वह नारी स्वतन्त्रता की प्रबल पक्षधर भी है। उसके मतानुसार पुरुषगण नितान्त अबोध हैं। नारियों के लिए पुरुष भोग की सामग्री के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उन्हें आदेश देकर काम कराना पड़ता है।

तभी वृक् दो युवकों को अपने साथ लिए बाहर निकल आया। युवकों का नाम है गर्ग और इन्दर। उन लोगों के हाथ में काँसे का कुठार और हड्डी का छुरा है।

प्रवीणा ने पूछा, "ऐ बच्चो, कहाँ जा रहे हो?"

वृक् बोला, "हम वृक्ष काटने जा रहे हैं। तुम्हें पिताजी की शपथ की बात मालूम नहीं है?"

भल्ल ने नदी को वध करने की योजना का प्रारंभ उसी दिन से कर दिया था। इसलिए उसे अपनी बुद्धि से नित्य नयी-नयी खोज करनी पड़ती है। पहले उसने सोचा था, अरण्य से वृक्ष काट-काटकर पानी में डालेगा और नदी को पाट देगा। लेकिन धारा के वेग में बड़े-बड़े वृक्ष भी बह जाते हैं। इसलिए वृक्ष काटने की योजना छोड़ देनी पड़ी। उसके बाद तय किया, पत्थर डालेगा। मनुष्य या पशु इतना बड़ा पत्थर ढो नहीं सकता। और पत्थर के टुकड़ों से काम चल नहीं सकता। जितने बड़े प्रस्तरखंड से आघात किया जायेगा नदी उतनी ही आहत होगी। पत्थर गिरने के बाद पानी जब उछल पड़ता है, भल्ल को असीम प्रसन्नता होती है। एक-एक विशाल प्रस्तरखंड को गिराने में सारा दिन बीत जाता है। उस समय भल्ल नया आदेश देता है। उसने पुनः वृक्ष काटने का आदेश दिया। खाली हाथ से पत्थर ठेलने के बदले, बड़े

बड़े वृक्षों के तने को ठेकने के रूप में उपयोग में लाकर पत्थर हटाने से आसानी होती है। साथ ही साथ कम लोकबल की भी आवश्यकता पड़ती है। भल्ल ने तय किया है, चाहे जितना भी दिन क्यों न लगे, पत्थर डाल-डाल कर वह नदी को पाटकर ही छोड़ेगा।

प्रवीणा ने वृक् से कहा, "बाद में वृक्ष काटने जाना। पहले सूर्य की पूजा करता जा। वर्षा नहीं रुकेगी तो किसी दिन भोजन के अभाव में मर जाना पड़ेगा।"

वृक् के पास इन्दर खड़ा था। वह वय की दृष्टि से अभी निहायत तरुण है। अभी-अभी उसके मुख-मण्डल पर नवीन तृणराशि की तरह दाढ़ी-मूँछें उगी हैं। उसने कहा, "आकाश में सूर्य दिखायी नहीं पड़ेंगे तो उनकी पूजा कैसे होगी?"

वृक् बोला, "आँखों से बिना दर्शन किये हमने क्या किसी दिन उनकी पूजा की है? सूर्य देव तो पहाड़ के उस पार के देश से इस ओर आ ही नहीं रहे हैं।"

प्रवीणा बोली, "तुम लोग यद्यपि उन्हें देख नहीं पा रहे हो लेकिन वह सब कुछ देख रहे हैं। वह तुम लोगों की पूजा अपनी आँखों से अवश्य ही देख लेंगे और प्रसन्न हो जायेंगे। मैं तुम लोगों को बता रही हूँ, आज की दोपहर बीतते न बीतते पानी बरसना बन्द हो जायेगा।"

वर्षा का वेग सचमुच ही कम होता जा रहा था। वर्षा के कारण नदी की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। इसका फल यही होगा कि भल्ल का काम बढ़ जायेगा।

भल्ल ने सभी को पुकार कर कहा, "आओ, तुम लोग सभी सूर्य की पूजा करने,आओ।"

घर से सभी बाहर निकल आये और धरती पर घुटने टेककर बैठ गये। बच्चे हो-हल्ला कर रहे थे, प्रवीणा ने उन्हें डाँटा।

गर्ग की कमर में हमेशा एक सिंगा बाँधा हुआ रहता है। उसने सिंगे में फूंक लगायी। उस शब्द से दूसरे-दूसरे घर के लोग भी वर्षा की उपेक्षा

कर बाहर निकल आते हैं। सिंगा की आवाज़ सुनते ही छाती त्रास से काँपने लगती है। किसी भी समय शत्रुओं के द्वारा आक्रमण किया जा सकता है। अलग-अलग पर्वतों और उपत्यकाओं में भिन्न-भिन्न कबीले के लोग फैले हुए हैं। आत्मरक्षा और आत्मवृद्धि—इन दो कारणों से वे एक दूसरे की हिंसा के लिए आतुर रहते हैं। अरण्य के उस पार जो सबसे निकट वास करने वाला कबीला है, वह मरुत् गोष्ठी है और वे लोग इन लोगों के जन्मगत शत्रु हैं।

बाहर आने पर जब उन्हें पता चलता है कि गर्ग की सिंगा-ध्वनि शत्रुओं के आक्रमण का संकेत नहीं है तो वे निश्चिन्तता की साँस लेते हैं। उसके बाद कौतूहलवश भल्ल को घेर कर खड़े हो जाते हैं।

द्राखमा ने एक चित्रित मृत्तिका-पात्र में सोमरस लाकर भल्ल के हाथ में थमा दिया। भल्ल यजनीय देवता के निमित्त उस सोमपात्र को कुछ देर तक ऊपर उठाये रहा। उसका मुखमण्डल आकाश की ओर है। वर्षा की धारा उसे भिगो देती है।

प्रौढ़ और वृद्ध चिर प्रचलित नियम के अनुसार निर्दिष्ट देवता के नाम श्लोक का उच्चारण करते हैं, लेकिन एक साथ नहीं।

मेधस् नामक एक प्राचीन पुरुष ने, जिसके नेत्रों की दृष्टि क्षीण हो गयी है, सर्वोच्च स्वर में कहा :

हिरण्यपाणि सविता का मैं
रक्षा के निमित्त आह्वान करता हूँ
वही देव यजमान का प्राप्य पद
बता देंगे।"

किसी ने चिल्लाकर कहा, "अरे मेधा तिथि, तुम्हीं कहो।"

मेधस् ने उच्चारण किया :

जलशोषक सविता की रक्षा के निमित्त स्तुति करो।
हम उनके यज्ञ की कामना करते हैं।
निवासहेतुभूत, बहुविध धन के विभक्त।

एवं मनुष्यगण के प्रकाशकारी सविता का
हम आह्वान करते हैं।
हे सखागण, चतुर्दिक उपवेशन करो
सविता की हमें शीघ्र ही स्तुति करनी है।

सभी एक साथ बैठ गये। इन्दर वृक् के पास ही बैठा था। उसने फुसफुसाकर कहा, "आकाश का देवता आँखों से दीख ही नहीं रहा है, ऐसी स्थिति में यह वन्दना क्या उसके समीप पहुँच पायेगी ?"

वृक् बोला, "उगे नहीं है इसीलिए इतनी देर तक सविता की वन्दना की गयी। अब वह सूर्य हो जायेंगे। वह सर्वचक्षु हैं, छिपकर रहने पर भी देख सकते है।"

और-और लोगों के बाद कबीले के सरदार द्वारा मंत्रोच्चारण करने की बात है। एक निपुण व्यक्ति ने भल्ल को इसी के लिए इशारा किया।

भल्ल उन लोगों के सामने खड़ा हो, दोनों हाथों को ऊपर की ओर उठाये मंत्रोच्चारण करने लगा :

हे सूर्य, हे आदि, हे विवस्वान, तुम हमारी रक्षा करो !
तुम इस भूमि एवं अन्यान्य समस्त भूमियों के प्रतिपालक हो, तुम हमें आश्रय दो !
तुम सर्वोत्तम अग्नि हो, तुम्हारे कारण ही हमें संज्ञा प्राप्त हुई है,
समस्त छायाएँ तुम्हारी अनुगामिनी हैं, तुम हमें आश्रय दो !
तुम्हारे कारण फूल खिलते हैं तुम सोमलता का रस लाकर देते हो,
समस्त वृक्ष तुम्हारे स्पर्श से धन्य होते हैं, तुम हमें आश्रय दो !
हमारी देह के प्राण तुम्ही हो, प्राणी के भीतर तुम्हीं चेतना हो,
चेतना के भीतर तुम्ही आनन्द हो, तुम हमें आश्रय दो !

मंत्रपाठ के समय भल्ल का कण्ठ स्वर उदात्त और सुरीला हो उठता है। प्रत्येक बार वह कुछ न कुछ नये शब्दों को जोड़ देता है। उन शब्दों को वह सोचकर नहीं कहता, अपने आप बाहर निकल आते हैं। इसी से एक प्रकार के विस्मय से इस समय उसका शरीर सिहर रहा है।

मंत्रपाठ के पश्चात् भल्ल धरती पर लेटकर माथा टेककर प्रणाम करता है। और-और लोग उसका अनुसरण करते हैं।

या तो मंत्रपाठ के कारण या आकस्मिक संयोग के कारण, पानी वरसना तत्क्षण रुक गया।

भल्ल का हृदय कृतज्ञता से परिपूर्ण हो उठता है। प्रवीणा ताली वजाकर कहने लगी, "मैंने कहा था न ! मैंने कहा था न !"

वृक् अपने दल-वल के साथ वृक्ष काटने निकल जाना चाहता है। भल्ल उन लोगों को मना करता है। उसने आदेश दिया, "अभी पत्थर फेंकना वन्द कर दो। अभी पशुओं को चारागाह में ले जाओ।"

वर्षा के कारण पिछले दो दिनों से पशुओं को वाहर नहीं निकाला गया है। ये सब पशु यदि लगातार अधिक समय तक भीतर वन्द रहते हैं तो उनका मांस स्वादहीन हो जाता है।

लगभग एक सौ गाय और भिन्न-भिन्न जाति के भेड़ों को वाहर निकाला गया। वीस-पच्चीस पुरुष उनके साथ चल दिये। सबके पास हथियार हैं।

थोड़ी ही दूरी पर नदी के पार पर्याप्त स्थान में घासवन फैला हुआ है। इसी घासवन के कारण घुमक्कड़ मनुष्यों का यह कवीला स्थायी तौर पर वस गया है। शिकारी जीवन के वदले पशुपालन ही अव उनकी जीविका हो गयी है। यहाँ की घास खाने से गाएँ अधिक दुधारू होती हैं और भेड़ों का शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। साथ ही साथ इस घासवन की समाप्ति की भी कोई संभावना नहीं है। प्रायः मनुष्य की छाती तक ऊँची इस घास में एक प्रकार के वीज पैदा होते हैं। वीज धरती पर झर जाते हैं और उनसे नयी घास जन्म लेती है।

लेकिन इस घास में विपत्ति भी है। उसमें अनेकानेक विषधर सरीसृप छिपे रहते हैं। उन्हें खोज-खोजकर मारना पड़ता है। लंवे साँपों को वे लोग लाठी से मारकर निकट ही नदी के पानी में फेंक देते हैं।

जंगल से वहुधा हरिण और खरगोश छिपकर घासवन में आते हैं।

मनुष्य के लिए इन्हें पकड़ना बहुत ही कठिन काम है। लेकिन उनकी खोज में भेड़िए पहुँच जाते हैं और वे बहुत उपद्रव मचाते हैं।

भेड़िए से भी बड़ा शत्रु अवश्य ही मनुष्य है। इस जंगल के उस पार की एक उपत्यका में मनुष्य का जो कबीला वास करता है, वे लोग बीच-बीच में इस ओर ऊधम मचाने आ जाते हैं। इन लोगों के पशुओं की चोरी करना ही उनका उद्देश्य हुआ करता है। संख्या की दृष्टि से कम रहने पर भी वे लोग अचानक आकर टूट पड़ते हैं। यही कारण है कि इन लोगों को सतर्कता के साथ पहरेदारी करनी पड़ती है।

वृक् अपने दल-बल और पशुओं को लेकर घासवन के निकट आकर खड़ा हुआ। यह जानने के लिए कि भेड़िया या तस्कर कहीं छिपा हुआ है या नहीं, वे लोग एक साथ भयंकर चीत्कार करने लगे। एक भी घास नहीं हिली, मात्र एक भेड़िए की उफ्-उफ् आवाज़ सुनायी पड़ी। इस पर वे निश्चिन्तता के साथ भीतर चले गये। वर्ष के इसी मौसम में घास के बीज धरती पर झर-झरकर स्तूपाकार हो जाते हैं। उन्हीं बीजों को हटाकर वे लोग देखने लगे कि सांप का सूराख कहीं है या नहीं।

वृक् ने अपनी बुद्धि से भेड़ियों को वश में करने का एक उपाय खोज निकाला है। भेड़ियों के साथ लड़ाई करना दैनन्दिन घटना था। जरा सी असावधानी से कोई दल से अलग हो गया है तो भेड़ियों के झुण्ड ने उसे मार डाला है। उन लोगों ने भी कम भेड़ियों की हत्या नहीं की है। प्रत्येक दिन की यह लड़ाई एक उबाऊ काम थी। इसके अलावा भेड़ियों का मांस सुखाद्य न होने के कारण किसी भी काम में नहीं आता है। तभी एक दिन वृक् ने एक उपाय खोज निकाला।

एक दिन एक एकाकी भेड़िए पर दृष्टि पड़ते ही सबने गोलाकार होकर उसे घेर लिया। उसकी हत्या करने के बदले तीन-चार व्यक्तियों ने लाठी से उसके गले और देह को दबा दिया। भेड़िए के खुले मुंह में पत्थर का एक टुकड़ा डाल दिया। उसके बाद वृक् ने मजबूत लता की डोरी से भेड़िए के गले को बांध दिया।

एक दूसरी तरुणी बोली, "वहाँ वह कन्द के अतिरिक्त
को प्रवेश नहीं करने देती है।"

तीसरी तरुणी बोली, "आज दिन-भर वह वापस नहीं अ

भल्ल सिर झुकाये सोचने लगा।

एक तरुणी भल्ल के निकट आयी और उसका हाथ थ
"आप मेरे कक्ष में चलकर थोड़ी देर विश्राम करें। आपके लि
तरबूज रखे हुई हूँ।"

एक दूसरी तरुणी बोली, "आप मेरे गृह में बहुत दिनों से
हैं। मैंने आपके लिए मधु इकट्ठा करके रखा है।"

भल्ल ने स्नेहपूर्ण दृष्टि से उन लोगों की ओर निहारा। उ
बोला, "आज नहीं, किसी दूसरे दिन आऊँगा।"

जो तरुणी भल्ल का हाथ थामे थी, उसने नहीं छोड़ा। अ
स्वर में कहा, "कब आइयेगा बताइए। जिस रात सोमदेव हार
उसी रात आइएगा ?"

भल्ल बोला, "नहीं। जब सुदिन आयेगा, उसी समय।"

"प्रत्येक दिन तो सुदिन ही है।"

भल्ल ने हँसकर कहा, "अगर तुम लोगों की तरह प्रत्येक म
मन विकारशून्य और पवित्र होता तो प्रत्येक दिन सुदिन ही
लेकिन मुझे चारों ओर शत्रु ही दिखायी पड़ते हैं। प्रकृति भ
आचरण करती है। इसीलिए मेरी आत्मा में स्थिरता नहीं है।

"सारे शत्रु तो आपके अधीन हैं।"

"नहीं, वे मात्र सुयोग की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

भल्ल ने तरुणी से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद
उसके गाल में उँगली गड़ा कर कहा, "इन्दर तुम लोगों को बहुत
करता है ?"

एक दूसरी युवती ने कहा, "वह बहुत ही दुष्ट प्रकृति का है
हम उसे बिना प्यार किये रह नहीं पाती हैं।"

भल्ल ने कहा, "दुष्ट प्रकृति के पुरुषों को ही नारियों का अधिक प्यार प्राप्त होता है। यह कोई नयी बात नहीं है।"

"लेकिन वह वीर है।"

"इसीलिए तो उसे क्षमा कर दिया जाता है। तुम लोगों के पुरुष भी उसे क्षमा कर देते हैं?"

"वह छिपकर आता है।"

एक दूसरी युवती ने अभियोग के स्वर में कहा, "कभी-कभी वह गोपनीयता का भी पालन नहीं कर पाता है। किसी न किसी दिन उसे विपत्ति का सामना करना होगा।"

भल्ल किंचित उपभोग की हँसी हँसा। उसके बाद बोला, "वह विपत्तियों में ही फँसना पसन्द करता है। मैं क्या करूँ! एक भेड़िये तक को उसने अपने अधीन कर लिया है। तुम लोगों ने देखा होगा कि वह एक भेड़िये के गले में रस्सी बाँध उसे लेकर घूमता रहता है।"

"वह एक बहुत बड़े गधे की पीठ पर आरोहण करता है।"

"वह सोमरस पान कर अंट-संट बकता है।"

"वह दिन के प्रथम पहर में भी काम मोहित हो जाता है।"

"उसने प्रवीणा के बालों में कीड़े डाल दिये हैं।"

तरुणियाँ इन्द्र के बारे में एक साथ बहुत सारी बातें कहने लगीं। उनमें से कौन-सा अभियोग है और कौन प्रशंसा, ठीक-ठीक समझ में नहीं आता।

भल्ल की पीठ युवतियों की ओर मुड़ गयी और उसने चलते-चलते कहा, "मैं इडा के पास जा रहा हूँ।"

निशिगुहा में जाने के पूर्व भल्ल अपने घर गया और साथ अपना वज्र ले लिया। उसका फलक एक विशाल हड्डी में अटका है। ज्वाला-मुखी पर्वत के लावे से निर्मित यह फलक जितना सुदृढ़ है उतना ही तीक्ष्ण धार। भल्ल के इस वज्र के बारे में शत्रुओं को भी जानकारी है। इससे उसने अनेक युद्धों में जय प्राप्त किया है।

एक दूसरी तरुणी बोली, "वहाँ वह कन्द के अतिरिक्त किसी दूसरे को प्रवेश नहीं करने देती है।"

तीसरी तरुणी बोली, "आज दिन-भर वह वापस नहीं आयेगी।"

भल्ल सिर झुकाये सोचने लगा।

एक तरुणी भल्ल के निकट आयी और उसका हाथ थामे बोली, "आप मेरे कक्ष में चलकर थोड़ी देर विश्राम करें। आपके लिए मैं एक तरबूज रखे हुई हूँ।"

एक दूसरी तरुणी बोली, "आप मेरे गृह में बहुत दिनों से नहीं आये हैं। मैंने आपके लिए मधु इकट्ठा करके रखा है।"

भल्ल ने स्नेहपूर्ण दृष्टि से उन लोगों की ओर निहारा। उसके बाद बोला, "आज नहीं, किसी दूसरे दिन आऊँगा।"

जो तरुणी भल्ल का हाथ थामे थी, उसने नहीं छोड़ा। अनुनयपूर्ण स्वर में कहा, "कब आइयेगा बताइए। जिस रात सोमदेव हास्य करेंगे, उसी रात आइएगा?"

भल्ल बोला, "नहीं। जब सुदिन आयेगा, उसी समय।"

"प्रत्येक दिन तो सुदिन ही है।"

भल्ल ने हँसकर कहा, "अगर तुम लोगों की तरह प्रत्येक मनुष्य का मन विकारशून्य और पवित्र होता तो प्रत्येक दिन सुदिन ही होता। लेकिन मुझे चारों ओर शत्रु ही दिखायी पड़ते हैं। प्रकृति भी विरुद्ध आचरण करती है। इसीलिए मेरी आत्मा में स्थिरता नहीं है।"

"सारे शत्रु तो आपके अधीन हैं।"

"नहीं, वे मात्र सुयोग की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

भल्ल ने तरुणी से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद स्नेह से उसके गाल में उँगली गड़ा कर कहा, "इन्दर तुम लोगों को बहुत पीड़ित करता है?"

एक दूसरी युवती ने कहा, "वह बहुत ही दुष्ट प्रकृति का है। लेकिन हम उसे बिना प्यार किये रह नहीं पाती हैं।"

भल्ल ने कहा, "दुष्ट प्रकृति के पुरुषों को ही नारियों का अधिक प्यार प्राप्त होता है। यह कोई नयी बात नहीं है।"

"लेकिन वह वीर है।"

"इसीलिए तो उसे क्षमा कर दिया जाता है। तुम लोगों के पुरुष भी उसे क्षमा कर देते हैं ?"

"वह छिपकर आता है।"

एक दूसरी युवती ने अभियोग के स्वर में कहा, "कभी-कभी वह गोपनीयता का भी पालन नहीं कर पाता है। किसी न किसी दिन उसे विपत्ति का सामना करना होगा।"

भल्ल किंचित उपभोग की हँसी हँसा। उसके बाद बोला, "वह विपत्तियों में ही फँसना पसन्द करता है। मैं क्या करूँ ? एक भेड़िये तक को उसने अपने अधीन कर लिया है। तुम लोगों ने देखा होगा कि वह एक भेड़िये के गले में रस्सी बाँध उसे लेकर घूमता रहता है।"

"वह एक बहुत बड़े गधे की पीठ पर आरोहण करता है।

"वह सोमरस पान कर अंट-संट बकता है।"

"वह दिन के प्रथम पहर में भी काम मोहित हो जाता है।"

"उसने प्रवीणा के बालों में कीड़े डाल दिये हैं।"

तरुणियाँ इन्दर के बारे में एक साथ बहुत सारी बातें कहने लगतीं हैं। उनमें से कौन-सा अभियोग है और कौन प्रशंसा, ठीक-ठीक समझ में नहीं आता।

भल्ल की पीठ युवतियों की ओर मुड़ गयी और उसने चलते-चलते कहा, "मैं इड़ा के पास जा रहा हूँ।"

निशिगुहा में जाने के पूर्व भल्ल अपने घर गया और अपना बर्छा ले लिया। उसका फलक एक विशाल लाठी में लटका है। ज्वालामुखी पर्वत के लावे से निर्मित यह फलक जितना सुदृढ़ है उतना ही तीक्ष्ण धार। भल्ल के इस बर्छे के बारे में शत्रुओं को भी जानकारी है। इसीसे उसने अनेक युद्धों में जय प्राप्त किया है।

पहाड़ पर जहाँ-तहाँ कई कन्दराएँ हैं। किसी युग में, हो सकता है, कन्दराएँ हिंसक जन्तुओं की माँद हों, लेकिन अब जीव-जन्तु नहीं हैं। वे अरण्य ही में वास करते हैं और कदाचित् ही बाहर निकलते हैं। निशिगुहा सबसे ऊपर है। वहाँ साधारणतया कोई नहीं जाता। के अतिरिक्त वह कन्दरा एक तरह से इड़ा के ही अधिकार में है। भी-कभी उस पर झोंक सवार होती है तो वह वहाँ एक साथ दो-तीन नव्यतीत कर देती है।

ऊपर आ, कन्दरा के भीतर प्रवेश करने के पूर्व भल्ल ने एक बार ारों ओर आँख दौड़ायी। यहाँ से बहुत दूर तक दीख पड़ता है। पत्यका के नीचे घासवन में पशुओं का झुण्ड चर रहा है। हाथ में अस्त्र लेए युवक इधर-उधर खड़े हैं। भल्ल की बायीं ओर विशाल अरण्य है। नदी यहाँ से बहुत क्षीण जैसी दीखती है। फिर भी उसकी धारा की तीव्रता समझ में आ जाती है। एक विशाल वृक्ष बह कर जा रहा है। नदी के किनारे बीस-पच्चीस युवक पत्थर फेंकने के काम में लगे हैं। भल्ल भी कुछ देर पहले वहीं था। वह श्रमदान कर आया है।

नदी के दूसरे किनारे भल्ल को अपना निर्वासित पुत्र दिखायी नहीं पड़ा। आज सवेरे पुकारने पर भी उस ओर कोई प्रतिक्रिया नहीं जगी थी। पता नहीं, शूर जीवित है या नहीं। उस पार के पर्वतों की ओट में कोई एक रहस्यमय देश है। भल्ल को यह नदी पार करनी ही है। किसी न किसी दिन वह वहाँ जायेगा ही। यहाँ से दिखायी पड़ रहा है कि नदी के उस पार भी थोड़ी दूरी पर एक घासवन है। यहाँ की अपेक्षा वहाँ का घासवन बड़ा है। नदी पार करने से उस ओर भी पशुपालन के लिए पर्याप्त स्थान मिल जायेगा।

गुहाद्वार पर आकर भल्ल ने पुकारा, "इड़ा, इड़ा ?"

प्रारंभ में कोई प्रतिक्रिया नहीं जगी। भल्ल ने अंधेरे में झाँक कर देखा। भीतर बहुत दूर मशाल का प्रकाश दिखायी पड़ा। भल्ल ने पुनः जोर से पुकारा।

अचानक भीतर से तीव्र स्वर आया, "कौन है ? यहां से दूर चले जाओ।"

"इड़ा, मैं उपत्यका का अधिपति भल्ल हूँ।"

मशाल का प्रकाश आगे बढ़ आया। एक प्रौढ़ा नारी हाथ मे मशाल थामे है। उसकी केशराशि बिखर कर मुखमण्डल पर फैल गयी है। आँखों में एक दीप्ति है। इस रमणी का नाम है इड़ा।

इड़ा के मुखमण्डल के बीच नाक ही सबसे अधिक आकर्षित करती है। इतनी तीक्ष्णनाशा रमणी कदाचित् ही दीख पड़ती है। उम्र होने के बावजूद उसके चमड़े मे तनिक भी शैथिल्य नही आया है। उसके स्तन बड़े-बड़े होने पर भी नुकीले हैं। उसके गले में नीलमणि की एक माला है जो उसके सौंदर्य मे चार-चाँद लगा रही है।

इस उपत्यका के जनपद मे इड़ा पूर्णत. अलग कोटि की है। बचपन से ही उस पर देवता का अधिष्ठान होता है। जब-तब उसकी चेतना विलुप्त हो जाती है तो वह प्रलाप करने लगती है। कभी-कभी वह ऐसी-ऐसी बातें करती है जो देववाणी तुल्य होती हैं।

इड़ा पूर्णतः स्वेच्छाचारिणी है। उसने अपने लिए किसी पुरुष-संगी का निर्वाचन नहीं किया है। वह अपने कबीले से किसी प्रकार के दायित्व से बँधी नही है। वास्तव में सब उससे थोड़ा बहुत भयभीत रहते हैं।

इड़ा मशाल के प्रकाश मे भल्ल के मुखड़े को देखकर विचित्र प्रकार की हँसी-हँस पड़ी और बोली, "ओह तुम हो ! कोई दूसरा व्यक्ति इस समय आता तो मैं उसके मुँह मे निष्ठीवन डाल देती। आओ, चलकर मेरी कीर्ति देखो।"

इड़ा भल्ल का हाथ थामे उसे खीचती हुई भीतर ले आयी। वहाँ कन्द नामक एक पुरुष एक दूसरी मशाल थामे खड़ा है। कन्द पूर्णतया अंधा है। कुछ वर्ष पूर्व वह एक अग्निकुण्ड में गिर पड़ा था और उसकी आँखें चौपट हो गयी थीं। इसीलिए इड़ा ने सभवतः इसका निर्वाचन

ाम वह सर्वसाधारण को दिखाना नहीं चाहती।
से कन्द के कंधे का स्पर्श करके कहा, "सुभद्र कन्द,
गय हो तो मशाल मुझे दे दो और तनिक विश्राम करो।"

कन्द ने सम्मान पूर्ण स्वर में कहा, "नहीं भल्ल, मुझे थकावट नहीं आयी है। आपका मंगल हो।"

भल्ल ने पुनः जिज्ञासा की, "कन्द, जब तुम्हारे हाथ में मशाल रहती है और जब नहीं रहती है—तो इन दो स्थितियों में तुम्हें कोई पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है?"

"हाँ भल्ल, मुझे उसी प्रकार के पार्थक्य का अनुभव होता है जिस प्रकार के पार्थक्य का अनुभव मैं अपने शरीर में शीतकाल या ग्रीष्म-काल में करता हूँ—अथवा मेरे सामने एक दुखी या एक सुखी मनुष्य खड़ा होने से..."

"कन्द, अभी मैं तुम्हें किस प्रकार का मनुष्य लग रहा हूँ?"

"आप दुश्चिन्ता ग्रस्त हैं।"

"तुमने ठीक कहा है।"

इड़ा ने विरक्ति भरे स्वर में कहा, "अभी यह सब बात रहे। भल्ल, आओ इस ओर देखो।"

इड़ा दीवार के पास मशाल लेकर खड़ी हो गयी। उस ओर देखने ार भल्ल के मुँह से एक प्रकार का विस्मयपूर्ण अस्फुट स्वर निकल पड़ा।

कन्दरा की दीवार पर पंक्तिवद्ध रेखाचित्र हैं। तीन व्यक्ति एक सिंह का शिकार कर रहे हैं। एक-एक कर सात हिरन द्रुत गति से दौड़ लगाने की मुद्रा में हैं। एक विचित्र मुखाकृति का पुरुष एक आइवेक्स को शून्य में थामे है।

भल्ल ने कहा, "यह सब किसने बनाया है? इड़ा, तुमने?"

इड़ा बोली, "सारे चित्र मैंने नहीं बनाये हैं। दाहिनी ओर के तीन चित्रों के अतिरिक्त शेष सभी पहले से ही यहाँ थे।" कौन यहाँ इस अँधेरी कन्दरा में यह सब बना गया है? इसके पूर्व हमें यहाँ मनुष्य की

किसी बस्ती का चिह्न नहीं मिला था। इस कुमारी भूमि में पहले-पहल हमीं लोगों का आगमन हुआ है।"

"फिर इन सबों का देवताओं के द्वारा निर्माण किया गया है।"

"इड़ा तुम जब-तब देवता की चर्चा मत किया करो। मुझे भय लगता है।"

"महावीर मल्ल को भी भय लगता है?"

"देवताओं से बिना भयभीत हुए उपाय ही क्या है? मैं सबसे युद्ध करने को प्रस्तुत हूँ, लेकिन देवताओं से युद्ध नहीं किया जा सकता है। मैं युद्ध कर अँधेरे को दूर कर सकता हूँ या वर्षा को रोक सकता हूँ?"

"मुझे देवताओं का भय नहीं लगता। वे मेरे मित्र हैं।"

"इसीलिए हमें तुमसे भय लगता है।"

"जानती हूँ, और-और लोग भयभीत रहते हैं। लेकिन मल्ल को कभी भयभीत नहीं देखा है।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि इस कन्दरा में ये सब चित्र हैं।"

"मैंने एक दिन नींद में देखा कि आकाश से एक ज्योतिर्मय पुरुष अवतरित हुए हैं। उनकी देह का रंग विद्युत की तरह है। उन्होंने मुझसे कहा: इड़ा, यहाँ हमारे जो असमाप्त कार्य हैं उन्हें समाप्त करना है। तुम्हें हम लोगों का—"

देवताओं ने तुम्हारा ही निर्वाचन क्यों किया?"

"मल्ल, देवताओं के कार्य के संबंध में प्रश्न करना उचित नहीं है। देवताओं ने किसी वृक्ष में मधु दिया है किसी में गरल—लेकिन इसके संबंध में उनसे प्रश्न किया जा सकता है?

"इड़ा, तुम देवनिर्वाचित हो, तुम धन्य हो।"

"तुम समझ नहीं पाओगे मल्ल, कि देवताओं का स्मरण आते ही मेरा चित्त किस प्रकार आन्दोलित हो उठता है। निद्रा में ही उस अमि-ताभ पुरुष ने मुझसे कहा: मेरा असमाप्त कार्य, तुम्हें मेरा असमाप्त कार्य—"

बात करते-करते इड़ा की आँखों में जैसे आवेश उतर आया। वह लड़खड़ाकर गिरने जा रही थी। भल्ल ने उसका कंधा पकड़कर कहा : शान्त होओ।

इड़ा ने आँख खोल अभिभूत स्वर में कहा, "उसके बाद वह दिखायी नहीं पड़े। मैंने चिल्लाकर कहा : आप लोगों का असमाप्त कार्य क्या है? वह कहाँ है? किसी प्रकार का उत्तर नहीं मिला। उसके बाद मैंने बहुत खोज-पड़ताल की। खोजते-खोजते एक दिन इस कन्दरा में यह सब दिखायी पड़ा।"

"इस अँधेरी कन्दरा की दीवारों को चित्रों से भर देने के पीछे क्या उद्देश्य हो सकता है?"

"इस तरह का प्रश्न नहीं करो। मुझे अपने बचपन में इस बात की जानकारी नहीं थी कि मुझमें चित्र बनाने की इस प्रकार की क्षमता है। पहले पहल मैंने जो रेखा खींची तो लगा, यही शाश्वत का अंश है।"

भल्ल ने निश्वास लेकर कहा, "सचमुच क्या देवताओं का यही असमाप्त कार्य है? यह सब मनुष्य के किस काम में आयेगा? इसकी अपेक्षा कोई नया अस्त्र बनाती तो वह काम में आता।"

"अस्त्र के लिए चिन्ता नहीं करो। मैं जानती हूँ, तुम्हारे शत्रु नये-नये अस्त्रों का निर्माण करेंगे और वह सब तुम्हारे काम में आयेगा।"

"सचमुच इड़ा?"

"हाँ, सचमुच ही। मैं जानती हूँ।"

"तुम्हें पहले से ही इन सब बातों की जानकारी कैसे हो जाती है?"

"मुझमें वह सामर्थ्य है। देवतागण मेरे भीतर बैठकर कह जाते हैं।"

"इसीलिए मैं तुमसे कुछ परामर्श लेने आया हूँ।"

"वह सब बात बाद में होगी। तुमने मेरे द्वारा बनाये गये चित्रों को अच्छी तरह देखा है? मन के भीतर जो एक आँख रहती है, उसी आँख से देखना पड़ता है।"

भल्ल स्थिरता के साथ रेखाचित्रों को देखने लगा। उसके बाद शान्त स्वर में बोला, "मैं नहीं जानता कि मन के भीतर कोई आँख है या नहीं। तब हाँ, बाहरी आँखों से ही देखकर बता रहा हूँ कि यह एक विस्मयपूर्ण कार्य है। कब एक सिंह किसी मनुष्य पर आक्रमण करने आया होगा! अब तक वह मर कर निश्चिह्न हो चुका होगा। लेकिन उस मनुष्य ने उसे इस दीवार पर स्थायी बना कर रख दिया।"

इड़ा बोली, "भल्ल, तुम यहाँ खड़े हो जाओ। मैं तुम्हारे चित्र को भी इस दीवार पर स्थायी बनाकर रखूँगी।"

भल्ल ने तनिक लज्जित होकर कहा, "मेरा चित्र क्यों? तुम किसी देवता का चित्र बनाओ जो वास्तव में चिर स्थायी हैं।"

"देवतागण जब मनुष्य की सृष्टि करते हैं तो उन्हें अपने समरूप ही गढ़ते हैं। मनुष्य और देवता की आकृति में कोई अन्तर नहीं होता, एक मात्र रूप में ही अन्तर हैं। मनुष्य भी यदि चेष्टा करे तो देवता का रूप अर्जित कर सकता है।"

"मुझमें वैसी स्पर्धा नहीं हो सकती। मैं अत्यन्त साधारण मनुष्य हूँ।"

"मेरी दृष्टि में तुम सुन्दर हो। मैं तुम्हें देवता का रूप दूँगी। तुम इस ओर आकर खड़े हो जाओ।"

"यह सब किसी दूसरे दिन करना।"

इड़ा ने उसे झिड़कते हुए कहा, "जो कुछ कह रही हूँ, सुनो। चुप-चाप खड़े हो जाओ।"

सपूर्ण उपत्यका में इड़ा को छोड़कर कोई दूसरा मनुष्य भल्ल के साथ इस स्वर में बात नहीं कर सकता है। भल्ल को इसमें कौतुक का अनुभव होता है।

इड़ा ने कन्द को आदेश दिया कि मशाल लेकर वह और भी निकट सरक आये। उसके बाद भल्ल के वक्ष पर हाथ रख उसे अपने निकट

खड़ा किया और चिबुक पर हाथ रखकर बोली, "सीधे मेरी ओर निहारो।"

भल्ल को अनुभव हुआ, इड़ा की आँखों में अधिक मात्रा में दीप्ति आ गयी है। चेहरे पर स्वेद की बूँदें हैं, निरावरण वक्ष रह-रहकर निश्वास के कारण धड़क रहा है। इड़ा उसकी बाल्यसंगिनी है, अत्यन्त ही आदरणीया।

रंगीन पत्थर का एक टुकड़ा ले इड़ा दीवार के सामने बहुत देर तक चुपचाप खड़ी रही। जैसे वह ध्यान लगा रही है। एकबार उसने भल्ल के मुखमण्डल की ओर निहारा, दूसरी बार दीवार की ओर। इस मनुष्य मूर्त्ति और दीवार में वह कोई साधारण लक्षण खोज रही है। उसके बाद उसने यथेष्ट दूरी से हाथ बढ़ाकर दो रेखाएँ खींचीं, उससे एक मनुष्य की नाक उभर आयी। मनुष्य के शरीर के अवयवों में से प्रारंभ में नाक ही क्यों चित्रित की जाती है, इसका कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसके बाद उसने नाक के दोनों ओर दो आँखों का रूप उ[illegible]रा। लेकिन आँखों की पुतलियों को नहीं उभारा, इसके पहले ही वह कपाल और केश की ओर बढ़ गयी।

भल्ल ने टूटे स्वर में कहा, "यह बहुत ही विचित्र बात है। कई साधारण रेखाओं के माध्यम से ही मनुष्य का अवयव कैसे उभर आता है? हम ऐसा नहीं कर पाते। इड़ा, तुम कैसे कर लेती हो?"

इड़ा ने सिर बिना घुमाये कहा, "मुझे भी इस बात की जानकारी नहीं है।"

"जो काम बहुतों के द्वारा नहीं हो पाता, उसे कोई अचानक कैसे कर लेता है?"

"भल्ल थोड़ी देर चुप रहो।"

भल्ल ने अपने मन को कन्द की ओर तल्लीन कर दिया। वह प्रस्तर खंड जैसा ही स्थिर खड़ा है। इस तरह घण्टों इड़ा की बात पर खड़े

"क्यों ?"

"शरीर चंचल हो उठता है, तो मन अपने वश में नहीं रह पाता है।"

"अचानक तुम्हारा शरीर क्यों चंचल हो उठा ? आँधी-पानी कुछ भी नहीं आया है।"

"वीच-वीच में छाती के भीतर आँधी जग उठती है।"

"ऐसी वात ?"

"मेरा शरीर अपने अधिकार की माँग कर रहा है। मन को अधिक देर तक एकाग्र रख नहीं पाती हूँ, शरीर आकर अड़चन डाल देता है। कभी-कभी मैं इस प्रकार क्षुधार्त्त हो उठती हूँ कि सामने कन्द मिल जाता है तो उसी का उपभोग करने लगती हूँ।"

भल्ल वोला, "तो फिर आज रहने दो।"

इड़ा ने भल्ल के गले को अपनी वाहुओं में भरकर कहा, "तुम मुझे तनिक आनन्द दो। मुझसे अव सहा नहीं जाता।"

"इड़ा, मेरा हृदय आज वोझिल है।"

इड़ा ने क्रोध में आकर कहा, "नारी के आह्वान पर जिस पुरुष में प्रतिक्रिया नहीं जगती है, उसे छुरे से घायल कर देना चाहिए।"

"मेरा ढेर सारा काम करने को पड़ा है।"

इड़ा ने भल्ल का एक हाथ अपनी छाती से दवाकर कहा, "मैं पागल होती जा रही हूँ। तुम्हें मेरी छानी के भीतर वाजे वजते हुए सुनायी नहीं पड़ रहे ? कोई दूसरा समय रहता है तो पुरुप के संपर्क का मुझमें कोई आग्रह नहीं रहता है। लेकिन चित्रांकन में कुछ देर तक एकाग्र होते ही मेरा शरीर छटपटाने लगता है। मुझे भीषण जलन का अनुभव होने लगता है और मैं रह नहीं पाती। भल्ल, तुम मेरी ओर निहारो, तुम मुझे लो।"

"कुछ देर पहले मैं अनि को ठुकरा चुका हूँ।"

इड़ा ने दर्प के साथ कहा, "तुम किसी दूसरी नारी से मेरी तुलना

नहीं करो। ऐसा करोगे तो मैं दांत से तुम्हारे मांस का लोथड़ा काट लूंगी। मूर्ख, तुम जानते नहो कि नारी के सामने दूसरी नारी का उल्लेख नहीं करना चाहिए ?"

इड़ा जैसे सचमुच ही दांत से काट लेगी, वैसे ही उसने भल्ल की छाती पर अपना मुंह रखा। धीरे से दांतों से काट लिया। गंभीरता के साथ सांस लेकर वह भल्ल के शरीर को सूंघने लगी है। उसकी उंगलियों के बड़े-बड़े नख भल्ल के पृष्ठदेश विद्ध कर रहे हैं।

भल्ल ने हंसते हुए इड़ा के कंधों का स्पर्श किया। तनिक विस्मयपूर्ण स्वर में कहा, "इड़ा, तुम दिन-भर परिश्रम करती रहती हो, लेकिन तुम्हारा शरीर कितना कोमल है! जैसे घृत, नवनी और अमिक्षा से निर्मित हो। बहुत सारे पुरुष तुम्हारी कामना कर सकते हैं।"

इड़ा बोली, "पुरुष मुझे आनन्द नहीं दे पाते हैं। मैं अपनी शारीरिक क्षुधा-तृष्णा के निमित्त ही पुरुषों को चाहती हूं। मुझे वास्तविक आनन्द विश्लेषण मे मिलता है। मेरा वही आनन्द मुझे अचानक भयंकर रूप से क्षुधित कर देता है। मुझसे अब सहा नहीं जाता।"

"मैं क्या तुम्हारी यह क्षुधा शान्त कर पाऊंगा ?"

"तुम पुरुष श्रेष्ठ हो।"

भल्ल तनिक निकट सरक आया और इड़ा को उसने परितृप्त किया। कन्द मशाल थामे अविचल खड़ा रहा। जैसे वह इस अंधेरी गुफा का ही अंग हो।

इड़ा उठकर खड़ी हो गयी और उदास स्वर मे बोली, "मेरा मन और अधिक खराब हो गया।"

भल्ल ने आहत और अवाक् होकर कहा, "क्यो ?"

"बता रही हूं। कन्दरा के बाहर प्रकाश में आओ।"

इड़ा भल्ल का हाथ थामे उसे खींचती हुई बाहर ले आयी। भल्ल के मुखड़े की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती हुई व्याकुल स्वर में बोली,

स्मरण है, बचपन हमने एक साथ बिताया था ? तुम युद्ध में जय प्राप्त कर आये और मैं आनन्द के आँसू बहाने लगी ।"

"अभी अचानक तुम यह सब क्यों कहने लगीं ?"

"तुम अन्य नारी की ओर आकर्षित हुए और मैंने ही तुम्हें इसके लिए अनुमति दी थी ।"

"बीते दिनों का तुम्हें स्मरण आ रहा है ?"

"सोचा था, तुम्हारे यश की प्रभा अग्नितुल्य होगी । तुम्हारे नाम पर वन्दना-गीत की रचना की जायेगी । हाय काल ! हाय जीवन !"

भल्ल इड़ा के इस प्रसंग को ठीक-ठीक समझ नहीं सका । लेकिन इड़ा का उदास स्वर सुन और आँखों में अश्रुधारा देख वह विमूढ़ जैसा हो गया । व्यग्रता के साथ पूछा, "क्या हुआ, सच-सच बताओ ।"

"तुम्हारे शरीर में मुझे मृत्यु-गंध मिली । तुम्हारी आयु अब अधिक दिनों की नहीं है ।"

भल्ल का मुखमण्डल विवर्ण हो गया । इड़ा का हाथ कसकर दबाते हुए बोला, "तुम यह क्या कह रही हो ?"

"मुझसे कभी भूल नहीं होती ।"

इड़ा ने भल्ल की हथेली अपनी आँखों के सामने फैला दी । वह फिर सूँघने लगी और बोली, "मुझसे कभी भूल नहीं होती । तुम हम लोगों को छोड़कर चले जाओगे ।"

भल्ल ने उदासीनता के साथ एक निश्वास लेकर कहा, "तुम्हारे शब्दों में यदि सच्चाई भी हो तो मेरे लिए कोई दुख की बात नहीं है । मृत्यु नियति के हाथ रहती है । लेकिन मेरा बहुत सारा काम अधूरा पड़ा है ।"

"सारी आशा पूर्ण नहीं होती ।"

"मैंने सोचा था, नयी भूमि पर अधिकार प्राप्त कर अपने लोगों के लिए समृद्धि ले आऊँगा । हम लोगों के पीछे शत्रु हैं, नदी के ऊपरी भाग में किरातगण अवसर की प्रतीक्षा में हैं । उन लोगों का दमन करने

का कोई रास्ता न मिलेगा तो हमी लोग निश्चिह्न हो जायेंगे। सोचा था, इस भयंकर नदी को बाँधकर दूसरे किनारे के विशाल प्रान्तर का उपभोग करूँगा। मेरी वह शपथ भी पूर्ण न होगी ?"

"नहीं। तुम अपना काम समाप्त कर नहीं जा पाओगे।"

"मेरी मृत्यु के बाद कोई सबकी रक्षा का भार ले सकेगा ? मेरा श्रेष्ठ पुत्र वृक दुःसाहसी है लेकिन उसके मस्तिक में स्थिरता नहीं है। वह ठीक-ठीक सिद्धान्त लेने में भूल कर बैठता है।"

"तुम्हारी मृत्यु के बाद क्या होगा, इसके बारे में तुम्हें सोचना नहीं चाहिए। इससे आत्मा मलिन हो जाती है।"

"मुझे क्या सचमुच ही सब कुछ छोड़कर चला जाना होगा ?"

"सभी को जाना पड़ता है। तुम्हारा समय कुछ शीघ्र ही समाप्त हो गया।"

"इड़ा, मेरी शीघ्र-मृत्यु की बात में यदि सच्चाई है तो भी तुम्हें यह बात नहीं बतानी चाहिए थी। इसकी चिन्ता मुझे दुर्बल बना देगी।"

"नहीं भल्ल, बल्कि इसका उलटा ही होगा। तुम्हारा समय कम है, इस बात का तुम्हें पता चल गया है और तुम अपने समय को पूर्णतया काम में लगा सकोगे। हो सकता है तुम्हारे मुख पर मृत्यु की छाया ही देखकर तुम्हारे चित्रांकन की बात मेरे मन में आयी हो। उसके बाद तुम्हारे शरीर में मुझे स्पष्टतः मृत्यु की गंध मिली। उसका सौरभ बहुत ही मीठा होता है —चाँदनी में जो सब फूल खिलते हैं उन्हीं फूलों की जैसी सुगंध थी। तभी समझ गयी, मृत्यु ने तुम्हारा निर्वाचन कर लिया है और तुम्हारी देह इसके लिए अपने को प्रस्तुत कर रही है।"

"तुम इतना कुछ जानती हो।"

"इस ज्ञान ने मुझे सुखी नहीं बनाया है। कोई दूसरा दुर्बल मनुष्य होता तो उसे मैं यह बात नहीं बताती। लेकिन मैं जानती हूँ, तुम वीर हो। तुम इस संक्षिप्त समय में ही कोई कीर्त्ति रख जाओगे।"

"तुम भविष्य को देख सकती हो, इसलिए मैं आज तुम्हारे पास एक

परामर्श लेने आया था। युद्ध छिड़ने वाला है। मरुत्‌गोष्ठी प्रायः आती है और हमारा गोधन चुराकर ले जाती है। उस ओर किरातों ने हमसे भी अधिक तीक्ष्ण अस्त्र का निर्माण कर लिया है। अभी हम उनका सामना नहीं करते हैं तो वन्य महिष के खुर के तले के तृण समान वे हमें मर्दित कर देंगे। इधर मेरा मन स्नेह से द्रवित है—मुझे अपने पुत्र का उद्धार करने का कार्य ही अग्रगण्य प्रतीत होता है। तुम यही बताओ कि मुझे प्रारंभ में कौन-सा उद्योग करना चाहिए।"

"यज्ञ की अग्नि के सामने नृत्य किये बिना मुझे दूर दृष्टि प्राप्त नहीं होती। तुम किसी यज्ञ का आयोजन करो।"

भल्ल ने कौतुकपूर्ण स्वर में कहा, "यज्ञ करने का समय मुझे मिलेगा तो ?"

ऋक्षा ने कोमल दृष्टि से भल्ल की ओर देखा। भल्ल हँस पड़ा। उसके बाद ऋक्षा के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "तुम पुनः कन्दरा में लौट जाओगी ? तुमने साधारण क्षुधा-तृष्णा पर जय प्राप्त कर लिया है लेकिन मैं क्षुधा-तृष्णा कातर साधारण मनुष्य हूँ। मैं क्षुधार्त्त हूँ, अभी नीचे जाऊँगा।"

ऋक्षा बोली, "चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। आज मैं द्राखमा के पास जाकर तुम्हारे भोज्य पदार्थ में अंश ग्रहण करूँगी।"

"किसी बाधा के बिना चल सकती हो लेकिन कन्द को खाने के लिए नहीं बुलाओगी ?"

"उसकी आवश्यकता नहीं। कन्द एकाहारी है। वह सूर्यास्त के पहले नहीं खाता है।"

भल्ल बोला, "हुं। अंधे के लिए सूर्यास्त क्या। कितने प्रकार के अवास्तविक कार्य होते हैं।"

तत्क्षण एक दूसरी स्त्री ने गाया :

अरी तू फल की बातें कह
अरी तू फल की बातें कह

एक तीसरी स्त्री :

पूषण गया प्रभात काल में फल चुनने को
पूषण गया प्रभात काल में फल चुनने को

एक और स्त्री :

सोमा की आँखों में क्या देख रही हूँ
सोमा की आँखों में क्या देख रही हूँ

एक और स्त्री :

सोमा की छाती पर सोने का फल
सोमा की छाती पर सोने का फल

एक और स्त्री :

पूषण को क्या मिला वहाँ
पूषण को क्या मिला वहाँ

प्रथम स्त्री :

फूल मिला या फल मिला
फल मिला या बीज मिला

एक और स्त्री :

पूषण सोमा सुख से जिये
पूषण सोमा सुख से जिये
ऊँ-ऊँ-ऊँ । अग्नि एवं वरुण
उनका मंगल करें]

गीत गाते-गाते वे झरने के पास आती हैं और ठिठक कर खड़ी हो जाती हैं। मशकों को एक ओर रख देती हैं। किसी रसपूर्ण बात पर वे एक साथ मीठी हँसी हँसने लगीं।

उन्हें तुरन्त लौटने की हड़बड़ी नहीं है। मगर में जल भरने के पहले वे कुछ देर तक जल केलि करती हैं। इसे स्नान नहीं, अंग-प्रक्षालन कहा जायेगा। सिर की केशराशि भिगोने में उन्हें भय लगता है। यह झरना अथवा अदूरवर्ती भयंकर नदी—इनमें से कोई संतरण के उपयुक्त न रहने के कारण मनुष्य के कबीले की यह शाखा तैरना भूल चुकी है।

कमर-भर पानी में धँसकर वे एक-दूसरे की देह पर पानी छींटती हैं। कोई एक दूसरी की कमर पकड़कर उसे झकझोर कर क्रीड़ा कर रही है। सूर्य का प्रकाश उनके पानी से भीगे अपूर्व शरीर पर झिलमिला रहा है।

एक ही युवती इस कल हास्य में सम्मिलित नहीं हो रही है। वह अकेली थोड़ी दूर पर बैठ पानी में अपना मुखड़ा देख रही है।

युवती का नाम रा है। वह उद्भिन्न यौवना रूपसी है और कुछ-कुछ पगली जैसी। अधिकांश समय वह गंभीर बनी रहती है। और-और युवतियाँ उसे विरक्त नहीं करतीं हैं।

रा जब अल्पवयस्का थी, उसी समय उसने ऋभु को अपने एक मात्र संगी के रूप में मनोनीत कर लिया था। ऋभु छरहरा और लंबे वदन का युवक है, उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं। वह एक भावुक प्रकृति का कलाकार युवक है। लकड़ी और प्रस्तरखण्ड से नाना प्रकार की मूर्त्ति गढ़ने में उसके समान कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के कामों में आने वाले मृत्तिका पात्र पर उसने चित्र उकेरे थे। बाघ के मस्तक की आकृति का एक सोमपात्र बनाकर उसने भल्ल को उपहार स्वरूप दिया था। रा और ऋभु अविभेद्य थे। वे दोनों सर्वदा एक साथ दीखते थे।

इस शीतकाल के पिछले वाले शीतकाल के प्रारम्भ में मरुत्‌गोष्ठी से इन लोगों की एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई थी। कुरुगोष्ठी के सभी व्यक्तियों

के लिए युद्ध करना अनिवार्य था, इसलिए कलाकार ऋभु ने भी उस युद्ध में अस्त्र धारण किया।

युद्ध समाप्त होने के बाद देखने में आया कि कुछ नारी और पुरुषों के अतिरिक्त शत्रु ऋभु का भी हरण कर उन्हें अपने साथ ले गये हैं।

इसके बाद ऋभु की क्या परिणिति हुई, इस संबंध में किसी प्रकार की दुविधा नहीं रह जाती है। विरोधी पक्ष के पुरुषों को कोई एक क्षण से अधिक जीवित नहीं रहने देता। ऋभु के मृत शरीर को अब तक कीट-पतंगों ने खाकर समाप्त कर दिया होगा। लेकिन रा को इस बात पर कतई विश्वास नहीं होता। उसकी धारणा है, ऋभु पुनः लौट कर आयेगा।

यहाँ मरे हुए लोगों का स्मरण किसी को भी नहीं रहता, क्योंकि जीवन प्रतिक्षण रोमांचकारी होता है। प्रिय पुरुष संगी की मृत्यु होने पर युवतियाँ खुलकर रोती हैं, हृदय से शोक प्रकट करती हैं और एक ही पखवारे के बीच पराये पुरुष की शय्यासंगिनी हो जाती हैं। शोक और आनन्द एक समान ही प्रबल और सत्य होते हैं।

एक मात्र रा ही ऐसी युवती है जिसने किसी दूसरे पुरुष का निर्वा- नहीं किया है। वह ऋभु के लिए प्रतीक्षा कर रही है। असल में उसने ऋभु की एक काल्पनिक मूर्त्ति गढ़ ली है और उसी को लेकर विभोर रहती है।

रा अन्यमनस्कता से दूसरी-दूसरी युवतियों की कौतुक-क्रीड़ा देखती है। अन्यान्य युवतियाँ तृप्त हैं। वे कितनी ही तरह के आनन्द का उप-भोग कर रही हैं।

झरने के दूसरे किनारे थोड़ी दूर एक मनुष्य की मूर्त्ति दिखायी पड़ती है। युवतियों में से अनि की ही दृष्टि सबसे पहले उस ओर जाती है। सोचती है, वह अवश्य ही इन्दर है। वह बड़ा ही दुष्ट है। लेकिन झरने के उस पार कैसे पहुँचा ?

अरण्य के भीतर, जहाँ से होकर झरना आता है, एक जगह उसकी

धारा अत्यन्त ही क्षीण है। वहीं से झरने को पार किया जा सकता है। इन्दर ने क्या अकेले ही अरण्य के भीतर प्रवेश किया था? वह किसी न किसी दिन विपत्ति में फँसकर मरेगा।

थोड़ी देर बाद ही अनि की भ्रान्ति दूर हो जाती है। उस पार का युवक अरण्य की ओर हाथ बढ़ाकर कुछ संकेत करता है। तत्क्षण अरण्य से बहुत सारे मनुष्य बाहर निकल आते हैं। उनके बाहुओं में एक-एक तावीज है। अब किसी प्रकार का कोई सन्देह न रहा।

अनि तीव्र स्वर में चीत्कार कर उठती है। कई नारियाँ उस समय मछली पकड़ने में व्यस्त थीं और बाकी उन लोगों को देख रही थीं। अनि का चीत्कार सुनकर उनके कान खड़े हो गये और उन्होंने अपनी आँखें दौड़ायी। प्रारंभ में उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता है। स्त्रियों में प्राण-भय की मात्रा सर्वदा कुछ कम हुआ करती है।

उन्होंने प्रारंभ में उसे अनि का विनोद समझा और पुनः जल-क्रीड़ा में निमग्न होने जा रही थी। उस समय अनि चिल्ला उठी—मरुत्, मरुत्।

सबने पीछे मुड़कर देखा तो अन्य कबीले के पुरुषों पर उनकी दृष्टि पड़ी। तभी वे एक साथ उ-लू-लू ध्वनि कर द्रुतगति से पानी से बाहर निकल आयों। उनकी तीव्र उ-लू-लू ध्वनि उपत्यका तक पहुँच जाती है।

उस पार के मनुष्य तैरने की कला में अत्यन्त निपुण हैं। झरने के पानी में कूदकर इस ओर आने लगते हैं।

युवतियाँ अपनी ध्वनि को बिना रोके शीघ्रतापूर्वक अपने परिधान और सामान उठा लेती हैं। यहाँ एक भी वस्तु छोड़कर नहीं जायेंगी। यहाँ तक कि उन्होंने जिन तीन मछलियों को पकड़ा है, उन्हें भी आँचल में बाँध लेती हैं और धरती से पत्थर चुन-चुनकर आगे बढ़ती हैं और पुरुषों की ओर फेंकने लगती हैं।

थोड़ी देर पहले जो सुन्दरियाँ क्रीड़ा-कौतुक में निमग्न थी, अब वे

एणरंगिनी हो गयी हैं । उनके पत्थर की चोट से दो-चार पुरुषों के सिर फट जाते हैं ।

एक मात्र रा वहाँ स्थिर होकर खड़ी रही । उसमें भागने का कोई लक्षण दिखायी नहीं पड़ रहा है ।

दो नारियों ने उत्तेजना के साथ उससे कहा, "तू खड़ी क्यों है ?"

रा ने होंठ काटते हुए कहा, "वे लोग क्या करते हैं, मैं यही देखना चाहती हूँ ।"

"तू क्या देखेगी ? वे तो आ गये ।"

रा ने दृप्त कण्ठ से कहा, "आये न, मैं क्या उन लोगों से डरती हूँ ? यदि वे मुझे लूटकर ले जाना चाहें तो मैं उन लोगों के साथ जाऊँगी । अपनी आँखों से देखूँगी कि ऋभु जीवित है या नहीं ।"

"धत्त, पगली कहीं की !"

यह कहकर दोनों नारियाँ रा के एक-एक हाथ थाम उसे खींचती हुई ले गयीं ।

युवतियाँ पत्थर फेंकती हुई पीछे हट रही हैं । उनके मुखमण्डल से ...। टपक रही है । आजकल अरण्यवासी मरुत्गण इतने नीच हो गये हैं ... अवगाहनरता युवतियों पर आक्रमण करने में भी उन्हें लज्जा का वोध नहीं होता । इस उपत्यका के भल्ल के अनुचर कभी इस प्रकार का हीन कार्य नहीं करेंगे ।

सारी स्त्रियाँ भाग नहीं सकीं । मरुत्गण तीव्र गति से दौड़ते हुए आये और आठ-दस स्त्रियों को पकड़ लिया । स्त्रियाँ अन्त-अन्त तक उन्हे दाँत से काटती रहीं । पुरुषगण लाठी से प्रहारकर उन्हें अचेत करने लगे । इससे ढोकर ले जाने में सुविधा होगी ।

अनि ने पहले-पहल दस्युओं को देखा था । इसलिए वह दौड़कर वहां... दूर भाग जाती है । उसका चीत्कार घासवन के पहरेदारों के कान... पहुँचता है । वे लोग भी अस्त्र लिए इस ओर दौड़कर चले आते हैं ।

वृक् और उसके दल के लोग युद्ध के समय उन्मत्त हो जाते हैं

विशेषकर वृक् का दुःसाहस इतना प्रबल है कि अन्यान्य लोग साधारण कापुरुषता का भी प्रदर्शन नहीं कर पाते। वृक् अपना वर्छा ले वायुवेग से दौड़ता हुआ सीधे शत्रुदल के बीच घुस पड़ा। वह उस समय अकेले एक सौ के बराबर हो जाता है। वह जैसे आँखों से दिखायी ही नहीं पड़ रहा है। वृक् बीच-बीच में अपना वर्छा ऊपर उठा लेता है और कहता है- यह लो, यह लो।

इन्दर कुछ लोगों को अपने साथ ले द्रुतगति से झरने के ऊपरी भाग में चला जाता है। उसका उद्देश्य शत्रुओं के पलायन का पथ बन्द करना है। वहीं से वह तीरों की वर्षा करने लगता है। मल्लगोष्ठी साहस के साथ युद्ध करती है। लेकिन अपनी भूमि और परायी भूमि में युद्ध करने में थोड़ा-बहुत अन्तर होता ही है। इसके अलावा वे लोग तस्करी करने आये थे, लड़ाई करने नहीं। गत वर्ष उनके कबीले में महामारी फैल गयी थी और उनके पशु और नारियों की संख्या में बहुत बड़ी कमी आ गयी है। अभी उन लोगों की स्थिति निराशाजनक है।

युद्ध से मुँह मोड़कर जो लोग पानी मे कूद पड़े, उनमें से कुछ लोगों की मृत्यु पत्थर की चोट से हो गयी। कुछ लोग उस पार पहुँचकर जीवित बच गये। जो लोग उस पार पहुँचकर भागना चाह रहे थे, इन्दर ने उन्हें बन्दी बना लिया।

युद्ध का समाचार पाकर भल्ल समस्त पुरुषों को एकत्र कर इस ओर दौड़ा-दौड़ा चला आ रहा था। दूर से ही लड़ाई समाप्त होते देखकर वह रुक गया। वह कबीले का सरदार है, अकारण चंचलता दिखाना उसे शोभा नहीं देता। हाथ में लम्बा-सा वर्छा थामे वह एक ऊँचे पत्थर पर खड़ा हो गया। दूर से ऐसा लग रहा है जैसे उसकी मूर्त्ति आकाश में चित्रित हो।

इस ओर गर्ग ने अपना सिंगा बजाकर युद्ध की समाप्ति की घोषणा की। शत्रुओं की पीठ के पास वर्छा तना हुआ है। पराजितों की तरह विजयी दल के लोगों का भी शरीर स्वेद और रक्त से लथपथ है, लेकिन

उनकी उल्लास-ध्वनि में कहीं कोई क्लान्ति का भाव नहीं है। अभी और अधिक उल्लास बाकी ही है। अभी तुरन्त इन पचीस-छब्बीस वन्दियों को मूली-गाजर के समान काट दिया जायेगा। उसके बाद उन्हें घेर कर सुरापान और नृत्य का उपक्रम चलेगा। शत्रु पर जय प्राप्त करने से बढ़कर आनन्द और हो ही क्या सकता है! इसी से जीवन धन्य होता है। जिस काम से तुम केवल अपना नहीं, अपने दलपति, माता और पड़ोसियों के जीवन की रक्षा कर सकते हो और उन्हें आनन्द प्रदान कर सकते हो उससे बढ़कर महान् कार्य कोई दूसरा नहीं होता।

शत्रु की हत्या में समय नष्ट नहीं करना चाहिए। स्त्रियाँ उन्हें मारने के लिए चिल्ला रही हैं। लेकिन वृक् ने आदेश दिया, उन्हें ठेल कर उपत्यका की ओर ले जाया जाये। भल्ल आ गये हैं तो उनके सामने ही इस काम का प्रारंभ करना विधान सम्मत है। भल्ल शत्रु हत्या का पवित्र दायित्व जिस-जिस व्यक्ति पर सौंपेगा, वे लोग स्वयं को पुरस्कृत समझेंगे। नारियों की दृष्टि में वे कमनीय हो उठेंगे।

वन्दियों को भल्ल के निकट लाकर वृक् से सिर झुकाकर कहा, "मेरी ही अक्षमता के कारण कुछ लोग भाग खड़े हुए। मैं यथेष्ट पराक्रम का प्रदर्शन नहीं कर सका।"

सभी वृक् को साधुवाद देने लगे। हाँ, वह शिष्टाचार जानता है। दलपति के सामने आत्म-श्लाघा करना निम्नतम कार्य है। आत्म-श्लाघा केवल शत्रुओं के सामने करनी चाहिए। इसके अलावा जो लोग भल्ल की यौवनावस्था का पराक्रम देख चुके हैं, वे जानते हैं कि भल्ल के जैसा वीर किसी समय न था और न होगा।

इस युद्ध में यद्यपि वृक् के अतिरिक्त बलवान हवि, इन्दर, नागेय, सुमालि, ककुत्स्थ, अभि, सुंग इत्यादि योद्धाओं ने भी पर्याप्त वीरता के साथ भाग लिया था, परन्तु वृक् के नेतृत्व के कारण ही इतनी सहजता से विजय की प्राप्ति हुई है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। मरुन्‌गण द्रुतगति से दौड़ सकते हैं। युद्ध से भी अधिक

पलायन में वे पारंगत हैं। ऐसी स्थिति में इन कई अपराधियों को ही बंदी बनाया गया है यही पर्याप्त है। कोई दूसरा राजा होता तो मल्ल वृद्ध को अपने पास बुलाता और उसके मस्तक को चूमता। अपने हाथ से उसके हृदय में सम्मान भाव भर देता। आज उसने ऐसा कुछ नहीं किया। अब भी वह शत्रुओं की हत्या करने का आदेश नहीं दे रहा है।

मल्ल कुछ देर तक चुप रहा, उसके बाद बोला, 'बता वृद्ध, तुम मेरे एक अनुरोध का पालन करोगे?'

सब अवाक् हो जाते हैं। मल्ल भी क्या न कहे, ऐसा कभी हुआ है? उसके अलावा मल्ल अनुरोध क्या करेगा, उसका प्रत्येक शब्द ही आदेश है!

वृद्ध ने कोई उत्तर न दिया, वह चुपचाप खड़ा रहा।

मल्ल बोला, 'अपनी वीरता से तुमने अपने पुरखों के नाम को कृतार्थ किया है। देवगण तुम्हारा कल्याण करें।'

'तुम वायु के समान वेगवान् हो, अग्नि के समान क्रुद्ध हो। वायु और अग्नि तुम्हारी रक्षा करें।'

'तुम्हारे जन्मकाल में आकाश से अग्नि बरसात हुआ था और पृथ्वी कंपित हो उठी थी। वज्र के देवता तुम्हारी रक्षा करें।'

मल्ल कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया। सभी मन ही मन अधीर हो रहे हैं, यद्यपि उनका भाव बाहर व्यक्त नहीं हो रहा है। इस प्रकार के पुरातन शब्द प्रत्येक युद्ध के बाद कहे जाते हैं। मल्ल असली बात क्यों नहीं बता रहा है?

ऊँचे पत्थर पर से मल्ल ने गंभीर स्वर में कहा, 'वृद्ध, तुम और सगोत्र बंधुवृन्द मेरे अनुरोध की रक्षा करें। इन पराजित व्यक्तियों की हत्या मत करो। तुम लोग इन्हें मुक्त कर दो।'

सबके मुँह से विस्मय और हताशा का स्वर बाहर निकल आया। मल्ल आज यह सब क्या कह रहा है? इस प्रकार की बात कभी किसी

ने सुनी है ? शत्रुओं की संख्या में ह्रास लाने के बदले वह शत्रुओं की संख्या बढ़ाना चाहता है ? यह तो वंश को नष्ट करने का उपाय है !

वन्दियों ने भी अचकचाकर भल्ल के मुखड़े की ओर देखा। भल्ल वृक् की ओर अपलक देख रहा है। उसके हाथ में वर्छा दृढ़ता के साथ थमा है। इस बात में कोई सन्देह नहीं कि वृक् उसकी बात अमान्य करेगा तो उसका वर्छा अभी तुरन्त उसके वक्षस्थल को विदीर्ण कर देगा। सबके सामने वह जो कुछ कह चुका है, उसका पालन करने में वह तनिक भी विचलित नहीं होगा।

प्रश्न करना तो दूर की बात, वृक् ने भल्ल की बात दूसरी बार सुनने की भी प्रतीक्षा न की। उसने तत्क्षण वन्दियों की पीठ के पास से वर्छा हटा लिया और दूर जाकर खड़ा हो गया। दूसरों को भी उसने ऐसा ही करने का संकेत किया।

कोई एक शब्द तक नहीं बोल रहा है। पराजित पच्चीस-छब्बीस व्यक्तियों को भी देखने से ऐसा लगता है कि प्राण बच जाने से वे भी कोई विशेष आनन्दित नहीं हैं। वे संकोचभरी दृष्टि से इधर-उधर ताक रहे हैं।

भल्ल अपने आप कहने लगा, "यह निरर्थक रक्त की नदी बहानेवाला युद्ध मेरे मन को प्रसन्न नहीं कर सकता है। हमारे सामने और भी बड़े-बड़े काम हैं। उन लोगों का रास्ता छोड़ दो।"

उसने अपने कबीले के लोगों की ओर मुड़कर पूछा, "तुम लोग मेरे इस अभिप्राय को प्रतिवाद के योग्य समझते हो ? मैं तुम लोगों के कल्याण के लिए ही इस प्रकार का कार्य कर रहा हूँ।"

किसी ने एक भी शब्द न कहा। इन्दर ने वृक् की ओर देखा। उसे आशा थी कि वृक् कुछ कहेगा। लेकिन वृक् माथा झुकाये खड़ा रहा।

इन्दर ने सोचा, भल्ल क्या किसी नये खेल के विषय में सोच रहा है ? प्रचलित रूप में वन्दी की हत्या की जाये तो उसमें कोई विचित्रता नहीं। इसलिए क्या भल्ल यह चाह रहा है कि वन्दी लोग जब मुक्त होकर

भागने लगें तो चारों ओर से घेर कर नाना प्रकार के कौतुक के साथ उन लोगों के हाथ-पाँव काट लिये जायें ?

भल्ल जैसे इन्दर के मन की बात समझ गया हो, उसी मुद्रा में बोला, "मैं उन्हें केवल मुक्त करना नहीं चाहता, बल्कि यह भी चाहता हूँ कि तुम लोगों के मन में शत्रुओं के प्रति जो क्रोध और घृणा है उसे भूल जाओ। अतीत मर जाये।"

उसके बाद वह बन्दियों की ओर देखकर बोला, "जाओ, तुम लोग अरण्य राज्य में लौटकर चले जाओ। इस प्रकार तस्कर-वृत्ति करने पुनः मत आना। अपने मरुत् वंश के नाम पर कलंक मत लगाओ। हम लोगों की नारियों का हरण करके ले जाते तो हम सब कुछ दाँव पर लगाकर लड़ाई करते। वह एक बहुत लंबी लड़ाई होती। अपने दलपति मरुत्त से कहना, हम उसके साथ युद्ध नहीं, शान्ति चाहते हैं। हम पराजित हो जाते तो यह बात नहीं कहते। पराजित दल के मुँह में क्षमा अथवा शान्ति का प्रस्ताव शोभा नहीं पाता। विजयी होकर ही यह बात कह रहा हूँ, इसलिए समझ लो कि यह हमारे हृदय की बात है।

"मरुत्त को एक और बात स्मरण करा देना। किसी समय हम और तुम एक ही वंश से उत्पन्न हुए थे। कालक्रम से हम विच्छिन्न हो गये, परन्तु हमारी देह की आकृति एक जैसी है, हम एक-दूसरे की बात समझ लेते हैं। हम लोगों के बीच यह जो युद्ध चल रहा है, वह नितान्त आत्मघाती है। दूर रहने वाले निषाद बल्कि पूर्णतया दूसरी जाति के हैं। वे ही हमारे वास्तविक शत्रु हैं। यदि हमारी ये दो गोष्ठियाँ समवेत होकर निषादों से लड़ सकें तो हम टिक सकते हैं। अन्यथा हम सभी निश्चिह्न हो जायेंगे।"

"जाओ, मरुत्त से कहो, मैंने यह प्रस्ताव भेजा है। और यदि उत्तर लेकर आना चाहो तो दिन के समय हाथ में मशाल लेकर आना। मात्र दो ही व्यक्ति आना, कोई तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।"

"और मरुत्त यदि सहमत न हो तो हम सदैव युद्ध करने को प्रस्तुत

। तव हाँ, अभी मैं विना किसी शर्त के तुम्हें मुक्त कर रहा हूँ। ओ—"

भल्ल ने हाथ का वर्छा उठाकर रास्ता दिखाया। वृक् एवं उसके हयोद्धागण खड़े हो गये। पराजित दल धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। न्होंने एक बार भी भल्ल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त न की। उनका मुख-ण्डल अपमान से कठोर दीख रहा था।

वे लोग जब कुछ दूर चले गये तो भल्ल ने पुनः चिल्लाकर कहा, "मरुत्त से कहना कि मैंने उसे भाई कहकर संबोधित किया है।"

उस समय पराजित व्यक्तियों में से एक व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा, "किसी एक युद्ध में जय प्राप्त करने से समस्त युद्धों का समाधान नहीं होता।"

भल्ल मुसकराया और वोला, "अपनी विवेचना से जो ठीक समझो वही करना। तव हाँ, मरुत्त को मेरा प्रस्ताव जना देना।"

मरुत्गण और कुछ वोले विना अरण्य की ओर दौड़ने लगे। जव तक वे दीखते रहे, सभी उन लोगों की ओर देखते रहे। यह एक देखने के योग्य घटना थी। शत्रु का दल भागा जा रहा है और इस ओर का कोई व्यक्ति उनकी ओर शस्त्र नहीं फेंक रहा है। इस प्रकार का दृश्य उसके पहले देखने में नहीं आया था।

वृक् माथा झुकाये अव तक खड़ा है। उसके मुखड़े का भाव समझ में नहीं आता है। लेकिन तरुण इन्दर के मुखड़े पर उद्धतता का भाव तिर आया है। उसे भल्ल का यह अद्भुत सिद्धान्त पसन्द नहीं आया है। नारी-लोभी उन तस्करों का वक्षस्थल विदीर्ण करने के लिए उसका हाथ कसमसा रहा है।

भल्ल ने आदेश दिया, "गर्ग, तुम सोम का भण्डार खोल दो। अभी सब उत्सव मनायें।"

उसके वाद वह ऊँचे पत्थर से नीचे उतर आया। वृक् के कंधे पर

हाथ रखा। इतनी देर के बाद उसने अपने युद्ध विजयी पुत्र को प्यार किया।

शूर के पाँवों की पीड़ा बहुत-कुछ कम हो गयी है। अब उसे लँगड़ाकर चलना नहीं पड़ता है। भूख-प्यास से उसका शरीर दुर्बल हो गया है। फिर भी वह क्रमशः नदी के किनारे से दूर हटता जा रहा है। उस किनारे से *खाद्य-पदार्थ भेजने की कोई व्यवस्था न हो पायी है*। उसके पिता नदी में पत्थर क्यों फेंक रहे हैं, इसका कारण उसकी समझ में आ गया है। लेकिन कब तक यह भीषण नदी बाँधी जायेगी? उतने दिन तक वह क्या जीवित रहेगा?

चारों ओर की विशाल शून्यता से उसका सिर चकरा रहा है। इस प्रान्तर में मनुष्य तो दूर की बात, किसी प्रकार का कोई जीव-जन्तु भी नहीं है। यह सचमुच ही बहुत आश्चर्य की बात है। इस प्रकार की उपद्रवहीन भूमि भी कहीं हो सकती है, इतने दिनों तक किसी ने इसकी कल्पना भी नहीं की है। सिर के ऊपर छोटी-मोटी चिड़ियाँ भी विशेष रूप में दिखायी नहीं पड़ती हैं। क्योंकि पहाड़ के ऊपर गिद्ध और चील के खोते हैं। उन पक्षियों के उपद्रव से छोटी चिड़ियाँ इस ओर आने में डरती हैं। केवल वर्ष की दो ऋतुओं में पक्षियों के झुण्ड यहाँ से उड़कर जाते हैं। बाज और चील क्या इसी लोभ से यहाँ घोंसला बनाकर रहते हैं?

शूर निरस्त्र और एकाकी है। यह स्थिति संभवतः उसके लिए इतनी नयी है कि वह क्या करे, समझ नहीं पाता है। तब हाँ, खाद्य-पदार्थ की खोज करनी है, यह बात निश्चिन्त है। उसके शरीर का प्रत्येक स्नायु खाद्य-पदार्थ खोजने के लिए उसे प्रेरित कर रहा है। अब तक नदी के किनारे का बालू खोदने से उसे मात्र कुछेक केकड़े [illegible]

हैं। तव हाँ, अभी मैं विना किसी शर्त्त के तुम्हें मुक्त कर रहा हूँ। जाओ—"

भल्ल ने हाथ का वर्छा उठाकर रास्ता दिखाया। वृक् एवं उसके सहयोद्धागण खड़े हो गये। पराजित दल धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। उन्होंने एक बार भी भल्ल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त न की। उनका मुख-मण्डल अपमान से कठोर दीख रहा था।

वे लोग जव कुछ दूर चले गये तो भल्ल ने पुनः चिल्लाकर कहा, "मरुत्त से कहना कि मैंने उसे भाई कहकर संबोधित किया है।"

उस समय पराजित व्यक्तियों में से एक व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा, "किसी एक युद्ध में जय प्राप्त करने से समस्त युद्धों का समाधान नहीं होता।"

भल्ल मुसकराया और वोला, "अपनी विवेचना से जो ठीक समझो वही करना। तव हाँ, मरुत्त को मेरा प्रस्ताव जना देना।"

मरुत्गण और कुछ बोले विना अरण्य की ओर दौड़ने लगे। जव तक वे दीखते रहे, सभी उन लोगों की ओर देखते रहे। यह एक देखने के योग्य घटना थी। शत्रु का दल भागा जा रहा है और इस ओर का कोई व्यक्ति उनकी ओर शस्त्र नहीं फेंक रहा है। इस प्रकार का दृश्य इसके पहले देखने में नहीं आया था।

वृक् माथा झुकाये अव तक खड़ा है। उसके मुखड़े का भाव समझ में नहीं आता है। लेकिन तरुण इन्दर के मुखड़े पर उद्धतता का भाव तिर आया है। उसे भल्ल का यह अद्‌भुत सिद्धान्त पसन्द नहीं आया है। नारी-लोभी उन तस्करों का वक्षस्थल विदीर्ण करने के लिए उसका हाथ कसमसा रहा है।

भल्ल ने आदेश दिया, "गर्ग, तुम सोम का भण्डार खोल दो। अभी सव उत्सव मनायें।"

उसके वाद वह ऊँचे पत्थर से नीचे उतर आया। वृक् के कंधे पर

हाथ रखा। इतनी देर के बाद उसने अपने युद्ध विजयी पुत्र को प्यार किया।

शूर के पाँवों की पीड़ा बहुत-कुछ कम हो गयी है। अब उसे लँगड़ाकर चलना नहीं पड़ता है। भूख-प्यास से उसका शरीर दुर्बल हो गया है। फिर भी वह क्रमशः नदी के किनारे से दूर हटता जा रहा है। उस किनारे से खाद्य-पदार्थ भेजने की कोई व्यवस्था न हो पायी है। उसके पिता नदी में पत्थर क्यों फेंक रहे हैं, इसका कारण उसकी समझ में आ गया है। लेकिन कब तक यह भीषण नदी बाँधी जायेगी? उतने दिन तक यह क्या जीवित रहेगा?

चारों ओर की विशाल शून्यता से उसका सिर चकरा रहा है। इस प्रान्तर में मनुष्य तो दूर की बात, किसी प्रकार का कोई जीव-जन्तु भी नहीं है। यह सचमुच ही बहुत आश्चर्य की बात है। इस प्रकार की उपद्रवहीन भूमि भी कहीं हो सकती है, इतने दिनों तक किसी ने इसकी कल्पना भी नहीं की है। सिर के ऊपर छोटी-मोटी चिड़ियाँ भी विशेष रूप में दिखायी नहीं पड़ती हैं। क्योंकि पहाड़ के ऊपर गिद्ध और चील के घोंसे हैं। उन पक्षियों के उपद्रव से छोटी चिड़ियाँ इस ओर आने में डरती हैं। केवल वर्ष की दो ऋतुओं में पक्षियों के झुण्ड यहाँ से उड़कर जाते हैं। बाज और चील क्या इसी लोभ से यहाँ घोंसला बनाकर रहते हैं?

शूर निरस्त्र और एकाकी है। यह स्थिति संभवतः उसके लिए इतनी नयी है कि वह क्या करे, समझ नहीं पाता है। तब हाँ, खाद्य-पदार्थ की खोज करनी है, यह बात निश्चिन्त है। उसके शरीर का प्रत्येक स्नायु खाद्य-पदार्थ खोजने के लिए उसे प्रेरित कर रहा है। ... नदी के किनारे का बालू खोदने से उसे मात्र कुछेक ...

इसके अतिरिक्त एक दिन वह एक स्वर्ण गोधिका का दिन-भर पीछा करता रहा था, परन्तु उसे पकड़ नहीं सका।

चलते-चलते वह इस किनारे के घासवन के समीप चला आता है। ठिठककर खड़ा होता है और भय से चारों ओर निहारता है। यहाँ से उन लोगों की उपत्यका दीख नहीं पड़ती है। अब वह अपने कबीले से एकदम अलग पड़ गया है। आकाश के नीचे वह अकेला है। घासवन के समीप पहुँचते ही स्वभाववश उसका शरीर सतर्क हो जाता है, घास-के समीप विपत्ति का होना चिरकाल का नियम रहा है। घासवन के आस-पास हरिण या बकरी होगी ही और उनके लोभ में भेड़िए आयेंगे। इतना जरूर है कि कभी भेड़िए की आवाज सुनायी नहीं पड़ी है।

धीरे-धीरे वह घासवन की ओर बढ़ता है। भीतर से सरसराहट की आवाज आ रही है परन्तु किसी प्रकार की हलचल नहीं है। धरती पर घास के बीज झरते-झरते स्तूपाकार हो गये हैं। नदी पार करने का उपाय होता तो उन लोगों के पशुओं को यहाँ चराया जा सकता था।

थोड़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद शूर की समझ में आता है कि घासवन में कोई बड़ा जन्तु नहीं है। वहाँ असंख्य चूहे और धूसर रंग के छोटे-छोटे खरगोश हैं। शूर के पाँवों का शब्द सुनकर ही वे दौड़ रहे हैं और उसी से सर-सर आवाज हो रही है।

आँखों के सामने मांसल खाद्य पदार्थ देखकर शूर का मन आनन्द से थिरक उठा। वह पागल के नाईं दौड़ लगाकर पकड़ने की चेष्टा करने लगा। लेकिन बहुत देर तक चेष्टा करने पर भी वह उनमें से किसी को भी न पकड़ सका। उसका शरीर थक गया है, अधिक परिश्रम करने की उसमें सामर्थ्य नहीं है। पलक झपकते न झपकते ये छोटे-छोटे प्राणी कहाँ छिप जाते हैं, समझ में नहीं आता।

हाथ में पत्थर के कई टुकड़े लेकर वह एक स्थान में बैठकर हाँफने लगा। कोई खरगोश झाँकता है तो वह उस पर पत्थर का टुकड़ा फेंकता

है। हाथ का निशाना ठीक नहीं बैठता है। ये जीव-जन्तु मानो उसके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। शूर थककर उसी घासवन में सो गया।

नींद में उसे बहुत सारे बुरे स्वप्न दिखायी पड़े। सबके सब मृत्यु के सपने थे। नींद टूटने पर उसका मन और अधिक उदास हो गया। अब उसकी मृत्यु में देर नहीं है। इड़ा को सपने में देवताओं के दर्शन होते हैं, देवतागण उसे रास्ता बताते हैं। शूर पर देवतागण कृपालु नहीं हैं। फिर नदी से किसने उसकी रक्षा की? जल की धारा में बह जाना ही उसके लिए क्या सबसे अच्छा था?

शूर घास के बीजों को हाथ में लिए अनमनेपन के साथ उन्हें घुमा-फिरा रहा था। एक बार बीजों पर उसका ध्यान गया। ये हरदिया बीज पशुओं का बड़ा ही प्रिय आहार है। यहाँ यह बीज पर्याप्त मात्रा में है।

भूख के कारण शूर का मस्तिष्क उसके अधिकार में न रहा। पशुओं के उस आहार को ही मुट्ठी-भर लेकर मुँह में डाल दिया। बहुत कड़े नहीं है, चिबाया जा सकता है किसी-किसी के भीतर कोमल दूध जैसा कोई पदार्थ है। स्वादहीन है परन्तु खाने में उतना बुरा भी नहीं। कई मुट्ठी घास के बीज उसने खा डाले। उसके बाद अचानक उसे नशे जैसा लगा। उसने निश्चय ही कुछ विषाक्त पदार्थ खा लिया है। कै कर उसने थोड़ा-सा भाग उगल दिया। पेट में विचित्र प्रकार का दर्द हो रहा है। ओह, अन्ततः इस अखाद्य पदार्थ को खाकर ही उसकी मृत्यु होगी!

पेट दबाकर वह पुनः धरती पर लेट गया। बच्चे की तरह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। वह यहाँ एकाकी मरने जा रहा है, कोई उसे देख नहीं पायेगा। पिता और कबीले के लोगों को किसी बात की जानकारी नहीं हो पायेगी। उसकी प्रिय सखी लड़ना से भेंट नहीं हो पायेगी। उसके मृत शरीर में कीड़े-मकोड़े अपना घर बनायेंगे, गिद्ध और बाज उसे नोच-नोचकर खायेंगे। हाय, वह अपने कबीले पर कलंक का टीका

गा गया। यह सब सोचकर शूर रोने लगा। उसे अपने आप पर णा हुई।

कुछ देर आँखों से आँसू निकल जाने के बाद उसका शरीर जैसे कुछ हल्का हो गया। और थोड़ी देर बीतने के बाद उसे लगा कि वह अब भी मरा नहीं है। इसके अतिरिक्त घास के बीज खाकर कै करने के बावजूद वह पहले की अपेक्षा कम क्षुधार्त्त है। अब उसे कोई दुविधा या चिन्ता न रही। उसने पुनः कई मुट्ठी घास के बीज मुँह में डाल दिये। अबकी उलटी नहीं हुई। उसके बाद जब वह पुनः सो गया तो उसे कोई बुरा स्वप्न नहीं दिखायी पड़ा।

शूर जिस घासवन के निकट लेटा है, वह जंगली मक्का और बार्ली का एक मिला-जुला खेत है।

दूसरी बार नींद टूटने पर शूर ने स्वयं को बहुत स्वस्थ पाया। भूख की तीव्रता समाप्त हो चुकी है। वह समझ गया कि उसके परिवार और परिजन के सदस्य जब यह सुनेंगे कि उसने बनैले पशुओं के खाद्य पदार्थ घास के बीजों का आहार किया है तो उसे धिक्कारेंगे। उसके पिता ने उससे बराबर यही कहा है कि सम्मान के साथ मृत्यु का वरण करना चाहिए। मृत्यु के सामने आने से कोई मनुष्य हीन हो जाता है या नहीं, यही उसकी सबसे बड़ी परीक्षा है।

उसके एक भाई को जब साँप ने काट लिया था, वह विष की यंत्रणा से नीला पड़ गया था और छटपटा रहा था, तो भल्ल ने कहा था. "पुत्र, मैं अपने हाथ से तुम्हारी छाती पर छुरे का वार कर तुम्हारी यंत्रणा दूर कर सकता हूँ। तुम इसके लिए सहमत हो?" लड़के ने छटपटाना बन्द कर अपलक दृष्टि के पिता की ओर देखते हुए कहा था, "यही कीजिये। तनिक भी देर मत कीजिये।" भल्ल ने जब छुरा उठाया तो उसने एक बार भी पलक नहीं झपकायी। घायल पुत्र की छाती में विद्ध छुरे को बाहर निकाल भल्ल ने पुनः कहा था, "मेरे इस पुत्र का जीवन धन्य क्योंकि उसने मृत्यु के सामने हीनता का अनुभव नहीं किया।"

उस घटना का स्मरण आते ही शूर को लज्जा का बोध हुआ। वह उस सम्मान को रख नहीं सका है। मृत्यु यदि कोई दूसरा रूप धारण कर आती तो वह साहस के साथ अन्त-अन्त तक युद्ध करता और पराजित होने पर बिना पलक झपकाये मृत्यु को वरण कर लेता। लेकिन भूख से लड़ाई लड़ने का कोई उपाय उसे मालूम नहीं है। भूख की तीव्रता बहुत बढ़ जाने पर शरीर का अंग-प्रत्यंग भी जैसे वश में नहीं रहता है। पहले-पहल उसके हाथ ने जब घास का बीज उठाकर मुंह में डाला था तो वह काम क्या उसने अपनी इच्छा से किया था? या उसके जठर के आदेश पर उसके हाथ ने ऐसा काम किया है?

अभक्ष्य का भक्षण करने के कारण उसने घुटने टेककर सूर्यदेव से प्रार्थना की। सूर्य से उसने कहा, "प्रवीणा ने एक दिन कहा था, जब तक जीवित रहने का उपाय रहे तब तक जीवन-धारण की चरम चेष्टा करना ही मानव-धर्म है।" मैंने क्या वही काम नहीं किया है?

तब हां, चाहे जो हो, यह बात अब मल्ल और दूसरे-दूसरे लोगों से कही नहीं जायेगी। शूर अभी नदी की ओर नहीं जायेगा।

शरीर में थोड़ी-सी शक्ति आ जाने के कारण शूर ने पुनः कुछ पत्थर इकट्ठे कर लिये और खरगोश के शिकार में व्यस्त हो गया। कुछ खरगोशों के पीछे दौड़-धूप करने के बाद वह एक का शिकार करने में सफल हो गया। पत्थर के एक धारदार टुकड़े से उसने खरगोश के पेट को फाड़कर उसका रक्त पी लिया। उससे उसका शरीर शान्ति का अनुभव करने लगा। अहाहा, रक्त जैसा स्वादिष्ट कोई पदार्थ नहीं होता। कच्चा मांस खाना वह उतना पसन्द नहीं करता। केवल खरगोश के यकृत को उसने चबा डाला।

बाकी बचे मांस को आग में झुलसाने से अच्छा होगा। पत्थर की खोज में वह और अधिक दूर चला गया। यहां उपयोगी पत्थर नहीं है। उनसे अधिकांश सहज ही टूट जाते हैं। फिर भी वह कुछ टुकड़ों को लिए घासवन में लौट आया। शूर पत्थरों को ठोक-ठोर कर आग पैदा

करने की चेष्टा करने लगा। सेंवार से भरे इन पत्थरों से सहज ही चिनगारी निकलना नहीं चाहती। फिर भी उसकी चेष्टा में कोई कमी न आयी। थोड़ी-सी सूखी घास बटोरकर पत्थर के दो टुकड़ों को एक-दूसरे पर ठोंके जा रहा है।

अन्ततः आग जलाने के प्रयास में वह एक काण्ड ही कर बैठा। सूखी घासों में आग लगाकर उसने खरगोश का चमड़ा उतार कर उसे आग में डाल दिया था। उसके बाद तुरन्त ही मिलने वाले भोजने के आनन्द में वह एक गीत गुनगुनाने लगा था। उसने ध्यान नहीं दिया कि कब घासवन में आग लग गयी। उस आग की लपट पर दृष्टि जाते ही वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ।

पशुपालक परिवार की सन्तान रहने के कारण वह स्वभावतया घासवन की आग की विपत्ति को समझता है। इस प्रकार की उर्वर घास को नष्ट करना भी एक अपराध है। अकेले आग बुझाना कठिन काम है, फिर भी वह चेष्टा करने लगा। घासवन के जिस अंश में तब तक आग नहीं फैली थी, वह दौड़ता हुआ उसी ओर गया। वहाँ की घासों को धरती पर लिटाकर वह उन पर उछलने लगा। अपने शरीर में लिपटे चमड़ को खोलकर वह उससे आग की लपटों को पीटने लगा।

आग की लपटों में जैसे प्राण है। लपटें अपनी जीभ बाहर निकाले शूर की ओर लपकना चाहती हैं। अब वे केवल घासवन को नहीं, शूर को भी लीलना चाहती हैं। शूर ने वीरता के साथ युद्ध किया। साथ ही साथ वह अग्निदेवता को प्रसन्न करने के लिए रटे हुए श्लोकों का भी उच्चारण करता जा रहा है। सौभाग्य की बात है कि पिछले कई दिनों तक लगातार पानी बरसा था और मिट्टी भीगी हुई थी। इसलिए आग को मिट्टी से शक्ति नहीं मिल रही थी। घास का ईंधन समाप्त होते ही आग निस्तेज हो गयी। शूर के हाथ-पाँव कहीं-कहीं जल गये परन्तु उसने आग को शान्त करके ही छोड़ा।

इससे वह यद्यपि बहुत क्लान्त हो गया परन्तु उसे विजय के आनन्द

का अनुभव हुआ। धरती पर बैठ उसने हाथ और पाँवों का उपचार किया। जले हुए अंशों में राख लगा दी। विशेष सघातिक कोई बात नहीं हुई।

उसके बाद उसने राख के ढेर से खरगोश का मांस बाहर निकाला। एक टुकड़ा काटकर उसने मुँह से एक आनन्द सूचक ध्वनि निकाली। वाह, बहुत ही स्वादिष्ट है!

राख के ढेर में उसे एक और वस्तु दिखायी पड़ी। घास के बीज आग में जलकर फट गये हैं। उनके भीतर से सफेद जैसी कोई वस्तु बाहर निकल आयी है। उन्हें तालू में रख तनिक हिलाते-डुलाते ही ऊपर के छिलके उड़ गये। शूर ने दो-चार दाने मुँह में रखकर देखा, अब स्वाद दूसरे ही प्रकार का है पहले की तुलना मे बहुत ही अच्छा। दो-चार और अधजले बीजों को खाने के बाद शूर ने विह्वल नेत्रों से इधर-उधर देखा। वह समझ गया है, किसी वास्तविक नये आविष्कार के बाद अपनी सफलता की बात किसी से नहीं कहनी चाहिए।

वह झट से उठकर खड़ा हो गया। यह बात किसी और को जनाये बिना उसे शान्ति नहीं मिल सकती है। इस अनुभूति को स्वयं तक सीमित नहीं रखा जा सकता है। वह प्रबल वेग से नदी की ओर दौड़ने लगा।

यहाँ से नदी बहुत दूर है। फिर भी वह वहाँ पहुँचे बिना एक क्षण के लिए भी नहीं रुका। बिना सुस्ताये वह पागल की तरह चिल्लाने लगा।

उस समय नदी के तीर पर कोई नहीं था। कुछ देर तक चिल्लाने के बाद इन्दर और कुछ व्यक्ति नीचे आये। दोनों किनारे की बात एक-दूसरे के पास ठीक से नहीं पहुँचती है। इसके अतिरिक्त शूर अत्यधिक उत्तेजना के कारण इतनी शीघ्रता से बात कर रहा है कि अच्छी तरह समझ में नहीं आता है।

इन्दर ने कहा, "तू क्या कह रहा है शूर? ठीक से कह।"

वहुत कठिनाई से थोड़ी देर वाद समझ में आया कि शूर कह रहा है, "मैंने जला हुआ घास का बीज खाया है। तुम लोग भी खाकर देखो। वहुत·· "

इन्दर ने भौंह सिकोड़कर कहा, "जला हुआ घासबीज ! हम लोग क्यों खायें ? हमें क्या पशु का कोई अभाव है ?"

शूर फिर भी वार-वार यही बात कहने लगा। इन्दर ने अपने साथियों से कहा, "वह क्या अंट-संट बक रहा है ! रात में वह अवश्य ही मुँह बाये सोया होगा और उसके मुँह में चाँदनी घुस गयी होगी।"

एक व्यक्ति ने कहा, "छिः शूर ! यह सब बात नहीं कहनी चाहिए। भल्ल सुनेंगे तो क्या सोचेंगे !"

शूर की प्रिय संगिनी लइला इन्दर के निकट खड़ी थी। वह बोली, "वह कह रहा है तो मैं भी घास का बीज जलाकर खाऊँगी और देखूँगी कि कैसा लगता है।"

इन्दर ने व्यंग्य के साथ कहा, "हाँ, वही खाओ। उसके वाद जन्तु की तरह चार पैरों से चलना शुरू करो। तब तुम अच्छी दीखोगी।"

घर्घर शब्द करता हुआ एक विशाल प्रस्तरखंड नीचे की ओर लुढ़क रहा है। भल्ल चिल्लाकर कह रहा है, "हट जाओ, सभी हट जाओ।"

लोग पहले ही हट चुके हैं। पत्थर लुढ़कने के प्रचण्ड शब्द से भय लगता है। प्रस्तरखंड से छोटे-छोटे टुकड़े छिटक रहे हैं। उन टुकड़ों की गति ऐसी है कि देह में लगते ही वे मांस के भीतर घुस जाते हैं।

प्रस्तरखंड नीचे आकर रुक गया। भल्ल भी दौड़ता हुआ नीचे उतर आया। उसके हाथ में एक वृक्ष की बड़ी सी शाखा है। वह उसी शाखा को पत्थर के नीचे रखकर ठेलने लगा। उसका पूरा शरीर स्वेद से लथपथ है, नसें उभर आयी हैं।

भल्ल के शरीर में चाहे जितनी शक्ति हो पर समतल स्थान से पत्थर का उतना बड़ा टुकड़ा ठेलकर हटाना उसके लिए सभव नहीं है। फिर भी वह प्रयास किये जा रहा है। ऊपर से दूसरे-दूसरे लोग उतर कर नीचे आयें, इसकी वह प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा है। और सात-आठ व्यक्तियों ने जब हाथ लगाया तो पत्थर थोड़ा हिला-डुला।

प्रत्येक दिन पत्थर ठेलने का काम युवकों को अच्छा नही लगता। यह एकरस काम है। इतना अवश्य है नदी के पानी का आठ-दस हाथ स्थान पत्थर से पट गया है उन पत्थरों पर पाँव रखकर थोड़ी दूर जाया भी जा सकता है। वृक् को यदि इतनी ही दूर आगे बढ़ने की सुविधा प्राप्त हो जाये तो छोटे-छोटे पशु या अस्त्र वहाँ अनायास ही पहुँचाये जा सकते हैं। लेकिन इसके बाद पानी बहुत गहरा है, उस स्थान को पत्थर फेंक-कर पाटने में कितने दिन लगेंगे? इसी प्रकार कितने शरद व्यतीत करने होंगे? इसके अतिरिक्त अभी भरपूर वर्षा ऋतु नही आयी है। उस समय पानी और बढ़ जायेगा और धारा कहीं इन पत्थरों को भी बहाकर न ले जाये।

भल्ल ने तनिक धमकाने जैसे स्वर में कहा, "और अधिक शक्ति लगाओ। पत्थरों को हमने कुसुम-स्तवक समझा है क्या?"

युवकों ने अपना अप्रसन्न मुख दूसरी ओर घुमा लिया है ताकि भल्ल कहीं देख न ले। यह काम उन्हें कतई अच्छा नही लग रहा। इसमें न तो युद्ध का रोमांच है और न ही पशु-चारण का कौतुक। उन्हें लगता है, भल्ल इस मामले में बहुत ज्यादती कर रहा है। उसने नदी बांधने की जो प्रतिज्ञा की है, उसी की रक्षा करने के लिए वह अभी तक लगा हुआ है अन्यथा उसकी उपयोगिता अब कम हो गयी है।

प्रारंभ में शूर का उद्धार करने के लिए ही उसने यह बात सोची थी। लेकिन अब उसकी जीवन-रक्षा में शंका की कोई बात नहीं है। उसने अपने खाद्य-पदार्थ का संचय कर लिया है। इतने दिनों पर पता चला है कि वासस्थान के रूप में नदी का दूसरा किनारा निरापद है।

शूर वहुधा दीख जाता है अतः उसे लौटा लाने का इतना वड़ा परिश्रम अव तुच्छ प्रतीत होता है।

युवकों का ध्यान इस वात पर गया है कि कुछ दिनों से भल्ल के स्वभाव में वहुत वड़ा परिवर्तन आ गया है। अव कदाचित् ही उसके मुखमण्डल पर हँसी दीख पड़ती है। वह सदैव गंभीर और चिन्ता-निमग्न रहता है। साथ ही साथ उसमें हठ की मात्रा भी अधिक आ गयी है। उसका आदेश यद्यपि अलंघनीय है लेकिन इसके पहले वह प्रत्येक कार्य में और-और लोगों का परामर्श लेता था। अव वह स्वराट् हो गया है।

शत्रुओं के प्रति उसके इस विचित्र व्यवहार का कोई अर्थ भी नहीं निकलता। जो लोग दो पुरखों से शत्रु रहे हैं उन्हीं मरुतों की शक्ति वढ़ाने में वह सहायता कर रहा है। गत वर्ष महामारी के प्रकोप से मरुतों की वहुत वड़ी क्षति हुई है, अव उनकी शक्ति में वहुत ह्रास आ गया है। इस सुयोग से लाभ उठाकर अरण्य पार उनकी उपत्यका पर धावा वोल देना चाहिए था और उन्हें निश्चिह्न कर देना चाहिए था। अपने पीछे शत्रु रखे रहने पर कभी किसी जाति को ध्वंस से छुटकारा मिला है ? भल्ल यह वात न जानता हो, ऐसी वात नहीं।

नारी हरण करने वालों को मुक्त करके भल्ल ने भूल की है। जहां तक स्मरण आता है, इस प्रकार की घटना कभी घटित नहीं हुई थी दूसरी वार भी उसने उसी भूल को दुहराया ? शत्रुओं पर विश्वास करने से फलाफल यही होता है। प्रवीणा ने एक कहानी कही थी। एक अनाहार क्लिष्ट नारी ने एक सिंह पर विश्वास किया। सिंह ने नारी से कहा था, वह नारी के लिए आहार इकट्ठा कर देगा। खाद्य-पदा की खोज में उन लोगों ने वहुत स्थानों का भ्रमण किया। उस व अत्यधिक हिमपात होने के कारण कहीं खाद्य पदार्थ नहीं था। घूमते घूमते अन्त में सिंह भूख से पीड़ित हो उठा। उस समय उसने पंजे रमणी का आलिंगन करते हुए कहा, "अव मैं तुम्हें खाऊँगा।" रम

ने कहा, "यह क्या ? बात तो ऐसी नही थी !" सिंह ने कहा, "इसके बाद भूख से हम दोनों को मरना होगा। अभी मैं तुम्हें खाकर अपने प्राणों की रक्षा करूँगा, यही जीवों का धर्म है। तुम यदि किसी भेड़े या बकरे से विश्वास का सम्बन्ध स्थापित करती तो उस सबंध की रक्षा अभी कर पाती ? यदि मैं तुम्हारे भक्षणयोग्य होता और तुम मुझसे अधिक शक्तिशालिनी होती तो तुम मुझे बहुत पहले ही अपना आहार बना चुकी होती।

प्रवीणा बहुत कुछ जानती है। वह भल्ल को समझाती क्यों नही है ? लेकिन भल्ल उसकी बात क्यों मानने लगा ? कहा जाता है, जिस नारी का चमड़ा सिकुड़ जाता है, मृत्यु के अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति आकर उसे प्यार नही करता।

जो मरुद्दल पहले पराजित हुआ था उन्हें मुक्त करने के बाद भल्ल ने आशा की थी कि उनके दलपति मरुत्त भी बिना युद्ध किये अधीनता स्वीकार कर लेगा। किन्तु मरुत्त साँप की तरह क्रूर है। इसके बाद भी रात के अँधेरे में मरुत्त ने अपना एकदल इस उद्देश्य से भेजा था कि वह छिपकर आक्रमण करेगा। इस बार उन लोगों ने भल्ल के कबीले के तीन व्यक्तियों की हत्या कर डाली है। यहाँ तक कि युद्ध का लोभ दिखाकर कुरु कबीले के वीरदेव को अरण्य के बीच ले गया था। अरण्य में मरुद्गण जल में मकर की भाँति दुर्धर्ष हो उठते हैं। इस बार निश्चिन्त पराजय की बात सोचकर नारियाँ भी उच्च स्वर में विलाप करने लगीं। यहाँ तक कि अल्पभाषियों ने भी कहा था कि सर्वनाश होकर रहेगा। देव मित्रा इड़ा ने कहा था : रात्रि-वेला में युद्ध ! यह तो भयंकर अशुभ का चिह्न है।

वृक्, इन्दर, बलवान और हवि जैसे प्रमुख योद्धाओं के प्राण वीरता के कारण बच गये थे। यह सच है कि भल्ल ने भी पराक्रम के साथ युद्ध किया था। उसने ही वृक् प्रमुख को मरुतों का पीछा करते हुए अरण्य में जाने से मना किया था। वृक् को लोहू की गंध मिलते ही वह पागल

की तरह हो जाता है, इस बार भी वह प्रतिपक्ष के दस व्यक्तियों को पकड़कर ले आया था । उन लोगों की हत्याकर उत्सव मनाने की बात थी, भल्ल ने इस बार भी रोक दिया । कितने ही दिनों से इस उपत्यका में इस तरह का उत्सव नहीं मनाया गया है ।

इस बार भी भल्ल ने शत्रुओं को न केवल मुक्त कर दिया, वरन् रात-भर उन्हें अतिथियों की तरह रखा और भोजन तथा पेय पदार्थ देकर उनका स्वागत-सत्कार किया । हाय-हाय, अवश्य ही दुर्दिन आ रहा है । किसी कबीले के दलपति में कापुरुषता का बीज प्रवेश कर जाता है तो वह कबीला कीड़े-मकोड़े के द्वारा खाये गये वृक्ष की तरह धराशायी हो जाता है ।

बन्दियों को मुक्त किये जाने पर इन्दर ने भल्ल की अनुपस्थिति में विक्षोभ प्रकट किया था । बहुतेरे लोग इन्दर के पक्ष में थे । परन्तु वृक ने इसके कारण इन्दर की भर्त्सना की थी । वह बड़ा ही पितृभक्त है ।

वृक जब किशोर था, भेड़ियों का एक झुण्ड उसे खींचकर जंगल ले गया था । उस समय सभी उसके जीवन की आशा छोड़ बैठे थे । तब भल्ल का पिता कबीले का सरदार था । उसने खोज का काम बन्द कर दिया था । लेकिन भल्ल अकेले अपने पुत्र की खोज में गया था । अपने जीवन को दांव पर लगाकर वह अन्ततः वृक को लौटाकर ले आया था । वृक की गरदन टूट गयी थी । भेड़ियों के निकट से किसी प्रकार भागकर वह एक नाली में लुढ़क कर गिर पड़ा था । भेड़िए नाले में उतर नहीं सके थे फिर भी उसे घेर कर ऊपर खड़े थे । भल्ल वहां जाकर तत्क्षण भेड़ियों पर आक्रमण न करता तो वृक किसी भी प्रकार जीवित नहीं लौटता । घायल वृक को कंधे पर लाद जब भल्ल लौटकर आया था तो उसका रक्तस्नात शरीर सूर्य की भांति देदीप्यमान लग रहा था ।

वस्तुतः इस कबीले में भल्ल जैसा पुत्र-स्नेह किसी में नहीं है । क्रोध वश पिता के द्वारा पुत्र की हत्या करना यहां एक साधारण घटना है । बीमार पुत्र की शीघ्र ही मृत्यु हो जाये इसके लिए उसे धूप में लिटाकर

रखने की भी प्रथा है। मल्ल ऐसा काम कभी नहीं करेगा। वह अपार स्नेहशील है। वृक की दृष्टि में मल्ल उसका केवल पिता नहीं, मनुष्य की दृष्टि से भी उसका वही आदर्श है।

वृक यह बात कभी भूल नहीं सकता। पिता के आदेश का उल्लंघन करना तो दूर की बात, उसने अपने आधिपत्य-विस्तार की बात भी कभी नहीं सोची है। वृक जैसा योद्धा पाना भी किसी सर्दार के लिए सौभाग्य की बात है।

उन दसों मरुतों का भोजन और पेय पदार्थ से स्वागत करते हुए मल्ल ने कहा था, "मैं इस बार भी तुम्हें मुक्त कर दूँगा। मरुत के हृदय में परिवर्तन लाने के निमित्त मैं उसे सुयोग प्रदान करना चाहता हूँ। मरुत से कहना, हम समवेत रूप में किरातों से युद्ध करने के लिए तैयार होना चाहते हैं। इस बीच मैं नदी को बाँधने का प्रयास कर रहा हूँ। नदी पार कर यदि मैं सुफला भूमि में पहुँच सका तो उसका भी अंश तुम लोगों को देने के लिए तैयार हूँ।"

बन्दियों में से केवल एक व्यक्ति ने भोजन या पेय पदार्थ स्वीकार नहीं किया था। वह मरुत का छोटा भाई मामह है। वह विरली दल का महाशक्तिशाली वीर है, प्रायः वृक के ही जैसा। लेकिन वृक की तरह उसमें क्षिप्रता नहीं है, यद्यपि शारीरिक शक्ति में उससे दुगुना है। उसे देखने से लगता है, जैसे तीन मनुष्यों को एक साथ मिलाकर एक मनुष्य बनाया गया हो। वह चलता है तो धरती पर धम-धम शब्द होता है। वृक ने उसकी श्वास-नली के पास बर्छा लगाकर उसे बन्दी बनाया था। इसी मामह की हत्या कर दी जाती तो मरुतों की आधी शक्ति कम हो जाती। मल्ल ने उसको भी छोड़ दिया। मरुत क्या यह भी समझ नहीं पा रहा है कि मल्ल बार-बार उन लोगों की शक्ति की परीक्षा करने के लिए अपना दल भेज रहा है?

उस दिन रात के समय [illegible] ने आकर मल्ल से कहा था, "मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

की तरह हो जाता है, इस बार भी वह प्रतिपक्ष के दस व्यक्तियों को पकड़कर ले आया था। उन लोगों की हत्याकर उत्सव मनाने की बात थी, भल्ल ने इस वार भी रोक दिया। कितने ही दिनों से इस उपत्यका में इस तरह का उत्सव नहीं मनाया गया है।

इस वार भी भल्ल ने शत्रुओं को न केवल मुक्त कर दिया, वरन् रात-भर उन्हें अतिथियों की तरह रखा और भोजन तथा पेय पदार्थ देकर उनका स्वागत-सत्कार किया। हाय-हाय, अवश्य ही दुर्दिन आ रहा है। किसी कवीले के दलपति में कापुरुषता का वीज प्रवेश कर जाता है तो वह कबीला कीड़े-मकोड़े के द्वारा खाये गये वृक्ष की तरह धराशायी हो जाता है।

वन्दियों को मुक्त किये जाने पर इन्दर ने भल्ल की अनुपस्थिति में विक्षोभ प्रकट किया था। बहुतेरे लोग इन्दर के पक्ष में थे। परन्तु वृक् ने इसके कारण इन्दर की भर्त्सना की थी। वह बड़ा ही पितृभक्त है।

वृक् जब किशोर था, भेड़ियों का एक झुण्ड उसे खींचकर जंगल ले गया था। उस समय सभो उसके जीवन की आशा छोड़ वैठे थे। तब भल्ल का पिता कवीले का सरदार था। उसने खोज का काम बन्द कर दिया था। लेकिन भल्ल अकेले अपने पुत्र की खोज में गया था। अपने जीवन को दाँव पर लगाकर वह अन्ततः वृक् को लौटाकर ले आया था। वृक् की गरदन टूट गयी थी। भेड़ियों के निकट से किसी प्रकार भागकर वह एक नाली में लुढ़क कर गिर पड़ा था। भेड़िए नाले में उतर नहीं सके थे फिर भी उसे घेर कर ऊपर खड़े थे। भल्ल वहाँ जाकर तत्क्षण भेड़ियों पर आक्रमण न करता तो वृक् किसी भी प्रकार जीवित नहीं लौटता। घायल वृक् को कंधे पर लाद जब भल्ल लौटकर आया था तो उसका रक्तस्नात शरीर सूर्य की भाँति देदीप्यमान लग रहा था।

वस्तुतः इस कवीले में भल्ल जैसा पुत्र-स्नेह किसी में नहीं है। क्रोध वश पिता के द्वारा पुत्र की हत्या करना यहाँ एक साधारण घटना है। वीमार पुत्र की शीघ्र ही मृत्यु हो जाये इसके लिए उसे धूप में लिटाकर

रखने की भी प्रथा है। भल्ल ऐसा काम कभी नहीं करेगा। वह अपार स्नेहशील है। वृक् की दृष्टि में भल्ल उसका केवल पिता नहीं, मनुष्य की दृष्टि से भी उसका वही आदर्श है।

वृक् यह बात कभी भूल नहीं सकता। पिता के आदेश का उल्लंघन करना तो दूर की बात, उसने अपने आधिपत्य-विस्तार की बात भी कभी नहीं सोची है। वृक् जैसा योद्धा पाना भी किसी कबीले के लिए सौभाग्य की बात है।

उन दसों मरुत्तों का भोजन और पेय पदार्थ से स्वागत करते हुए भल्ल ने कहा था, "मैं इस बार भी तुम्हें मुक्त कर दूँगा। मरुत्त के हृदय में परिवर्तन लाने के निमित्त मैं उसे सुयोग प्रदान करना चाहता हूँ। मरुत्त से कहना, हम समवेत रूप में किरातों से युद्ध करने के लिए तैयार होना चाहते हैं। इस बीच मैं नदी को बाँधने का प्रयास कर रहा हूँ। नदी पार कर यदि मैं सुफला भूमि में पहुँच सका तो उसका भी अंश तुम लोगों को देने के लिए तैयार हूँ।"

बन्दियों में से केवल एक व्यक्ति ने भोजन या पेय पदार्थ स्वीकार नहीं किया था। वह मरुत्त का छोटा भाई भामह है। वह विपक्षी दल का महाशक्तिशाली वीर है, प्रायः वृक् के ही जैसा। लेकिन वृक् की तरह उसमें क्षिप्रता नहीं है, यद्यपि शारीरिक शक्ति में उससे दुगुना है। उसे देखने से लगता है, जैसे तीन मनुष्यों को एक साथ मिलाकर एक मनुष्य बनाया गया हो। वह चलता है तो धरती पर धम-धम शब्द होता है। वृक् ने उसकी श्वास-नली के पास बर्छा रखकर उसे बन्दी बनाया था। उसी भामह की हत्या कर दी जाती तो मरुत्तों की आधी शक्ति कम हो जाती। भल्ल ने उसको भी छोड़ दिया। भल्ल क्या यह भी समझ नहीं पा रहा है कि मरुत्त बार-बार इन लोगों की शक्ति की परीक्षा करने के लिए अपना दल भेज रहा है?

उस दिन रात के समय रा ने आकर भल्ल से कहा था, "मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

सभी उत्कंठित हो उठे थे। रा साधारणतया किसी से बातचीत नहीं करती, वह अपने आपमें डूबी रहती है। वह क्या प्रार्थना करना चाहती है?

दसों वन्दी योद्धाओं के पैर मजबूत चमड़े से वँधे हैं। उनके भोजन के लिए उनके सामने अच्छी तरह पका मांस रखकर उनके हाथ का वंधन खोल दिया गया है। इस दल के वीर और रमणियाँ उन्हें घेरकर गोलाकार वैठे हैं। उनके वीच रा आकर खड़ी हुई। उसके वाल विखरे हैं, आँखों से नीले रंग का प्रकाश निकल रहा है।

उसने भल्ल से कहा, "आप और-और वन्दियों को लेकर चाहे जो करें लेकिन इस वन्दी को मुझे दे दें।"

रा ने उँगली से भामह की ओर इशारा किया। भल्ल ने विस्मय के साथ कहा था, "तुम उसे लेकर क्या करोगी?"

रा ने कहा था, "मैं उसे लेकर खेलूँगी।"

भल्ल ने आश्चर्य में आकर कहा था, "रा, तुम्हारा खेल का यह शौक किस तरह का है? दूसरे कवीले के वलशाली पुरुष को लेकर खेलना खतरे से खाली नहीं है। तुम हम लोगों में से किसी एक को चुन-कर अपने खेल का साथी वना लो। तुमसे खेलने का सुयोग जिस पुरुष को मिलेगा, वह अपने को धन्य मानेगा।"

तनिक हँसकर उसने कहा था, "यहाँ तक कि मैं भी।"

रा हँसी नहीं। वोली, "मैं उस प्रकार के खेल की वात नहीं कर रही हूँ। मैं उसे एकान्त में ले जाकर पूछूँगी कि उन लोगों ने ऋभु को ले जाकर क्या किया। यदि हत्या की है तो कैसे की है, मेरे प्रिय को कितनी यातना दी है?"

भल्ल ने रा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "यह व्यर्थ की चेष्टा है। कभी पिछले कार्य की चर्चा मत करो। इस प्रकार की कोई रीति नहीं है। इससे अन्तर की कालिमा प्रकट होती है।"

रा ने दृढ़ता के साथ कहा, "उसे कहना ही होगा। मैं उसे कहने को विवश करूँगी।"

"तुम कर नहीं पाओगी। शत्रु का भी अनादर नहीं करना चाहिए।"

"तो फिर मैं छुरे से उसका पेट फाड़ डालूँगी। उसकी छाती से रक्त की धारा निकलेगी, यंत्रणा से वह छटपटायेगा मैं इसे देखूँगी। मुझे यह खेल खेलने दीजिये।"

भल्ल ने रा को अपनी ओर आकर्षित कर उसके माथे को सहलाते हुए कहा, "शान्त होओ रा, शान्त होओ।"

रा ने भल्ल से स्वयं को छुड़ाकर कहा, "मैं अब शान्त नहीं रह पा रही हूँ। उसे देखकर मेरे लिए शान्त रहना संभव नहीं है। आपको क्या स्मरण नहीं कि ऋभु का जब अपहरण किया गया था तो इसी व्यक्ति ने उस दल का नेतृत्व किया था?"

रा ने भामह की ओर जलती दृष्टि से देखा। भामह सिर झुकाये क्षुद्ध निश्वास ले रहा है। मांस के पात्र को उसने अपने हाथ से हटाकर दूर कर दिया।

भल्ल ने उदासीनता के साथ कहा, "इसके पहले की लड़ाई में हम-लोगों ने भी उन लोगों के बहुत से मनुष्यों की हत्या की है, उन लोगों ने भी हम लोगों के वीरों को मारा है। हत्या के बदले हत्या करने से कुछ भी लौटकर नहीं आता। रा, तुम अपने क्रोध और घृणा को शान्त करो। पुरानी बातों को भूल जाओ। शत्रुओं को क्षमा करना सीखो।"

"मैं उसे कभी क्षमा नहीं करूँगी।"

"वीरों के लिए युद्ध करना मात्र एक कर्त्तव्य है। युद्ध कबीले के स्वार्थ के लिए किया जाता है। इसके लिए व्यक्ति विशेष को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।"

"मैं इतनी बड़ी-बड़ी बातें नहीं समझती। मैंने आपसे जो [illegible] की है आप उसे पूरा नहीं कीजिएगा?"

"रा, तुम मेरी प्रियपात्री हो। लेकिन मैं तुम्हारी इस आशा

माँग को पूरा नहीं कर सकूँगा। भामह को वन्दी वनाने के बाद यदि छोड़ देता हूँ तो मरुत्त की भी समझ में आयेगा कि मैं इस रक्त की धारा वहाने वाले संग्राम को रोकना चाहता हूँ।"

रा अव विना एक शब्द बोले उस स्थान से चली गयी। वहाँ इकट्ठे व्यक्तियों में से अनेकों को रा का यह अनुरोध अन्यायपूर्ण प्रतीत नहीं हुआ। ऋभु की स्मृतियों को वहन करती रा स्वयं को समस्त आनन्द और भोग से परे रखे हुई है। इस उपाय से हो सकता था, वह स्वाभाविक स्थिति में आ जाती। लेकिन भल्ल ने ऐसा होने नहीं दिया।

दूसरे दिन सवेरे भल्ल ने स्वयं वन्दियों को वहाँ से विदा कर दिया। मरुत्त के प्रति मित्रता का भाव स्थापित करने की पुनः घोषणा की। उसके मुखमण्डल पर तनिक भी अविश्वास का चिह्न न था। विना अस्त्र के मरुत्त जैस दुर्धर्ष प्रतिपक्ष को वह अपने वश में करना चाहता है। हे देवगण, भल्ल को सुमति दो।

पत्थर ठेलने का काम अव भी चल रहा है। उस विशाल प्रस्तरखंड को वड़ी कठिनाई से नदी में गिराया गया। वहुत दूर तक पानी छिटक कर आता रहा। पहले फेंके गये पत्थरों के ऊपर से पत्थर ढोकर लाना ही सवसे कठिन काम है। दोनों ओर कम जगह है, अचानक पाँव फिसल कर पानी में गिरने की संभावना वनी रहती है। इस बीच दो व्यक्ति गिर चुके हैं। भाग्य की वात यही है कि गिरने पर इन पत्थरों को पकड़-कर पानी की धारा के खिचाव से प्राणों की रक्षा की जा सकती है। एक यही अच्छा फलाफल निकला है कि इस असमाप्त पत्थर के सेतु को पकड़कर अव थोड़ी दूर पानी में जाया जा सकता है। कल यहाँ वहुत सी मछलियाँ पकड़ी गयी थीं।

भल्ल ने सवसे कहा, "अव तुम लोग विश्राम कर सकते हो। पानी पर जव इस शीशम के वृक्ष की छाया पड़ेगी उस समय मैं तुम लोगों को पुनः वुलाऊँगा।"

सभी कोलाहल करते हुए उपत्यका की ओर चले गये। मांस पकाने की गंध तिरती हुई आ रही है। इतने परिश्रम के बाद भूख भी कसकर लगी है।

मल्ल वहां अकेला रह गया। पत्थर के ऊपर से चलते हुए पानी के किनारे आया और झुककर खड़ा हो गया। गर्व से उसकी छाती तन गयी है। इसके पहले कोई भी इस तरह तेजस्विनी नदी के ऊपर आकर खड़ा हो सका है? इसी तरह की बात प्रवीणा भी नहीं बता पायेगी। किसी न किसी दिन वह इस नदी को पार करेगा ही, चाहे समय कितना भी क्यों न लगे। उस समय लोगों को इतने दिनों और इतने परिश्रम की सार्थकता का अनुभव होगा।

नदी के पार मल्ल को अपना कनिष्ठ पुत्र शूर दिखायी नहीं पड़ा। शूर अब अपना अधिकांश समय घासवन में बिताता है। उसे नये खाद्य-पदार्थ का पता चल गया है। मल्ल ने स्वयं भी उस खाद्य-पदार्थ की परीक्षा करके देखा है। क्षुधा बहुत अच्छी तरह शान्त हो जाती है। आजकल फल-मूल दुष्प्राप्य हो गये हैं। मस्तों के कारण गहरे वन प्रदेश में प्रवेश नहीं किया जा सकता। पाले गये पशुओं पर ही निर्भर करना पड़ता है। लेकिन सरदियों में जब अधिक हिमपात हो जाता है या पशुओं में महामारी फैल जाती है तो कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मरुत का कबीला अभी कठिनाइयों का सामना कर रहा है।

विरश के योद्धाओं की हत्या करने के बदले मल्ल ने उन्हें छोड़ दिया है, इसलिए इस उपत्यका के योद्धागण आश्चर्य चकित और क्षुब्ध हैं। मल्ल यह समझता है। लेकिन कभी-न-कभी मल्ल का उद्देश्य उन लोगों की समझ में आ जायेगा।

इस अरण्य के पीछे जो उपत्यका है, मल्ल का पिता वहां से किसी दिन अपने अनुयायी कबीले को लेकर यहां चला आया था। वहां मनुष्य के व्यवहार में लाये जाने वाले उपकरणों में कमी आ रही थी और

इसके फलस्वरूप गृह युद्ध अनिवार्य हो उठा था। इस उपत्यका में भी खाद्य पदार्थ कम हो जायेगा तो वैसी ही स्थिति आ जायेगी। उसके पहले ही उसे नयी भूमि की खोज में जाना है आगे बढ़ना ही मनुष्य की नियति है। नियति के विधान से ही शूर नदी के उस पार चला गया था, इसीलिए नदी के पार की बात भल्ल के ध्यान में आयी थी। यही तो एकमात्र रास्ता है। एक बार यदि उस पार जा सके तो उसके बाद पहाड़ पारकर सूर्योदय के देश में जाया जा सकता है। नदी के इस ओर से पहाड़ की ऊँचाई पर जाने का कोई उपाय नहीं है, रणदुर्मद किरातों से शक्ति की परीक्षा करने के पूर्व कई बार पराजित होकर उसे पीछे हटना पड़ा है। दक्षिण दिशा में जल-प्रपात और दुर्गम अंचल हैं।

अभी पीछे अरण्य की ओर लौटकर मरुतों से युद्ध करने की अपेक्षा नदी पारकर नये देश में जाना ही सबसे अधिक सुगम और बुद्धिमानी का काम है। पीछे की ओर लौटकर जाने से व्यर्थ ही समय और मनुष्य की क्षति होगी। बल्कि उनकी मित्रता और सहयोग प्राप्त हो जाये तो नदी बाँधने का कार्य शीघ्र ही हो जा सकता है। और यदि प्राप्त न हो तो कुछ दिनों तक इसी प्रकार उन्हें रोका जा सकता है। मरुत्‌गण नदी पार करने का साहस नहीं कर पायेंगे।

इसके अतिरिक्त यह बात भी सही है कि भल्ल अब निरर्थक मृत्यु का पक्षपाती नहीं है। मृत्यु कितने ही छद्मवेश धारण कर सकती है। वह उसका निमित्त क्यों होने जाये? मरुत्त अपने कबीले की नियति से यदि सुख से रह सकता है, तो रहे। वह अपने दल-बल के साथ दूसरी भूमि में चला जायेगा।

भल्ल के शरीर का स्वेदकण सूख गया है। नदी से अँजुरी में पानी भरकर उसने अपने शरीर पर छींटा मारा। अहा, शरीर शीतल हो गया!

भल्ल ने अपने हाथों को माथे के ऊपर दोनों ओर फैलाया। इतने श्रम के बाद भी वह स्वयं को परिश्रान्त अनुभव नहीं कर रहा है। शरीर

में अपार शक्ति है। रात में गहरी नींद आती है। फिर भी इड़ा ने उस दिन क्यों कहा था कि उसका अन्तिम समय निकट आ गया है ?

इस बात का स्मरण आते ही छाती में थोड़ी पीड़ा का अनुभव होने लगता है। वायु के प्रति ममता जगने लगती है। मृत्यु तो निर्धारित है, भल्ल मृत्यु से नहीं डरता। लेकिन उसका कार्य क्या पूरा नहीं हो पायेगा ? इस नदी की तीव्रता कम करने की उसने जो शपथ खायी थी, उसको वह पूर्ण नहीं कर पायेगा ? पूर्ण करनी ही है। उसके शरीर या मन में थोड़ी भी दुर्बलता नहीं है, फिर भी मृत्यु उसका निर्वाचन क्यों कर रही है ? इड़ा से कहीं भूल तो नहीं हो गयी ? इड़ा से कहना होगा, वह पुनः गणना करके देखे।

भल्ल इड़ा से मिलने की बात सोचकर लौटने जा ही रहा था कि तभी द्राखमा को नीचे उतरते देखा। भल्ल उसी पत्थर पर खड़ा हो प्रतीक्षा करने लगा।

द्राखमा ने आकर तनिक झिड़की भरे स्वर में कहा, "तुम्हें क्या भूख-प्यास नहीं लगती ? भेड़े का मांस ठण्डा हो रहा है।"

भल्ल ने अपने आसन्न मृत्यु बोध की बात द्राखमा को नहीं बतायी थी। उसकी संतान की जननी यह सुनकर व्याकुल हो उठेगी। वह इड़ा को एकदम पसन्द नहीं करती।

भल्ल ने कहा, "यहाँ आओ। पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखती जाओ।"

द्राखमा बोली, "यह क्या कोई प्रतिबिंब देखने का समय है ?"

भल्ल ने आगे बढ़कर द्राखमा का हाथ थाम लिया और उसे पत्थर पर ले गया। मानों वह अपनी संगिनी को अपनी कीर्ति दिखा रहा है। उसने कहा, "प्रवीणा ने कहा था, हम लोग सूर्योदय के देश में कभी नहीं जा सकेंगे। लेकिन देखना, एक दिन मैं तुम्हें निश्चय ही वहाँ ले जाऊँगा।"

द्राखमा ने कहा, "वहाँ जाकर क्या होगा ?"

"नये देश पर जयलाभ करने से आनन्द क्या नहीं मिलता ?"

"तुम बच्चों से बहुत परिश्रम कराते हो।"

"जिस दिन से वे नदी के आर-पार जाने लगेंगे, उस दिन से वे स्वेच्छा से मेरा जय जयकार करेंगे।"

द्राखमा के कंधे पर हाथ रख भल्ल पानी की ओर झुका। स्वच्छ, अमलिन जल। धारा का वेग पत्थर से टकरा कर उज्ज्वल फेन की रचना कर रहा है। पानी का अपना कोई रंग नहीं होता। लेकिन जहाँ भी पानी को किसी वस्तु से बाधा पहुँचती है, उसका रंग उजला हो जाता है। पत्थर की दायीं ओर पानी बहुत-कुछ शान्त है, वहाँ कुछ मछलियाँ घूम-फिर रही हैं। उनकी गति चकित और स्वच्छन्द है। दोनों झुककर मछलियों का खेल देखने लगे। पानी में दोनों का प्रतिबिंब उभर आया है। अपना प्रतिबिंब देखकर उसे सहसा स्मरण हो आया कि सुरंग की दीवार पर इड़ा ने उसकी जो प्रतिच्छवि आँकी थी, वह अभी पूरी नहीं हुई है।

आश्चर्य है अपनी प्रतिच्छवि को अमर रखने के लिए अभी भल्ल के मन में प्रलोभन जग रहा है।

गर्ग ने कुछ दिन पहले पत्थर की दरार में मधुमक्खी का एक छत्ता देखा था, आज इन्दर को साथ ले वह उसे तोड़ने जा रहा है इस मधुमक्खी के छत्ते की बात उसने किसी से नहीं कही है।

गर्ग के हाथ में एक गोलाकार मृत्तिका पात्र है। उसे बजाते हुए वह एक गीत गा रहा है। गर्ग का गला बड़ा ही मधुर है। इन्दर ध्यान लगाकर उसका गीत सुन रहा है। सारी बात उसकी समझ में नहीं आ रही है। बीच में ही उसका गाना रोककर उसने कहा, "तुमने जो कहा, 'हमारे पिता द्युलोक में मधु हों'—इसका अर्थ क्या है ?"

गर्ग ने हँसकर कहा, "नहीं समझे ? मैं फिर गा रहा हूँ, सुनो :"

जो व्यक्ति सत्य की कामना करता है।
उसके लिए वायु मधु-वर्षण करे
नदी समूह मधु का वहन करे
ओषधि समूह हमारे लिए मधु बनें
रात मधु हो
उषा समूह मधु हो
और हमारे पिता द्युलोक में मधु हों···

इन्दर ने कहा, "फिर भी ठीक-ठीक समझ नहीं सका। हम लोगों के पिता द्युलोक में कैसे होंगे ?"

गर्ग बोला, "भाई इन्दर, तुम्हारी आसक्ति केवल युद्ध और विग्रह के प्रति है। काव्य-चर्चा की ओर तनिक भी ध्यान नहीं जाता। काव्य क्या समझाया जा सकता है ? स्वयं समझना पड़ता है।"

"मैं वह सब नहीं जानता। तुम यदि कुछ कहते हो तो उसका कुछ-कुछ न कुछ अर्थ अवश्य ही होना चाहिए।"

"सब बात का अक्षरगत अर्थ नहीं होता। संगीत का जन्म मन के आवेग से होता है। मन में जो आता है वही कहा जाता है। मान लो, यहाँ पिता का अर्थ है पितृ स्वरूप।"

"तुम देवलोक के संबंध में बहुत ज्यादती करते हो। तुम्हारे प्रत्येक गीत में देवलोक की ही बात रहती है।"

"वाह, देवताओं ने ही तो हमारी सृष्टि की है।"

"और देवताओं की सृष्टि किसने की है ?"

"इसके माने ?"

"देवताओं ने यदि हम लोगों की सृष्टि की है तो किसी दूसरे ने निश्चय ही उन लोगों की सृष्टि की है अन्यथा वे कहाँ से आये ?"

गर्ग ने आहत स्वर में कहा, "छिः इन्दर, इस प्रकार की बात नहीं

करनी चाहिए। देवताओं के संबंध में किसी प्रकार का प्रश्न ठीक नहीं होता।"

इन्दर ने कौतुकपूर्ण हास्य के साथ कहा, "क्यों, देवता ऐसी बात सुनेंगे तो विगड़ जायेंगे ? लेकिन वे मेरी बात कैसे सुन लेंगे ?"

गर्ग ने कहा, "वे सब कुछ देख-सुन सकते हैं।"

"तो फिर वे दिखायी क्यों नहीं पड़ते ?"

"कौन कहता है कि दिखायी नहीं पड़ते ? यह जो सूर्य की किरण है, चाँदनी की मूर्च्छना, शान्ति वहन करने वाला पवन, वृक्ष और लता— इन सबों में देवता का प्रकाश है। हमें वे ही सुख प्रदान करते हैं।"

"मैं यह सब नहीं समझता। यही समझता हूँ कि मेरा निजी सुख और कबीले का सुख हमीं लोगों के हाथ में है। जिस प्रकार तुम्हारा यह संगीत मुझे सुख देता है।"

"मेरे इस संगीत का कौन-सा मूल्य है ? तुम्हारा पराक्रम दिन-दिन बढ़ रहा है, मुझे इसका पता है। तुम्हीं एक दिन हम लोगों के लिए नये नये सुख ले आओगे।"

"देवता और मनुष्य में कौन-सा अन्तर है ?"

"मनुष्य मरणशील है, देवता अमर।"

"मैं भी अमर हूँगा। मनुष्य की कीर्ति ही अमर होती है।"

"इन्दर, तुममें अहंकार की मात्रा अधिक है। तुम्हारा यह अहं तुम्हारे बहुत सारे गुणों को ढँक देता है।"

"मैं अहं के अतिरिक्त और किसी को कुछ नहीं समझता। मैं ही अपनी नियति का प्रभु हूँ। जो सब देवता आँखों से दिखायी नहीं पड़ते, मैं उनके बारे में नहीं सोचता।"

"तुम जो कुछ आँखों से देखते हो, उनका अर्थ तुम्हारी समझ में आ जाता है ?"

"उसी प्रकार का प्रयास करता हूँ।"

"देखें, तुम कितना आगे बढ़ पाते हो।"

"जानते हो, मुझे क्या इच्छा होती है ? धनुष और वाण लेकर आकाश को संयत करूँ। जब इच्छा होगी पानी वरसेगा और जब इच्छा नहीं होगी पानी नही वरसेगा—यह मुझे असह्य लगता है। मैं यदि ऐसा कुछ करूँगा तो तुम्हारे देवतागण क्या रुष्ट हो जायेंगे ?"

"देवतागण रुष्ट होंगे या नही, इसकी जानकारी मुझे नहीं है। तब हाँ, इतना अवश्य लगता है कि कोई वस्तु तुम्हारी शक्ति के परे नहीं है। तुम किसी भी वस्तु की चाह तीव्रता से कर सकते हो।"

"खैर, वह बात रहे। मधु के सम्बन्ध में तुम्हारा यह गीत बहुत ही अच्छा है। एक बार और गाओ न।"

"मैं तुम्हारे बारे में एक गीत बनाऊँ ?"

"नही-नहीं, मधु-सम्बन्धी यही गीत गाओ। इसके बाद दो-चार मधुमक्खियाँ डंक भी मारेंगी तो उतनी पीड़ा नही होगी।"

दोनों मित्र इसी प्रकार गीत गाते और गपशप करते पहाड़ की उस दरार के पास पहुँचे। मधुमक्खी का छत्ता बहुत बड़ा है। छत्ता बनाने के लिए मधुमक्खियों ने निबिड़ एकान्त स्थान का चयन किया है— लेकिन वहाँ भी मनुष्य की दृष्टि पहुँच जाती है।

आने के समय ही इन्दर ने वृक्ष की एक सूखी डाल तोड़ ली है। अभी उसके सिर पर ढेर सारे पत्ते हैं। उसने कमर में खुँसे चकमक पत्थर के टुकड़ों को वाहर निकालकर उन्हें रगड़ा और आग जलायी। उसके वाद जलती हुई मशाल ले उसे बहुत नीचे से मधुमक्खी के छत्ते की ओर वढ़ा देता है। आग की आँच से मधुमक्खियों के झुण्ड बाहर निकल आते हैं। उनका स्वभाव पहले ऊपर की ओर उड़ना है। इस-लिए नीचे का यह स्थान मिल जाने के कारण इन्दर और गर्ग को बहुत सुविधा प्राप्त हुई है।

वे पत्थर की ओट में सरक आते है और मशाल को उसी ओर वढाये रखते हैं। मधुमक्खियों को उनके ठहरने के स्थान का पता चल जाता है लेकिन झपटने पर भी आग के कारण वे निकट नही पहुँच पाती हैं।

...धुमक्खियाँ जब छत्ते में लौट कर जाती हैं तो इन्दर मशाल से पुनः ...क बार उसमें धक्का मारता है। इन्दर की तरह इतनी शीघ्रता से ...ोई चल-फिर नहीं सकता।

एक पहर तक इस प्रकार युद्ध चलता रहता है। मनुष्य के थकने ...के पहले ही मधुमक्खियाँ थक जाती हैं। या उनकी समझ में आ जाता है कि अब यह स्थान उनके हाथ में न रहा। बची हुई मक्खियाँ मनुष्य ...जित किसी स्थान की खोज में उड़कर चली जाती हैं।

गर्ग पूरे छत्ते को काटकर ले आये कि इसके पहले ही इन्दर ने उसमें एक छेद कर दिया। वह धीरज नहीं रख पा रहा है। वह टटके मधु का आकंठ पान करता है। मधु लगने से उसकी दाढ़ी चिपचिपी हो जाती है, फिर भी वह रुकने का नाम नहीं लेता।

गर्ग ने कहा, "अरे ठहरो, ठहरो! बिना सबको हिस्सा दिये तुम चट किये जा रहे हो।"

इन्दर बोला, "क्या करूँ, तुमने मधु का गीत गाकर मुझे पहले ही उत्तेजित कर दिया है।"

गर्ग ने हँसते हुए कहा, "हाय रे भाग्य! तुम्हारी समझ में नहीं आया! मेरा यह गीत कतई मधु के सम्बन्ध में नहीं है। यह तो सुन्दर की प्रार्थना है।"

"लो, यह रहा! कवि होने पर भी तुम यह नहीं समझते कि मधु और नारी—इन दो को कभी सबके बीच बराबर-बराबर बाँटा नहीं जा सकता। आजकल जिन खास चीजों को सभी खाते हैं, उनका भले ही बराबर-बराबर बँटवारा किया जा सकता है।

इससे बचना मुश्किल है—गर्ग ने इसी प्रकार की मुख-मुद्रा बनायी। छत्ते से थोड़ा-थोड़ा मधु टपक रहा था, उसे वह मृत्तिका-पात्र में रखने लगा।

छत्ते में अब भी कुछ शिशु मधुमक्खियाँ हैं, कुछेक जली हुई मधुमक्खियाँ चिपकी हुई हैं। इन्दर उन्हें निकालकर बाहर फेंकने लगा

और इसके कारण उसके हाथ में जो मधु लग जाता है उसे भी वह चाटता जा रहा है।

इतना अधिक मधु पी जाने के कारण इन्दर के व्यवहार में चंचलता आ गयी है। वह पूरे छत्ते को अपने हाथ में लेकर बोला, "चलो, मधु-मक्खियाँ लौटकर आयें कि इसके पहले ही हम यहाँ से चलते बनें।"

दोनों अब लौटने लगे। अचानक इतना मधु इकट्ठा कर लेने से दोनों बहुत प्रसन्न हैं। गर्ग बोला, "भल्ल के मुखड़े पर बहुत दिनों से हँसी दिखायी पड़ी है। देखना चाहिए, आज वह प्रसन्न होते हैं या नहीं।"

इन्दर बीच-बीच में सिर उठाकर आकाश की ओर निहारता है। दो दिन से पुन. घटाएँ घिर रही हैं। दुबारा एकरस वर्षा हो सकती है, इस आशंका से वह क्षुब्ध हो उठता है। उसने कहा, "भल्ल के मन में विकार आ गया है, इसीलिए वह प्रत्येक दिन नया-नया नियम चालू करते हैं।"

गर्ग ने चिहुँककर कहा, "तुम यह क्या कह रहे हो इन्दर? भल्ल कभी कोई भूल नहीं करते।"

"उस फुंफकारती हुई नदी में प्रत्येक दिन एक प्रस्तरखंड फेंकना क्या बच्चों का खेल नहीं है?"

"उनकी बात मानने पर कभी मङ्गल के बदले अमङ्गल नहीं हुआ है। मुझे भी लगता है, उनकी नदी बाँधने की प्रतिज्ञा हम लोगों के लिए उपकारी ही सिद्ध होगी।"

"हो सकता है। लेकिन शूर को उन्होंने पहाड़ के ऊपर चढ़ने से मना किया है। मैं होता तो देख आता कि पहाड़ के उस पार मनुष्य की कोई बस्ती है या नहीं।"

"प्रवीणा तो बता ही चुकी हैं कि उस ओर विचित्र आकृति वाले एक प्रकार के मनुष्य रहते हैं।"

"यह तो सुनी हुई बात है। किसी बात के लिए निश्चिन्त होने के

हले आँख और कान के कलह को शान्त करने की आवश्यकता पड़ती ।"

"शूर एक तरह से बच्चा ही है, इसके अतिरिक्त वह अकेले उस अनजानी भूमि में कैसे जायेगा ? वहाँ कितने शत्रु हैं, इसका कोई ठीक नहीं ।"

"अकेले जाने में सुविधा यह है कि वह सहज ही शत्रुओं की दृष्टि में नहीं आयेगा । अकेले छिपकर रहना सरल काम है ।"

"नदी पारकर हम पहले वहाँ पहुँच जायें । तब हम सब मिलकर पहाड़ पार करेंगे । भल्ल के नेतृत्व में आज हमारा कबीला बहुत ही शक्तिशाली हो उठा है । आये दिन हम किसी युद्ध में पराजित नहीं हुए हैं । भामह जैसे वीर को भी हमने बन्दी बना लिया था ।"

"उसके बाद उसे छोड़ भी दिया है ।"

"भल्ल ने क्षमा-धर्म ग्रहण कर लिया है । यह मात्र एक परीक्षा है ।"

"परीक्षा नहीं, कौशल । मरुत्त भी कोई कम कुशल नहीं है । जानते हो वे लोग दो बार क्यों पराजित हुए ? उन्हें जंगल से नीचे उतरना पड़ता है । उस समय हम उन्हें घेर लेते हैं तो उनकी गति में बाधा पहुँचती है । मरुत्त स्वयं एक बार भी युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ है । तुम यह अवश्य जानते होगे कि मरुत्त की गति कितनी तीव्र है । वह हय की पीठ पर आरोहण करता है । उसे पकड़ा नहीं जा सकता । मैं कभी ह... की पीठ पर आरूढ़ होता हूँ तो लोग मुझे 'बड़े गधे का आरोही' कहकर चिढ़ाते हैं । इसके बाद मरुत्त स्वयं यदि युद्ध का संचालन करने आये तो उनका सामना करना हमारे लिए कठिन हो जायेगा ।"

"हम लोगों के दल में जब तक भल्ल और वृक् जैसे योद्धा हैं, लोग सामने से आक्रमण करने का साहस नहीं कर पायेंगे ।"

"दो-चार वीरों की सहायता से युद्ध में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है ।"

"ओह, मैं तो कहना ही भूल गया। तुम भी तो हो। तुम्हारे जैसे वीर उनके दल में कितने है?"

"मुझ पर व्यंग्य कर रहे हो?"

"अरे नहीं-नहीं, मैं तुम्हारी शक्ति से परिचित हूँ। भल्ल और वृक् के कारण तनिक ओट में पड़ गये हो—समय आने पर सबको पता चलेगा कि तुममें कितना शौर्य है।"

"गर्ग, यह जान लो, आवश्यकता पड़ने पर मैं काल का संहारक भी हो सकता हूँ।"

'जानता हूँ, दुस्साहस ही तुम्हारी शक्ति को प्रेरित करता है।"

"मैं एक बहुत बड़ा युद्ध चाहता हूँ। उस युद्ध में मैं अपना पराक्रम दिखाऊँगा। जिस प्रकार बिजली का आभरण आँधी है, उसी प्रकार वीरता ही वीरों का आभरण है।"

"इन्दर, शान्त होओ। वीरता दिखाने के लिए अकारण नरहत्या की कौन-सी आवश्यकता है? महामति भल्ल अभी युद्ध से अलग रहकर शान्ति और समृद्धि के पथ का अनुसंधान कर रहे हैं।"

"चाहे जो कह लो, पीठ पीछे शत्रु रखकर नदी बाँधने में तत्परता दिखाना कोई ठीक काम नहीं है। अभी खाद्य-पदार्थ की चिन्ता कम हो गयी है अतः युद्ध करने की आवश्यकता है।"

'इन्दर लगता है, युद्ध-विग्रह के बिना तुम्हारे मन में स्फूर्ति ही नहीं जगती। सोम का भंडार चुक गया है? नारियाँ क्या तुम्हें दुतकार रही हैं?"

इन्दर बोलना बन्द कर अपलक दूर की ओर ताकने लगा। एक रमणी एकाकी झरने की ओर चली जा रही है।

इन्द्र की दृष्टि का अनुसरण करने पर गर्ग की दृष्टि रमणी पड़ी। बोला "उस ओर रा जा रही है क्या?"

इन्दर अपने आप बुड़बुड़ाने लगा, "रा के अतिरिक्त इस प्रकार छन्दोमय चलने की भंगिमा किसकी हो सकती है?"

झरने की ओर एकाकी जाने से मना किया गया है। फिर भी वह
ही है ?"

"रा कब किसके निर्देश का पालन करती है ?"

'भल्ल उसे बहुत अधिक बढ़ावा दे रहे हैं।"

"उसे शान्त करने का उपाय किसी को मालूम नहीं। मैं तनिक
पास करके देखता हूँ।"

इन्दर ने मधुमक्खी का छत्ता गर्ग की ओर बढ़ाते हुए कहा, "तुम इ
सँभालो। जितना भी रास्ता बाकी बचा है, तुम इसे अकेले ले जा
सकोगे। मैं उसके पास जाता हूँ।"

"लो, नारी पर दृष्टि जाते ही तुम्हारा सिर चकराने लगा। रा
बड़ी ही कठोर पात्री है।"

"कठोर है, इसीलिए तो अधिक खींचती है।"

"मैं एक हाथ में मृत्तिका क. पात्र और दूसरे में मधु का छत्ता थामे
कैसे जाऊँगा ?"

"चले जाओगे। गीत गाते हुए चले जाओ. इससे तुम्हारे मन को
बल मिलेगा। हाँ. एक बात गर्ग, तुमने तो सब कुछ को मधु होने कहा,
लेकिन नारी की बात कही ही नहीं।"

"फिर तो मधु को भी मधु होने के लिए कहना होगा।"

"ठीक कह रहे हो। तुम मुझे कुछेक मनमोहक नारी-स्तुति सिखा
दोगे ?"

"गर्ग हँस दिया और बोला, "मैं मधुपान करूँ तो तुम उन्मत्त नहीं
हो सकते। उसी प्रकार मेरे द्वारा रचित स्तुति तुम्हारे किसी काम
नहीं आयेगी।"

"ध ाम के समय तुमसे कोई भलाई नहीं हो सकती। कवि कि
लिए होते हैं, यही सब बनाने के लिए न ?"

"अरे युद्ध विशारद, समय-समय पर तुम्हें भी कवि के द्वार
आना पड़ता है न ! जाओ, तुम्हारे हृदय-कमल पर सचमुच यदि म

आकर बैठता है तो तुम्हारी जिह्वा से भी मधु टपकेगा। देखना, कहीं दंशन ही सहकर लौट न आना।"

इन्दर ने उसकी पीठ पर एक धौल जमाकर और उसके नाम के साथ आदरार्थ 'उस्' प्रत्यय जोड़कर कहा, "चलता हूँ गर्गु।"

वह तीव्र गति से झरने की ओर जाने लगा।

इस बीच झरने के निकट, एक वृक्ष के नीचे रा अपना वसन खोलकर रख चुकी है। वर्षा स्नात पुष्प की तरह उसका रूप निर्मल और कमनीय है। उसकी पिंगलवर्ण केशराशि पीठ पर बिखरी है। साधारण रमणियों की अपेक्षा वह लंबी है, आँखें गहरी, चिबुक शिशु जैसा। झरना और वृक्ष लता के झुरमुट में वह निराभरण शरीर में अप्सरा जैसी दीख रही है।

झरने के किनारे आ वृक्ष की एक बाहर निकल आयी जड़ को पकड़ रा ने पानी में पैर डुबो दिये। पानी बहुत ठण्डा है, फिर भी वह कौतुकवश पानी से खेलने लगती है, अनमनेपन के साथ। वह जंगल की ओर ताकती है।

इन्दर की पदचाप सुन उसने सिर घुमाकर पीछे की ओर देखा। वह चौंकी नहीं। इन्दर की ओर निहारती रही।

इन्दर थोड़ी दूरी पर ठिठककर खड़ा हो गया। अपने स्वर को विनम्र बनाकर कहा, "रा, मैं तुमसे दो-चार बातें कर सकता हूँ?"

आँख बिना हटाये, जैसे किसी प्रार्थी को सहमति प्रदान कर रही हो, ठीक उसी मुद्रा में उसने स्पष्ट स्वर में कहा "कहो।"

इन्दर उधेड़बुन में पड़ गया। वह किस तरह बातचीत शुरू करे, उसकी समझ में नहीं आता है। उसके जैसा चपल और ललना-प्रिय युवक भी रा जैसी नारी के निकट जड़ हो गया है। रा सचमुच विचित्र प्रकृति की है। इस परिपूर्ण यौवन में अपने एकनिष्ठ प्यार के कारण बहुतों की श्रद्धा की पात्री बन गयी है।

रा ने अपलक निहारते हुए पुनः कहा, "क्या कहना है, कहो। मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

अचानक इन्दर के शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी। उसे लगा, रा को उसने इसके पूर्व अच्छी तरह नहीं देखा है। नारी के सम्बन्ध में उसे अपना समस्त पूर्व अनुभव मिथ्या प्रतीत होने लगता है। रा ने उसके भीतर दुर्निवार अतृप्ति जगा दी।

किसी प्रकार रची गयी स्तुति या पूर्वश्रुत मनोहर वाक्यों का सहारा लिए बिना उसने निश्छल हार्दिकता के साथ कहा, "रा, इस निर्जन स्थान में तुम्हें एकाकी पाकर मैं बहुत-कुछ कहना चाहता था। लेकिन कुछ भी स्मरण नहीं आ रहा है।"

"मुझे देखते ही कुछ कहने की लालसा जगी या पहले ही सोच चुके थे?"

"पहले नहीं सोचा था, तुम्हें देखते ही खिचकर चला आया।"

"इन्दर, मैं यहाँ अकेली रहना चाहती थी।"

"यहाँ अकेली आकर तुमने ठीक नहीं किया है।"

"क्यों?"

"यहाँ भय की संभावना है।"

"किस बात का भय?"

"तुम्हें पता नहीं है कि मात्र दो पखवारे पूर्व मरुत्गण यहाँ हमारी कुछ नारियों का अपहरण करने आये थे?"

"मुझे पता है। उस दल में मैं भी थी। उस बार वे सफल नहीं हो सके। इसीलिए मैं यहाँ बहुधा अकेली ही चली आती हूँ।"

इन्दर अपने मुख मण्डल का आश्चर्य-भाव छिपा नहीं सका। उसने टूटे स्वर में कहा, "यह जानकर भी तुम अकेली आती हो?"

रा के स्वर में कोई दुविधा नहीं है। उसने स्पष्ट स्वर में कहा, "हाँ। मैं चाहती हूँ कि वे लोग मुझे पकड़ कर ले जायें।"

"तुम्हारी यह इच्छा कितनी विचित्र है? तुम व्यर्थ ही प्राण गँवाना चाहती हो?"

"कोई भी कबीला स्त्रियों की हत्या नहीं करता। मरुत्गण यहाँ नारियों का जो अपहरण करते आते हैं वह उनकी हत्या करने के लिए नहीं। अतः यहाँ मृत्यु का प्रश्न खड़ा ही नहीं होता।"

"तुम चाहती हो कि शत्रु तुम्हें पकड़कर ले जायँ?"

"मैं वहाँ अपनी आँखों से देखना चाहती हूँ कि ऋभु अब भी जीवित है या नहीं।"

"ऋभु किसी भी तरह जीवित नहीं रह सकता। मरुत्त हमारे भल्ल की तरह दयालु नहीं है। शत्रु को वह जीवित नहीं छोड़ता।"

रा की आँखों में सूक्ष्म जलकण के परदा जैसा दीख पड़ा। उसने आविष्ट होकर कहा, "वह इतना सुन्दर है, उसकी कान्ति इतनी स्निग्ध है और उसके हास्य में इतनी सुधा है कि मरुत्त की किसी कन्या ने सम्भवतः मुग्ध होकर उसे माँग लिया होगा। मरुत्त ने देने में आपत्ति नहीं की होगी। नियम यही है।"

"यदि वह इस तरह जीवित है तो तुम्हें कौन-सा लाभ होने जा रहा है?"

"मैं केवल एक बार देखना चाहती हूँ।"

"रा, तुम्हारी यह चिन्ता निरर्थक है। यह चिन्ता कीट की तरह तुम्हारे शरीर को खोखला बना डालेगी। तुम्हें इतना सौंदर्य मिला है, इसे नष्ट मत करो।"

"एक बार उसे आँखों से देख लेती तो संभवतः उसे भूल जाती। नहीं तो भूल नहीं पा रही हूँ।"

"वह जीवित नहीं है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ—उसी प्रकार जिस प्रकार यह जानता हूँ कि मैं जीवित हूँ। ऋभु को हम भी कोई कम प्यार नहीं करते थे। जो मर जाता है, उसकी स्मृति ढोकर प्रेत-पूजा करने से अपयश होता है। जीवित मनुष्य जीवितों पर ही ध्यान देता है।

"मैं तो बहुतों को देखती हूँ। लेकिन ऋभु की तरह कोई दूसरा नहीं दीखता। मुझे अब भी उसके आलिंगन का स्पर्श मिलता है।"

"जो नहीं है, उसका आलिंगन क्या ?"

"तुम सोममायी हो, यह बात क्या तुम्हारी समझ में आयेगी ?"

"तुम सोममायी कहकर मेरी हँसी उड़ा रही हो ?"

"तुम्हें जब भी देखती हूँ, लगता है, तुम सोम में ही डूबे हुए हो।"

इन्दर को अब तक बातचीत करने में थोड़ी दुविधा का अनुभव हो रहा था। अब उसका संदर्भ आया तो वह खुल गया। इस संबंध में उसे किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं होता है। वह धरती पर घुटने टेक कर बैठ गया और ठहाका लगाते हुए बोला, "सो तो रहता ही हूँ। तुम नहीं जानतीं कि और-और लोग मेरे विषय में क्या कहते हैं। मैं तिरसठ झीलों में भरे सोम का पान कर सकता हूँ।"

रा बोली, "तुम क्या यहाँ मेरी रखवाली करने आये हो ?"

इन्दर बोला, "नहीं, मैं इसलिए नहीं आया हूँ। तब हाँ, यह बात भी सही है कि जब तक मुझमें प्राण है, शत्रु तुम्हारा अपहरण कर तुम्हें नहीं ले जा सकते। यहाँ तक कि तुम्हें इच्छा होगी तो भी तुम्हें जाने नहीं दूँगा।"

"मेरी इच्छा होगी तो तुम रुकावट क्यों डालोगे ?"

"ऐसा नहीं करूँगा तो मेरी कीर्त्ति का विनाश हो जायेगा।"

"समझ गयी। लेकिन यहाँ आने का तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?"

"रा मैं तुम्हें पाना चाहता हूँ।"

कुछ क्षणों तक वे एक-दूसरे की ओर निष्पलक निहारते रहे—वा जैसे थम गयी हो, झरने का जल निःशब्द हो गया हो, और अन्तरि में बहुत से दर्शक हों।

रा विचित्र स्वर में हँसी। उसके बाद बोली, "तुम मेरे प आओ।"

इन्दर शीघ्र ही उठकर चला आया और रा के निकट बैठ गया। उत्सुकता के साथ उसके मुखड़े की ओर निहारा।

रा बोली, "तुमने जब पहले आकर कहा, यहाँ डर की बात है तो उस समय मैंने सोचा था, तुम्हीं उस डर के कारण हो। लेकिन तुमसे डरने की कोई बात नहीं है।"

"रा, तुम्हें देखकर मेरा हृदय काँप रहा है। तुम मुझसे भयभीत क्यों होने लगी?"

"सुना है, तुमने रीति का उल्लंघन कर किसी नारी पर बल का प्रयोग किया है। मैं यदि तुम्हारा प्रस्ताव ठुकरा दूँ तो तुम क्या मुझ पर भी बल का प्रयोग करोगे?"

"मैं कभी बल का प्रयोग नहीं करता। हो सकता है किसी नारी ने अपनी निर्लज्जता छिपाने के लिए ऐसी बात फैला दी है। नारी पर बल-प्रयोग करने से कुछ प्राप्त नहीं होता। तुम्हें देखने पर ऐसा लगता है जैसे मुझे इस जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ हो।"

'मुझे क्या तुमने इसके पहले नहीं देखा है?"

"इस प्रकार नहीं देखा था।"

इन्दर ने रा के कंधे पर हाथ रखा। उसके नवनीत जैसी कोमल त्वचा के स्पर्श में अतुलनीय मादकता भरी है। उसके गोल स्तन, पतली कमर और चौड़ी जंघाओं का इन्दर का उष्ण निश्वास स्पर्श करता है।

रा उसे बाधा नहीं देती, लेकिन स्वयं संभोग की इच्छा के वशीभूत नहीं होती है। जैसे किसी शिशु की दुष्टता देख रही हो, उसी प्रकार इन्दर की ओर निहार रही है।

इन्दर सचमुच ही शिशु या अंधे के जैसा ही रा के गले, गरदन और छाती में अपना मुँह रगड़ रहा है।

रा बोली, "इन्दर, तुम मुझसे कुछ कहने आये थे। लेकिन अब तक नहीं कहा।"

इन्दर बोला, "बहुत देर तक अनेक शब्दों को गूँथने के बाद मैं

तुमसे जो कहता उनका तात्पर्य यही होता कि मैं तुम्हें पाना चाहता हूँ।"

वह रा के स्तन से होठों को छुलाकर कहता है, "तुम सोमरस से भी अधिक सुस्वादु हो। पात्र में रखे हुए जल में प्रतिबिंबित चन्द्रमा की तरह मायामयी हो। तुम मेरी बनो।"

रा के अधरों पर अब भी मीठी हँसी तैर रही है। इन्दर की दाढ़ी में लगा मधु उसकी छाती में लगकर चिपचिपा रहा है। वह बोली, "इन्दर, सिर हटाओ, मेरी एक बात सुनो।"

इन्दर ने अपना सिर हटाये बिना कहा, "अभी मैं बहरा हो गया हूँ। मैं तुम्हारी छाती की धड़कन के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं सुन पा रहा हूँ। तुम्हारी छाती की ईषत् रक्तिम आभा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देख पा रहा हूँ।"

दोनों हाथों से वह रा के कटि-प्रदेश को आबद्ध किये हुए है और उसकी छाती पर अपना मुंह रोपे हुए है।

रा ने उसके बालों पर हाथ रखकर कहा, "फिर भी सुन लो तुमसे मेरी एक माँग है।"

"तुम्हारे लिए अदेय हो, मेरे पास वैसी कोई वस्तु नहीं।"

"तुम मेरे लिए भामह को पकड़ कर ला दो।"

"रा, अभी तुम युद्ध की बात नहीं करो।"

मुंह को नीचे लाकर इन्दर रा की नाभि, जाँघ आदि में अपनी अ... घिसने लगा। वह अबूझ की तरह बोला, "कभी लगता है, तुम ... जननी हो और मैं तुम्हारी संतान हूँ। अपना स्तन मुझे पीने दो। ... लगता है, मैं तुम्हारा मित्र हूँ, तुम मुझे अपने हाथ का स्पर्श करने ... कभी लगता है, मैं एक नारी हूँ, तुम मुझे पीड़ा दो। परन्तु अभी ... विग्रह की बात मत करो। भामह की बात छोड़ो।"

इन्दर उठकर खड़ा हो गया, रा को भी खींचकर उसने उ...

थोड़ी दूर हटकर रा के संपूर्ण शरीर पर दृष्टि दौड़ाते हुए बोला, 'ऐसा रूप ! ऐसे रूप के सामने सब कुछ सपने जैसा प्रतीत होता है।"

रा की आँखों में एक दुर्बोध्य तरंग खेल गयी। वह हाथ बढ़ाकर बोली, "आओ।"

इन्दर जैसे ही आगे बढ़ा रा ने अचानक जोर से उसकी छाती पर एक धक्का लगाया। सब कुछ अप्रत्याशित होने के कारण इन्दर को स्वयं को संभालने का अवसर नहीं मिल सका। उसका पैर फिसल गया और वह झरने के पानी में गिर पड़ा। उसके पूर्व ही एक पत्थर से उसके सिर में चोट लग गयी और उसका कपाल फट गया।

इस दुर्घटना का फलाफल वैसा कोई भयंकर नहीं हुआ। इन्दर अचेत हो झरने के स्रोत में बहकर जाने लगा। लेकिन उसमें जीवित रहने की एक आश्चर्यजनक दक्षता है। इतने-इतने युद्धों में वह सम्मिलित हो चुका है परन्तु कभी आहत नहीं हुआ।

दो-चार क्षणों के लिए मोहाविष्ट हो जाने पर भी उसने तीर से लगे पत्थर को पकड़ अपनी रक्षा कर ली। उसके कपाल से बहते हुए रक्त ने पानी का रंग बदल दिया।

रा ने इन्दर को सहायता करने की चेष्टा नहीं की। वह एक ही स्थान पर चुपचाप खड़ी है और इन्दर को देख रही है।

इन्दर अपनी अँजुरी में पानी भर-भर कर कपाल धोने लगा। इस पर भी रक्त का बहना जब न रुका तो उसने आहत स्थान को जोर से दबा दिया। और स्वस्थता का अनुभव करने लगा। उसके मुखमण्डल पर क्रोध का चिह्न नहीं है।

उसने अत्यन्त शान्त और कोमल स्वर में रा से पूछा, "रा, तुमने मुझ पर आघात क्यों किया? तुम ऋभु का स्पर्श नहीं भूल सकी हो, इसीलिए मेरे स्पर्श से संकुचित हो गयी?"

रा ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं।"

"मैं क्या कुत्सित और घृणा के योग्य हूँ?"

"नहीं; पुरुष के रूप में तुम वरणीय हो।"

"फिर ?"

"मैंने तुम्हारे सामने एक माँग रखी थी परन्तु तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसके पूर्व ही तुम बहुत-कुछ माँग करने लगे।"

तुम्हारा यह भुवनमोहिनी रूप देखकर मैं सचमुच ही अंधा और बधिर हो गया था। अच्छा, अब बताओ, तुम्हारी क्या माँग है ?"

"मैंने कहा था कि तुम भामह को पकड़कर मेरे पास ला दोगे या नहीं ?"

"यह तो अवान्तर बात है ! भामह को पकड़ लाने से ही क्या होगा ? भल्ल उसे छोड़ देंगे। उस दिन तो तुम देख ही चुकी।"

"फिर भी मैं उसे चाहती हूँ।"

"क्या करोगी ?"

"वह मुझसे ऋभु को छीनकर ले गया है। उसका जब तक प्रतिशोध नहीं ले लूँगी तब तक मेरे शरीर में ताप नहीं आयेगा।"

"तुम्हारे शरीर में पर्याप्त ताप था। और अधिक ताप लाकर तुम क्या पुरुषों को दग्ध करना चाहती हो ? नारियाँ पुरुषों से भी अधिक प्रतिहिंसा परायण होती हैं। तुम यह असंभव बात क्यों कह रही हो ? अपने शौर्य से यदि मैं भामह को बन्दी बनाकर लाता हूँ तो वैसी स्थिति में भी तुम उसे पा नहीं सकोगी। भल्ल उसे तुम्हारे हाथ में नहीं सौंपेंगे। एक बार देख ही चुकी हो। भामह के सम्बन्ध में इतना अधिक क्यों सोचती हो ? यह सब भूलकर तुम स्वाभाविक स्थिति में चली आओ। युद्ध-विग्रह जो करने को होगा, हम करेंगे। इसके अतिरिक्त एक बात और है। ऋभु के हाथ में भी अस्त्र था। वह पराजित हो गया है। इसलिए भामह को दोष देने का कोई कारण नहीं दीखता है।"

"तुम मेरी माँग स्वीकार कर रहे हो या नहीं, यही बताओ।"

"ओह, कितनी मुश्किल बात है ! कह ही तो दिया कि भल्ल जब तक जीवित रहेंगे—"

"आवश्यकता पड़े तो तुम भल्ल की भी हत्या कर देना।"

"क्या ?"

इन्दर ने चिहुँक कर रा की ओर निहारा। रा ने आँखें नहीं हटायी। उसकी आँखों में तीक्ष्ण दीप्ति थी।

इन्दर बोला, "रा, तुम यह सब क्या कह रही हो? भल्ल के प्रति इस शब्द का उच्चारण किया जाये तो इसका अर्थ समझती हो? इस उपत्यका का और कोई सुन ले—"

"इन्दर तुम अच्छी तरह जानते हो कि मेरे मन में शंका नामक कोई वस्तु नहीं है। जो चाहती हूँ, उसे प्राप्त करना चाहती हूँ।"

"यह असम्भव है। जब तक हम लोग भल्ल के आधिपत्य में हैं—"

"भल्ल क्या कहेंगे और क्या नहीं कहेंगे, यह मैं जानना नहीं चाहती। मैं यही जानना चाहती हूँ कि भामह को मेरे पास ला सकते हो या नहीं ?"

इन्दर जानता है कि कोई-कोई नारी अत्यन्त युक्ति हीन होती है। वस्तुत: उनके इस युक्त-हीन हठधर्मिता के कारण ही पुरुषों ने अनेकानेक कीर्त्तियाँ स्थापित की हैं। भामह को शत्रु के रूप में सोचते-सोचते रा के लिए अब वह प्रियतम से भी अधिक आराध्य हो गया है।

आगे-पीछे की चिन्ता न कर इन्द्र बोला, "ठीक है, यदि जीवित रहा तो किसी न किसी दिन भामह को लाकर तुम्हारे पैरों के पास फेंक दूँगा।"

"वह दिन बहुत दूर न होना चाहिए। युद्ध क्षेत्र में तुम्हारा पराक्रम देखकर शत्रुओं के धनुष की डोर टूट जाये, मेरी यही कामना है।"

अपना कपाल रा के नग्न शरीर में दबाकर इन्दर ने हँसते हुए कहा, "तुम यदि लता की पत्ती पीसकर मेरे रक्त का बहना नहीं रोकोगी तो मैं तुम्हारे पूरे शरीर में रक्त लगा दूँगा।"

रा ने भूमि से अपना परिधान उठाकर कहा, "चलो। तृण भूमि के पास बहुत सारी कोमल दूर्वें है।"

पत्थर का पता चलता है। पशुओं के पानी पीने और लवण के आस्वादन करने का स्थान साधारणतः निश्चित रहता है।

शूर समझ गया था, नदी के किनारे के समतल प्रान्तर में पत्थर मिलने की आशा नहीं है। पहाड़ पर चढ़ते हुए वह विभिन्न पत्थरों को जीभ से चाटकर देखता है लेकिन उसे ठीक वैसा ही स्वाद नहीं मिलता है।

कुछ दूर ऊपर चढ़ने के बाद शूर को एक हरिण दिखायी पड़ता है। अँधेरे में वह हरिण के ठीक सामने पड़ गया था। थोड़ी और दूर से देखता तो अच्छा रहता। अस्त्र प्रयोग में लाने का भी उसे अवसर नहीं मिला। हरिण एक ही निमिष में अदृश्य हो गया।

धीरे-धीरे अँधेरा उतरता जा रहा है। अरण्य क्रमशः कोलाहलपूर्ण हो उठा। शूर अपनी सहजात घ्राणशक्ति एवं श्रवणशक्ति की सहायता से समझ जाता है कि इस पहाड़ पर मनुष्य की वस्ती नहीं है। इसके अतिरिक्त उसे थोड़ा-सा भी समतल स्थान दिखायी नहीं पड़ा है—मनुष्य इस प्रकार के पहाड़ के सम्बन्ध में उत्साही नहीं रहते।

शूर और नीचे उतरने को तत्पर नहीं है। प्रत्येक दिन सवेरे नदी के किनारे खड़े हो अपने सगे-संबंधियों से एकरस बातचीत करना उसे अब अच्छा नहीं लगता।

वह एक मजबूत पेड़ पर चढ़कर बैठ जाता है। वहीं बैठे-बैठे वह पके अनाज के दाने खाता है। लेकिन चिट्टियाँ उसे विरक्त करने लगती हैं। फिर भी इस तरह रात बिताने में उसे एक उत्तेजना का अनुभव होता है।

कुछ दिन पहले तक उसे इस पहाड़ पर अकेले चढ़ने में भय लगता था। परन्तु बहुत दिनों तक उन्मुक्त आकाश के तले समतल भूमि पर सोते-सोते वह ऊब उठा था। आज इस स्थिति में उसे एक नयेपन का अनुभव हो रहा है। एक संगिनी का अभाव सर्वदा उसके मर्म को वेधता रहता है। लइला को बहुत दिनों से उसने अपने निकट नहीं देखा है।

शूर ने पहाड़ पर चढ़ना प्रारंभ कर दिया है। अभी उसके हाथ में अस्त्र है, कंधे से झूलती पेटिका में ढेर सारा अनाज है। इस स्थिति में कब तक एक ही स्थान पर आलसी के जैसा बैठकर रहा जाये ?

भल्ल ने उसे अकेले अनजान देश में जाने से मना किया था। उसने आश्वासन दिया था कि वे लोग शीघ्र ही इस ओर आयेंगे।

लेकिन प्रस्तर-सेतु की अभी जो स्थिति है, निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि यह काम कब तक पूरा होगा। आजकल शूर का शरीर छटपट करता रहता है। अब उससे एकाकीपन सहा नहीं जाता।

भल्ल को बिना बताये उसने पहाड़ पर चढ़ना प्रारंभ कर दिया है। खड़ी चढ़ाई है, थोड़ी दूर चलते ही थकावट दबोच लेती है। फिर भी थोड़ी दूर चढ़ जाने के बाद उसे लांघने के लिए वह आग्रहशील हो उठा है।

पहाड़ पर चढ़ने का एक और कारण है। कई दिनों से शूर को अपनी जीभ में तीव्र विस्वाद का अनुभव हो रहा है। रह-रह कर जी मिचलाने लगता है।

घास के बीज का नियमित भोजन करने के कारण ही यह प्रतिक्रिया हुई है—प्रारंभ में उसे ऐसा ही लगा था। उसके बाद स्मरण आया कि मांसाहार के समय भी उन लोगों को कभी-कभी ऐसा ही अनुभव होता था। उस समय उन लोगों ने खोजकर पहाड़ पर एक प्रकार का नरम पत्थर निकाला था जिसे जीभ पर घिसते ही मितली का भाव कम हो जाता था।

इस प्रकार के पत्थर को खोज निकालना बहुत कठिन काम है। मनुष्य की अपेक्षा पशुओं को इस पत्थर का पता सहज ही चल जाता है। विभिन्न प्रकार के पशु एक ही स्थान पर जाकर इस प्रकार के पत्थर पर जीभ घिसते हैं। इन पशुओं का अनुसरण करने पर मनुष्य को इस

पत्थर का पता चलता है। पशुओं के पानी पीने और लवण के आस्वादन करने का स्थान साधारणतः निश्चित रहता है।

शूर समझ गया था, नदी के किनारे के समतल प्रान्तर में पत्थर मिलने की आशा नही है। पहाड़ पर चढ़ते हुए वह विभिन्न पत्थरों को जीभ से चाटकर देखता है लेकिन उसे ठीक वैसा ही स्वाद नही मिलता है।

कुछ दूर ऊपर चढ़ने के बाद शूर को एक हरिण दिखायी पड़ता है। अँधेरे में वह हरिण के ठीक सामने पड़ गया था। थोड़ी और दूर से देखता तो अच्छा रहता। अस्त्र प्रयोग में लाने का भी उसे अवसर नहीं मिला। हरिण एक ही निमिष में अदृश्य हो गया।

धीरे-धीरे अँधेरा उतरता जा रहा है। अरण्य क्रमशः कोलाहलपूर्ण हो उठा। शूर अपनी सहजात घ्राणशक्ति एवं श्रवणशक्ति की सहायता से समझ जाता है कि इस पहाड़ पर मनुष्य की बस्ती नहीं है। इसके अतिरिक्त उसे थोड़ा-सा भी समतल स्थान दिखायी नहीं पड़ा है—मनुष्य इस प्रकार के पहाड़ के सम्बन्ध में उत्साही नही रहते।

शूर और नीचे उतरने को तत्पर नहीं है। प्रत्येक दिन सवेरे नदी के किनारे खड़े हो अपने सगे-संबंधियों से एकरस बातचीत करना उसे अब अच्छा नही लगता।

वह एक मजबूत पेड पर चढ़कर बैठ जाता है। वहीं बैठे-बैठे वह पके अनाज के दाने खाता है। लेकिन चिड़ियाँ उसे विरक्त करने लगती हैं। फिर भी इस तरह रात बिताने में उसे एक उत्तेजना का अनुभव होता है।

कुछ दिन पहले तक उसे इस पहाड़ पर अकेले चढ़ने में भय लगता था। परन्तु बहुत दिनों तक उन्मुक्त आकाश के तले समतल भूमि पर सोते-सोते वह ऊब उठा था। आज इस स्थिति में उसे एक नयेपन का अनुभव हो रहा है। एक संगिनी का अभाव सर्वदा उसके मर्म को वेधता रहता है। लइला को बहुत दिनों से उसने अपने निकट नही देखा है।

भु के लिए रा जिस प्रकार प्रतीक्षा कर रही है, लइला भी क्या उसके लिए उसी प्रकार प्रतीक्षा करती रहेगी ? लइला अब तक निश्चय ही वृक् या इन्दर की अंकशायिनी हो चुकी होगी। दूर से लइला को देखने से उसे कष्ट का अनुभव होता है। इससे तो अच्छा न देखना ही है।

सवेरे कुछ वन्दर शूर को नींद से जगा देते हैं। वे सोये हुए शूर को वृक्ष से नीचे ढकेल देने की चेष्टा कर रहे थे। शूर अपने वर्छे से उन्हें भयभीत कर भगा देता है। उन लोगों की हत्या करने की उसे कोई इच्छा नहीं है। इनका मांस अत्यन्त ही विस्वाद होता है। इसके अतिरिक्त इन कुरूप नरों का समुदाय अत्यन्त चतुर और एकतावद्ध होता है —इन्हें छेड़ना ठीक नहीं।

शूर वृक्ष से नीचे उतर आता है और पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लगता है। पहाड़ अत्यन्त दुर्गम है और यहाँ वन-पशुओं की संख्या वास्तव में कम है। इसीलिए आखेटक निषाद भी यहाँ आना नहीं चाहेंगे। हो सकता है किसी समय निषादों ने यहाँ के अधिकांश प्राणियों को मार डाला हो और हटकर दूसरे स्थान में चले गये हों।

पथ के अभाव में शूर को स्वयं पथ का निर्माण करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप वह पहाड़ को विपरीत दिशा में चला जाता है, समतल भूमि के घासवन से वहुत दूर। फिर भी वह रुकने का नाम नहीं लेता

एक ओर हिरण पर दृष्टि जाते ही (संभवतः यह इसके पहले देख हुआ ही हिरण है) वह उसका पीछा करने की बात भूलकर जोर वर्छा फेंकता है। वास्तव में उसे सोचने का समय नहीं मिला था। व पन में प्राप्त शिक्षा के अनुसार उसके स्नायु ने ऐसा काम किया थ वर्छे से विंधकर हिरण ने कुछ दूर तक दौड़ने का प्रयास किया प वह सफल न हो सका और धराशायी होकर गिर पड़ा। शूर दौ हुआ जाता है और वर्छे को वाहर निकाल, हिरण को जीवित रखने प्रयास करता है। एक ही वार में हिरण को विद्ध करने के कारण मन ही मन गर्व का भी अनुभव करता है—वृक् की दृष्टि पड़ती त

शूर का अभिनन्दन करता। दूसरे ही क्षण उसे हिरण के प्रति ममता भी होती है—इस निर्जन अरण्य में हिरण उसका एकमात्र परिचित साथी था। यह वृक् को लवण प्रस्तर का पता बता सकता था।

हिरण जीवित नहीं रहा। शूर की ओर छलछलाती आँखों से देखकर उसने अन्तिम साँस ले ली।

शूर ने अब देर नहीं की। अपने दक्ष हाथों से हिरण का चमड़ा उतार लिया। यह चमड़ा बहुत ही दुर्लभ वस्तु है। पेटिका अथवा पद-आस्तरण बनाने से बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होता है। इतना अधिक मांस लेकर क्या किया जा सकता है? फेंककर चला जाना भी असंभव है।

हिरण की हत्या के बाद एक और समस्या उभर आयी। शूर ने इस पर विचार नहीं किया था। मृत पशु के मांस की गंध पा गिद्ध और बाज उसके माथे पर चक्राकार मँडराने लगे। उनके दल में क्रमशः वृद्धि होती चली गयी और वे नीचे उतरने लगे। शूर ने कुछ देर तक उन्हें वहाँ से रोकने की चेष्टा की। लेकिन खाद्य-पदार्थ की खोज में पक्षी-समूह तब जीवन से हताश हो विपत्ति के सामने बढ़ने को उतारू हो चुके थे। ऐसी स्थिति में शूर हिरण की एक टाँग काटकर दौड़ते हुए नीचे उतरने लगा।

शूर को इस बात की जानकारी नहीं है कि वह नदी की विपरीत दिशा में उतर रहा है।

गिद्ध और बाजों ने तब भी शूर का पीछा नहीं छोड़ा था। इन दुर्धर्ष पक्षियों के आक्रमण से आत्मरक्षा करना सहज बात नहीं। दौड़ते-दौड़ते उसका पैर फिसल गया और वह लुढ़कने लगा। स्थानच्युत पत्थर की तरह वह लुढ़कते हुए नीचे गिरने लगा? जीवन की आशा छोड़ उसने आँखें बन्द कर लीं।

संध्या के समय उसमें चेतना आयी। वह पहाड़ के नीचे [illegible] उपत्यका में पड़ा है। इस स्थान से वह अपरिचित है। [illegible] रहने के कारण उसने वहीं लेटे-लेटे रात बिता दी। [illegible]

में उसने बहुत-कुछ स्वस्थता का अनुभव किया । उसकी कोई हड्डी नहीं थी । अतः परिचित जंगल में लौट जाने के उद्देश्य से वह पुनः हाड़ की चढ़ाई चढ़ने लगा ।

इस बार भी उसने एक दूसरे ही पर्वत पर आरोहण किया । इसी नकार और डेढ़ दिन तक अनेकानेक पर्वत और जंगलों को पारकर शूर रास्ता भुला बैठा ।

एक ढालू पहाड़ से शीघ्र ही नीचे उतर शूर अचानक ठिठककर खड़ा हो गया । दूर समतल भूमि पर वह कौन-सी वस्तु दीख रही है ? अपनी आँख से वह जो कुछ देख रहा है वह सचमुच ही आश्चर्य में डालने वाला दृश्य है । उसे एक ही साथ भय और आनन्द का अनुभव हुआ ।

शूर जहाँ आकर खड़ा हुआ, वहाँ वृक्ष-लता न रहने के कारण बहुत दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ता है । एक विस्तृत समतल प्रान्तर । उसके बीच पंक्तिबद्ध प्रस्तर निर्मित गृह । शूर ने कभी ऐसा पत्थरों का समा-वेश नहीं देखा था । बीच-बीच में चमचमाते स्वर्णमय मन्दिरों के शिखर हैं—यह भी शूर की दृष्टि के लिए एक नयी वस्तु ही है । गृह-समूह से कुछ दूर एक ओर आश्चर्यजनक वस्तु है । जिन घासबीजों को खाकर शूर ने अपने प्राणों की रक्षा की है, उन्हीं घासबीजों का वन निर्धारि भागों में क्यारी के रूप में सजा है । यह दृश्य उन लोगों के नदी तीर प अचानक उग आये घासवन जैसा नहीं है । वहाँ बहुत से मनुष्य अप गोधन लिए किस काम में लगे हुए हैं ?

मनुष्य को नाना प्रकार का विस्मय होता है । परन्तु जिस दृश्य पहले कभी नहीं देखा हो, जिसकी कभी कल्पना न की हो, वैसा सामने अचानक आ जाये तो मनुष्य का चित्त व्याकुल हो उठता है

शूर बार-बार अपनी आँखें रगड़कर उस ओर निहारने लगा यह जो इस प्रकार की वस्तु देख रहा है वह वास्तव में है या यह मन का भ्रम है ? एक जगह एक ऊँचा सा बाँस खड़ा है । इस हाँ है ? धूप की किरणों में वह बीच-बीच में क्या चमक उठत

मनुष्य मनुष्य से ही सबसे अधिक भय खाता है, विशेषत: वैसा मनुष्य जो शूर की तरह एकाकी होता है। फिर भी शूर ने तत्क्षण पलायन करने की बात नहीं सोची। थोड़ी दूर और निकट जाकर देखने की तीव्र प्रेरणा उसके अन्तर्मन में जगने लगी।

जहां तक संभव हो सकता है वह स्वयं को छिपाकर समतल भूमि पर उतर आया। उतरने के समय उसकी समझ में आ गया था कि यहां के पत्थरों का ढांचा भुरभुरा है, पैर रखते ही पत्थर लुढ़ककर गिरने लगते हैं। बीच-बीच में तलवे में पानी का स्पर्श लगता है। पत्थर के बदले यहां भीगी हुई मिट्टी है। कहीं अवश्य ही कोई निर्झर है। इस पथ पर लौटकर आना बड़ा ही कठिन होगा, फिर भी उसका ध्यान इस बात पर नहीं है। दूर जो गृह समुदाय और उनके अधिवासी हैं उनके संबंध में कुछ और जानने की उसके मन में तीव्र इच्छा हो रही है। लौटने के समय कोई न कोई रास्ता मिल जायेगा।

पहाड़ के इस पार मनुष्य की बस्ती होने की बात प्रवीणा ने कभी निश्चय ही कही थी, परन्तु यहां के कबीले के बारे में किसी ने कुछ भी नहीं देखा था। शूर लौटकर जब सबसे कहेगा…

यहां बीच-बीच में कुछ कन्दराएं भी दीख पड़ती हैं। वहां कभी मनुष्य वास करते थे। तब हां, चिह्न देखने पर लगता है कि यह बहुत दिन पहले की बात है। किसी-किसी कन्दरा की दीवार पर रेखाचित्र है—इड़ा अपनी निशि गुफा में जिस प्रकार का रेखाचित्र बनाने में निमग्न रहती है, ठीक वैसा ही रेखाचित्र।

समतल भूमि में आकर शूर ने एक बार चारों ओर आंख दौड़ायी। पीछे के विशाल पर्वत ने उसके पूर्व परिचित जगत को पूर्णतया आंखों की ओट कर दिया है। उसी पर्वत से इस ओर भी एक नदी बहकर आयी है। लेकिन वह बहुत छोटी है और उसकी धारा भी उतनी तीव्र नहीं है। उस नदी में लकड़ी के कुछ कुन्दे बह रहे हैं। शूर जिस नदी

कर दूसरे देश में चला आया था, उस नदी में इस प्रकार के
के कुन्दे दो-चार क्षण से अधिक नहीं दिखायी पड़ते थे।
इस ओर सूर्य की किरणें अधिक प्रखर हैं। कुहासा या मेघ कहीं
हैं। साँस लेने से छाती हल्की लगने लगती है। शूर ने झुककर उस
ी नदी से पानी पिया। पानी बहुत ही स्वादिष्ट है। यह क्या प्रवीणा
द्वारा बताया गया वही देश है जहाँ से सूर्य उगता है? लेकिन सामने
। बहुत दूर तक आकाश दिखायी पड़ रहा है। आकाश का यहाँ अन्त
हीं हुआ है।

कुलगोष्ठी के किसी ने कभी जो दृश्य नहीं देखा है, शूर वही देख
रहा है। उसे और अच्छी तरह देखना होगा। वह धीरे-धीरे आगे
बढ़ा। विपत्ति की कोई संभावना नहीं है। फिर भी वह सावधानी के
उद्देश्य से घासवन के भीतर घुस गया। यहाँ के घासवन की मिट्टी में
एक भी बीज गिरा हुआ नहीं है। मिट्टी भी नरम है, पत्थर दिखायी
नहीं पड़ता है। घास भी प्रायः छाती के बराबर ऊँची है।

एक घासवन को तिरछे पारकर शूर ने खूब सावधानी से अपनी
गरदन आगे बढ़ायी। निकट ही पत्थर का बना एक गोलाकार स्थान
है। उसके अन्दर निश्चय ही पानी जमा है। क्योंकि दो नारियाँ उसके
किनारे बैठ पानी से बदन धो-धोकर मीठी हँसी हँस रही हैं।

बहुत दिनों के बाद इतने निकट नारी को देखकर शूर की छाती
में ऐंठन जगने लगी। उसे लइला के मुखड़े का स्मरण आ गया।

हालाँकि उसके कबीले की नारियों से यहाँ की नारियों में को
समानता नहीं है। लइला की अपेक्षा ये लोग नाटी हैं। बाल काले
शरीर का रंग भी ऐसा है जैसे उस पर बादल की छाया पड़ी हो। स
आश्चर्य की बात है कि ये लोग जो पोशाक पहने हैं वह न तो च
और न ही वृक्ष की छाल है। उनसे भी अधिक सूक्ष्म और नमनीय
वस्तु है।

शूर के मन में तीव्र इच्छा जगी कि वह दौड़कर इन दो नारि

समीप जाये और घुटने के बल बैठ उनसे दया की भीख मांगे। उसका कण्ठ शुष्क हो गया है, बहुत दिनों से उसने सोम नहीं पिया है। इतने दिनों के बाद अपने निकट मनुष्य को देखकर उसके मस्तिष्क में आंधी बहने लगी है।

फिर भी शूर अपने आपको छिपाये रहा। अपने इस जीवन में उसे नारी की ईर्ष्या का कोई कम परिचय नहीं मिला है। शत्रुओं का रक्त शरीर में लगाकर उल्लसित होना नारी ही अधिक पसन्द करती है।

उसने ध्यान लगाकर नारियों की बातचीत सुनने की चेष्टा की। लेकिन उसकी समझ में एक भी शब्द न आया। पक्षियों की काकली जैसे सुरीले शब्द तैरते हुए आ रहे हैं।

उसने थोड़ी और दूर तक अपनी दृष्टि दौड़ायी—एक बड़ा-सा प्रस्तर-निर्मित मंडप है। उसके भीतर से कुछेक मनुष्य बीच-बीच में व्यस्तता के साथ बाहर निकल आते हैं और उसके बाद हाथों में किसी वस्तु का बोझा ले भीतर चले जाते हैं। कोई एक शब्द भी नहीं बोलता है। एक किनारे कुछ बालक एक फले हुए वृक्ष के तले खेल रहे हैं।

शूर को घासवन से बाहर निकलने का साहस नहीं हुआ। अंधेरा छा जाये, वह इसी की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन वह इसके पहले ही पकड़ लिया गया।

पत्थर से बंधे स्थान में जहां दो नारियां स्नान कर रही थीं, वहां एक चतुष्पद प्राणी दौड़ता हुआ आया। वह बहुत कुछ भेड़िए जैसा दीख रहा था परन्तु आकार में उससे छोटा था। वह हिंस्र प्राणी नहीं है क्योंकि दोनों रमणियां उससे भयभीत नहीं हुई। एक ने उसके माथे को थपथपा दिया और दूसरी ने खिलवाड़ करने के लिए उसके शरीर पर पानी छोट दिया। इससे वह प्राणी एक प्रकार का नृत्य दिखाने लगा।

अचानक वह प्राणी घासवन की ओर देखते हुए उच्च स्वर में भौंकने लगा। दोनों नारियां चौंक पड़ीं। शूर कुछ निर्णय ले कि इसके पहले ही वह पशु उसकी ओर दौड़ पड़ा।

शूर घासवन में दौड़ने लगा। लेकिन उस पशु की आँख में धूल झोंककर निकलना कठिन है। वह बार-बार उसके शरीर पर कूदने की चेष्टा करने लगा। हिरण का कच्चा चमड़ा लटक रहा है, उसी की गंध ने उस प्राणी को आकर्षित किया है। शूर मन ही मन पछताने लगा। लेकिन अब पर्याप्त देर हो चुकी है। अब उस प्राणी से छुटकारा पाना है तो उसकी हत्या करनी ही होगी।

शूर ने बिजली की गति से मुड़कर पशु के पेट में बर्छा भोंक दिया। प्राणी मृत्यु की यंत्रणा से चीत्कार कर उठा। इस प्राणी के गले की आवाज भेड़िये से भी अधिक जोरदार है।

बर्छे को बाहर निकाल शूर ने जैसे ही आँखें उठायीं, उसने देखा, दसेक योद्धा उसे घेर कर खड़े हैं। सबके सब अस्त्र धारण किये हुए हैं और धीरे-धीरे डग रखते हुए उसकी ओर बढ़ रहे हैं।

अकेले इन लोगों से युद्ध करना निरर्थक है। शत्रुओं से घिर जाने पर निश्चित मृत्यु की संभावना रहती है पर दो-चार शत्रुओं को मारते हुए मृत्यु का वरण करना ही वीरों का धर्म है। इसीलिए शूर बर्छा उठाने जा रहा था। लेकिन ये लोग शूर की हत्या करने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं? ये लोग किसी भी ओर से अस्त्र फेंककर पहले ही शूर की हत्या कर सकते थे। उसके बदले वे लोग निकट बढ़ते चले आ रहे हैं। शूर को लगा, हो सकता है, उसकी हत्या न करें। उसे यहाँ आश्रय खाद्य और पेय पदार्थ मिलेंगे। यहाँ वह किसी संगिनी का निर्वाचन कर सकेगा। उसका युवा-हृदय इस प्रकार की आशा से उद्दीप्त हो उठा। शूर ने अस्त्र रख दिया।

योद्धाओं ने शूर को चारों ओर से घेर कर पकड़ लिया और उसे घासवन के बाहर ले आये। पत्थरों के घर से दल के दल स्त्री-पुरुष उसे देखने के लिए बाहर चले आ रहे हैं। उनके मुखमंडल पर क्रोध या हिंसा की भावना की अपेक्षा विस्मय का चिह्न ही अधिक है। कई व्यक्ति अकस्मात् चिल्ला उठे—द-इ-व ! द-इ-व !

शूर को उसी प्रस्तर निर्मित गृह में लाकर खड़ा किया गया जिस पर उसकी पहले-पहल दृष्टि गयी थी। शूर ने देखा, उसके भीतर ढेर सारा घासबीज है। दूर इसी प्रकार के और भी गृह एक के बाद एक सजे हुए हैं। किसी स्थान से ढन-ढन शब्द तैरता आ रहा है। जिस प्रकार के पशु ने उसे पकड़वा दिया है वैसे ही बहुत से पशुओं के गले में लता जैसी डोरी बांधकर पुरुषगण उन्हें जोर से पकड़े हुए हैं। श्वापद समूह डोरी से निकलकर उसकी ओर आना चाहते हैं।

शूर की उपत्यका के सभी पुरुष योद्धा हैं। लेकिन यहां के पुरुषों को देखने से ऐसा लगा जैसे उनके दो दल हैं। एक दल की वेश-भूषा योद्धाओं की तरह है, उनके हाथ में तीक्ष्ण अस्त्र हैं। इन लोगों के जो अस्त्र हैं उनकी बनावट और रूप से वह अपरिचित है। बहुत ही तीक्ष्ण प्रतीत होते हैं। पुरुषों का दूसरा दल नाना प्रकार के पत्थर के अलंकारों से सुसज्जित है। उनमें से कुछ लोगों के शरीर में चर्बी है, शरीर का मध्य भाग गर्भवती नारी की तरह वर्तुल है। नारियां पुरुषों के साथ नहीं, अलग ही खड़ी हैं।

शूर का शरीर गठा हुआ लम्बा चौड़ा है। नासिका तीक्ष्ण। बड़ी-बड़ी आंखें जिनमें नीले रंग का प्रकाश माथे पर घने सुनहले बाल और जानु तक फैले हुए हाथ। वह यहां के लोगों से भिन्न है। वह सिर उठाये खड़ा रहा।

भीड़ धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। शूर सबके कौतूहल की वस्तु होकर बीच में खड़ा है। सशस्त्र योद्धागण पहरा दे रहे हैं। कुछेक पुरुष कुटिल मुखमुद्रा से परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं। शूर का शरीर सिह-रने लगा। एक प्रकार का अशुभ संकेत उसे मिल रहा हो जैसे।

हिरण का चमड़ा देकर इन्हें प्रसन्न किया जा सकता है, यह सोचकर शूर ने उसे आगे बढा दिया। किसी ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया।

सभी उससे नाना प्रकार के प्रश्न पूछ रहे हैं। उसकी समझ में एक

भी नहीं आ रहा है। वह हाथ से दूर पर्वत के शिखर की ओर
रा करता है। इस पर भीड़ का एक अंश हर्षध्वनि करने लगता है।
रा चीत्कार सुनायो पड़ता है—दे-इ-व ! दे-इ-व !
उस पहाड़ के शिखर पर प्रगाढ़ लाल रंग के बीच सूर्य अस्त होने लगा
। उसके चतुर्दिक प्रभामण्डल है। संख्याहीन किरणों की शिखाएँ
काश में हिल-डुल रही हैं। धरती पर एक प्रकार का छायामय
आलोक बिखर गया है जो प्रकृति के रंग को कुछ क्षणों के लिए पूर्णतया
बदल देता है।

शूर ने अपने हाथों को उठाकर मीठे स्वर में कहा, "हे अग्निमय
प्रभु, हे दिन और रात्रि के विभाजनकर्त्ता, आप मेरा मंगल करें।

"हे आकाश के ज्योतिर्मय चक्षु, त्रिभुवन के चर, मनुष्य के सत् और
असत् कर्म के साक्षी, आप मेरा मंगल करें।"

कुछ देर तक बुदबुदाकर मंत्रपाठ करने के बाद शूर ने प्रार्थी की
तरह सामने की भीड़ को ओर निहारा। भीड़ में कोलाहल की मात्रा
क्रमशः बढ़ती जा रही है। फिर एक ऐसा समय आया कि पुरुषों के घेरे
को तोड़कर कई नारियाँ शूर के समीप चली आयीं। वे शूर को छूकर
देखना चाहती हैं।

कोई उसका पैर पकड़ लेती है, कोई उसके हाथ और छाती में मुँह
रगड़ रही है। शूर बिना किसी प्रकार की बाधा दिये चुपचाप खड़ा
रहा। नारियाँ शूर के अंगों का स्पर्श कर पुरुषों से कुछ कह रही हैं।
पुरुषों को जैसे और अधिक विस्मय हो रहा है।

अन्ततः नारियाँ शूर के शरीर के साथ ऐसा क्रिया-कलाप कर
लगीं कि शूर के लिए खड़ा रहना कठिन हो गया। नारियों के स
उसके शरीर का स्पर्श कर रहे हैं, कोई जीभ से उसे चाट रही है
कोई उसके बालों को सहला रही है। हालाँकि उसे किसी भी क
व्यापार में आनन्द का अनुभव नहीं हो रहा है। वह अपने हाथों से
हटाने की चेष्टा करने लगा।

तभी योद्धागण चिल्ला उठे। भीड़ दो भागों में विभक्त होकर पीछे हट गयी। बहुत सारे अलंकारों से सुसज्जित एक पुरुष उनके बीच से चलता हुआ वहाँ आया।

इस पुरुष की लम्बाई की अपेक्षा चौड़ाई ही अधिक है। मुखमंडल श्मश्रु से भरा है। उसके संपूर्ण शरीर में अलंकार तो है ही, साथ ही साथ उसके मस्तक पर भी है।

वह सीधे घूर के सामने आकर खड़ा हुआ और उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। उसके बाद कर्कश स्वर में पूछा, "तुम कौन हो?"

घूर ने यद्यपि शब्दार्थ नहीं समझा परन्तु उसका मर्म उसकी समझ में आ गया और उसने अपने हाथ से दूर पहाड़ की ओर संकेत किया।

उसके पास खड़ी नारियों ने समवेत स्वर में कहा, "देवता, देवता!"

उस नाटे विशाल पुरुष की भौंहों पर बल पड़ गये। घूर के चिबुक को पकड़कर ऊपर उठाया और उसके मुखड़े को अच्छी तरह देखकर बोला, "देवता? यदि देवता है तो इसके कपाल पर अक्षि-चिह्न कहाँ है?

नारियों ने कहा, "इसका शरीर कितना उष्ण है! इसका रक्त हम लोगों के जैसा नहीं है।"

पुरुष ने कहा, "इसके शरीर से कच्चे चमड़े की गंध आती है। देवताओं के शरीर में अगरु का सौरभ रहता है।"

"देखने में यह कितना मनोहर है!"

"इसका परिधान वर्बर जैसा है।"

"इसकी भौंहें कितनी विशाल हैं!"

"यह मूक और निर्बोध है।"

"जिस पहाड़ पर हम लोगों का जाना वर्जित है, वह उसी पहाड़ से आया है।"

"देवता कभी दिन की वेला में नहीं आते है।"

"यह देखने में कितना मनोहर है !"

"यह चर्मरोगी है, तुम लोग इसके संस्पर्श से दूर चली जाओ।"

पुरुष ने दलपति सुलभ गंभीरता से नारियों को दूर हटने का संकेत किया।

अधिकांश नारियाँ हट गयीं परन्तु कुछेक शूर का स्पर्श किये खड़ी रहीं।

सभी कबीलों के बीच एक मात्र युवती नारियाँ ही ऐसी होती हैं जो कभी-कभी दलपति का निर्देश अमान्य कर सकती हैं।

उन्होंने कहा, "देवता ने ही छद्मवेश धारण कर हम लोगों के बीच पदार्पण किया है। पर्वत जहाँ आकाश को छूता है वहीं से देवता के आने की बात थी।"

प्रमुख पुरुष ने कहा, "पुरानी किंवदन्ती है देवता विशालकाय पशु के द्वारा परिचालित शकट पर आरूढ़ हो सूर्य से उतर कर नीचे आयेंगे। यह तो एक पथभ्रष्ट निषाद है।"

"लेकिन हमने ऐसा सुपुरुष मानव कभी नहीं देखा है। देखिये, इसके बालों का रंग देखिये, इसकी त्वचा देखिये, आँख—"

"इसके शरीर से दुर्गंध निकलती है, इसका पहनावा घृणित है, ललाट पर चक्षु-चिह्न नहीं है। यह एक बर्बर मनुष्य है।"

पुरुष ने शूर के बर्छे को उठाकर हिलाया-डुलाया और असीम अवज्ञा के साथ उसे फेंक कर बोला, "हुँ! बर्बरों के उपयुक्त ही है।"

योद्धाओं की ओर मुड़कर उसने संक्षेप में आदेश दिया, "इसका सिर काट लो।"

नारियों के बीच जो सबसे अधिक सुन्दरी थी, वह दौड़ती हुई आयी और पुरुष को आलिंगन में भरकर बोली, "यह बड़ा ही सुन्दर है! यह बड़ा ही सुन्दर है। इसे मुझे दे दो।"

पुरुष ने रमणी के कंधे को थपथपा कर प्यार भरे स्वर में कहा, "इसकी हत्या करने के बाद मैं मूर्त्तिकार से कहूँगा कि इसकी एक सोने की मूर्त्ति

बना दे। तुम उसी को लेकर खेलना। मूर्तिकार जिस प्रकार पशु-पक्षियों की मूर्ति गढ़ता है, इसकी भी मूर्ति गढ़ देगा।"

पुरुष ने जैसे ही एकबार और इशारा किया कि दो योद्धा दो ओर से आगे बढ़ आये। शूर की समझ में उनकी बात नहीं आयी थी इसीलिए वह आसन्न मृत्यु के लिए प्रस्तुत नहीं था। एक योद्धा ने एक तीक्ष्ण अस्त्र से एक ही निमिष में शूर का मस्तक धड़ से अलग कर धरती पर फेंक दिया।

प्रमुख पुरुष ने उस ओर देखा और होंठ विचकाकर हँसते हुए कहा, "देखो, उसका रक्त देवता की तरह नहीं, बर्बर की तरह है।"

इस प्रकार पृथ्वी के प्रथम पर्यटक और खोजी का प्राणान्त हुआ।

इन्दर एक हय की पीठ पर आरूढ़ हो घूम रहा था। वृक् उसे दूर से देखकर हँस रहा था। इन्दर कभी चुपचाप बैठकर नहीं रह सकता। वह सदैव कुछ न कुछ करता रहता है। कभी वह सोमपान कर उन्मत्त हो जाता है, कभी नारियों से आमोद-प्रमोद करने में निमग्न हो जाता है और कभी अकेले ही अस्त्र शिक्षा ग्रहण करने लगता है।

वृक् की प्रियतमा नारी पास ही लेटी है, जैसे कोई हिरणी धूप सेवन कर रही हो। उसका तीन वर्ष का शिशु भी एक किनारे खेल रहा है। सचमुच दोनों हिरणी और हिरण-शावक जैसे ही लग रहे हैं।

वृक् ने शिशु को प्यार करने के विचार से उसे अपने हाथों में उठा लिया। वृक् की गरदन टेढ़ी है इसलिए शिशु को भी तिरछे पकड़ना पड़ता है। इसके कारण शिशु हास्य और क्रन्दन से मिला-जुला शब्द करता है। वृक् उसे डराने के विचार से ऊपर उछाल देता है। लेकिन शिशु को इससे प्रसन्नता ही होती है। वह खिलखिलाकर हँसने लगता है। वृक् अपने सबल हाथों से शिशु को और ऊपर उछाल देता है।

कपाल पर हाथ रख लोपा धूप को ओट किये इस खेल को देख रही है। वह इसका उपभोग कर रही है।

एक बार हठात् वृक् बच्चे को लोपा की ओर फेंक देता है। लोपा भयभीत हो आर्त्तनाद कर उठती है लेकिन हाथ बढ़ाकर उसे थाम लेती है।

लोपा भौंह सिकोड़कर कहती है, "तुमसे सकना कठिन है।"

तभी इन्दर वहाँ आ धमका। उछल कर हय की पीठ से नीचे उतर पड़ा। स्वस्थ हय खुरों को पटक रहा है।

इन्दर के मस्तक पर परिश्रम के कारण स्वेद-बिन्दु छलक आये हैं। उसने हय के मुख में बँधी डोरी को एक निकटवर्त्ती वृक्ष में बाँध दिया। उसके बाद लोपा के निकट धम्म् से बैठकर बोला, "तुम्हारे पास यह जो पेटिका है उसमें क्या सोम है?"

लोपा बोली, "मेरे मस्तिष्क में तुम्हारी तरह सर्वदा सोम की चिन्ता मँडराती नहीं रहती। यज्ञ या उत्सव के अतिरिक्त मैं कभी सोम नहीं पीती।"

वृक् हँसकर बोला, "इन्दर को दूर से ही देखकर तुम्हें सोम लाने के लिए चले जाना चाहिए था। जानती ही हो, उसका स्वागत करना हो तो सोम के बिना काम नहीं चल सकता।"

लोपा बोली, "उसका मैं स्वागत क्यों करूं?"

इन्दर बोला, "मैं बहुत प्यासा हूँ। तुम्हारे पास क्या पानी भी नहीं है?"

लोपा बोली, "नहीं, बच्चे ने सारा पानी समाप्त कर डाला है। ले आऊं?"

इन्दर बोला, "रहने दो। मधु के अभाव में वृक्ष के रस से काम चल जाता है। उसी प्रकार पानी के अभाव में अपने अधरों का तनिक अमृत ही दे दो।"

इन्दर दोनों हाथों से लोपा को जकड़ लेता है और उसके अधरों पर अपने अधर रख चूसने लगता है।

वृक् हंसते हुए कहता है, "तुम्हें क्या लोपा के अधरों में सचमुच ही अमृत का स्वाद लग रहा है? मुझे तो विष का स्वाद मिलता है।"

शिशु के मन में इससे ईर्ष्या जगती है। वह इस पुरुष से अपनी माँ को छुड़ाने का प्रयास करने लगता है।

इन्दर जब उसे छोड़ देता है तो लोपा कृत्रिम क्रोध से उसे ठेलकर कहती है, "उंह, तुम्हारे शरीर से स्वेद की दुर्गंध निकल रही है।"

इन्दर वृक् की ओर मुड़कर बोला "अमृत है या विष, ठीक-ठीक समझ में नहीं आया। तब हाँ, प्यास कुछ-कुछ मिट गयी। आज बहुत देर तक हय की पीठ पर चढ़कर घूमता रहा हूँ।"

वृक् बोला, "इससे तुम्हें क्या आनन्द मिलता है?"

इन्दर ने उत्साह के साथ कहा, "तुम एक बार चढ़कर देखोगे? बहुत ही अच्छा लगेगा।"

"नहीं, मुझे आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के अद्भुत व्यायाम की मुझे आवश्यकता भी नहीं पड़ती।"

"यह व्यायाम नहीं, आनन्द है—वास्तविक आनन्द। तुम्हें लगेगा कि तुम वायु से भी अधिक वेग से जा रहे हो। मैंने निश्चय ही वायु की गति को जीत लिया है।"

वृक् ने अविश्वास के स्वर में कहा, "वायु से अधिक वेग से जाना असंभव है। मैं हय की गति-मुद्रा देख चुका हूँ। उतने अधिक वेगवान होते तो हय आदमी की पकड़ में नहीं आते। वायु तो दूर की बात, यह क्या मेरे भेड़िए से होड़ लगा सकेगा? भेड़िए और अधिक तीव्र गति से दौड़ते हैं।"

वृक् ने जैसे ही सिसकारी दी, भेड़िया कहीं से दौड़कर वहाँ चला आया।

लोपा बच्चे का हाथ थामते हुए बोली, "मैं घर जा रही हूँ। इन्दर, तुम्हें क्या पीने का पानी चाहिए ?"

इन्दर ने हाथ जोड़कर कहा, "देवी, मैं क्या तुमसे इस प्रकार का अनुरोध कर सकता हूँ ? वास्तव में तुम भेड़िए के भय से चली जा रही हो। यही बात कहो न।"

लोपा ने अपने बच्चे को सँभाल कर कहा, "हिंसक पशु के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ करना मुझे बुरा लगता है।"

इन्दर बोला, "भेड़िया तुम्हारे प्रियतम का ऐसा पालतू हो गया है कि बहुतों ने अब भेड़िए का नाम वृक् ही रख दिया है।"

"उसका उदर वृक् के जैसा ही है। प्रभु और उसके पालतू पशु इतना मांस खा सकते हैं कि…"

लोपा बच्चे का हाथ पकड़ चली गयी। लोपा की जीभ कैंची जैसी चलती है—यह बात सभी जानते हैं और उससे भय भी खाते हैं। वृक् के जैसा शान्त व्यक्ति ही लोपा जैसी नारी को मनाकर रख सकता है। शत्रुओं के साथ युद्ध करने के समय के अतिरिक्त वृक् को कभी किसी ने आक्रोश में नहीं देखा है।

भेड़िया हय के सामने और पीछे दौड़-दौड़कर उफ्-उफ् शब्द करता है और उससे छेड़खानी करने लगता है। हय क्योंकि बंधा है इसलिए उसे सुविधा नहीं हो रही। वह पीछे की ओर पैर फेंककर उसे केवल डरा रहा है।

इन्दर बोला, "एक दिन मेरे हय और तुम्हारे भेड़िए की गति की प्रतियोगिता होनी चाहिए।"

वृक् बोला, "इसकी व्यवस्था करो। तुम्हारी हार निश्चित है।"

"लेकिन मैं हय की पीठ पर आरूढ़ होकर उस प्रतियोगिता में सम्मिलित हूँगा। तुम तो अपने प्रिय भेड़े पर चढ़ नहीं सकोगे।"

"वैसी मेरी इच्छा भी नहीं है। पशु की पीठ पर चढ़ना एक प्रकार का अनाचार ही है।"

"लेकिन आजकल तो लोग इन पशुओं के खाद्य-पदार्थ घासबीज को भी खाते हैं। यह अनाचार नहीं है?"

"नहीं, इन्दर। पशु और मनुष्य के खाद्य पदार्थ में अन्तर होता है। हम अपने खाद्य पदार्थ को अग्नि-संस्पर्श से शुद्ध कर लेते हैं। क्यों, तुम्हें क्या घासबीज अच्छा नहीं लगता?"

"न तो अच्छा लगता है और न बुरा। तब हाँ, उदर-पूर्त्ति अवश्य हो जाती है।"

"इसके कारण हम लोगों की खाद्य-समस्या बहुत कम हो गयी है।"

"मैंने देखा है, यह खाद्य-पदार्थ नारियों को अधिक प्रिय है। पुरुष के लिए आमिष भोजन ही उत्कृष्ट है।"

भेड़िया हय से बहुत अधिक छेड़खानी कर रहा था। इन्दर से अब सहा नहीं गया। उसने एक पत्थर उठाकर जैसे ही मारा कि वह भाग गया।

वृक् यह देख रहा था परन्तु कुछ भी न बोला। आगे बढ़कर हय की चिकनी पीठ पर हाथ रखा। हय अनवरत उस स्थान पर अपने चमड़े को संकुचित करने लगा।

वृक् बोला, "हय का मांस अत्यन्त सुस्वादु होता है। बहुत दिनों से नहीं खाया है। इन्दर, सुना है, तुमने हय की बलि करना मना करा दिया?"

इन्दर ने तनिक घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, मैंने मना नहीं किया है। मैंने कहा था कि हम लोगों के हय की संख्या समाप्त होती जा रही है। पाँच हाथ की उँगलियों के परिमाण में ही अब वे बच गये हैं। इसलिए इन्हें अभी नष्ट करने से लाभ ही क्या है?"

"आहार करने का अर्थ क्या नष्ट करना है? भल्ल तुम्हारा इस प्रकार का निर्देश सुनेंगे तो बिगड़ेंगे। हमारे पशुओं पर प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार है। मेरा भेड़िया मुझे चाहे जितना भी प्रिय...

ही लेकिन यदि कोई उसका आहार करना चाहे तो मुझे तुरन्त उसकी
या करने को प्रस्तुत होना होगा ।"

इन्दर इस बात से तनिक आहत हुआ । दूसरी ओर मुँह घुमाकर
ोला, "लेकिन चाहे जो कहो, इस प्रकार के सुन्दर पशु की हत्या करने
का कोई अर्थ मेरी समझ में नहीं आता । हम लोगों के आइबेक्स, भेड़ा
या गोवत्स की संख्या कम नहीं हुई है । देखो तो सही, यह पशु कितना
सुन्दर और तेजस्वी है ! उसके चिकने शरीर से प्रकाश छिटकता है ।
यह जब हिनहिनाता है तो कितनी दूर से सुनायी पड़ता है । पके फल
के वर्ण की तरह उसके कपाल पर एक तिलक है, जैसे वह विजय का
प्रतीक हो । वृक्, तुमसे एक अनुरोध करूँ, मानोगे ?"

"कहो ।"

"तुम हय-बलि रोक दो । तुम्हारे आदेश का सभी पालन करेंगे ।"

"इस प्रकार का आदेश मेरे मनोनुकूल है या नहीं, यह तो बाद की
बात है । लेकिन भल्ल के रहते मैं क्या इस प्रकार का आदेश दे सकता
हूँ ?"

"सब जानते हैं कि भल्ल की मृत्यु के बाद तुम्हीं दलपति होने जा
रहे हो । तुम उनकी सबसे प्रिय संतान हो ।

"छि: इन्दर, तुम यह क्या कह रहे हो ? तुमने इस प्रकार के शब्
का उच्चारण किया ?"

"मनुष्य मरणशील है । भल्ल की एक न एक दिन मृत्यु होगी ही

"महावीर भल्ल कम से कम एक सौ शरद् अपनी आँखों से
जायेंगे ।"

"फिर भी वह चिरजीवी नहीं रहेंगे ।"

"अधिकार प्राप्ति की इच्छा से जो व्यक्ति पिता या दलप
मृत्यु की कामना करता है, मैं उसे घृणा की आँखों से देखता हूँ ।

"वृक्, मुझे भूल मत समझो । मैंने उस अर्थ में नहीं क
स्वाभाविक रूप में जो होता है, मैं वही कहना चाहता था ।"

"इन्दर, तुम्हारे प्रति मुझमें क्रोध जग रहा है।"

"वृक्, शान्त होओ। मैं तुम्हारे क्रोध के योग्य नहीं हूँ। मैं तो तुम्हारा मात्र एक साधारण अनुचर हूँ।"

"दुःशील अनुचर न रखना ही श्रेयस्कर है।"

"भल्ल मेरे पिता नहीं हैं पर मैं उन्हें पिता से अधिक सम्मान देता हूँ। वह हम सभी के महा पितर् हैं। इसके अतिरिक्त मेरी माँ अदिति के भल्ल अत्यन्त प्रिय पात्र थे। उन्होंने हमें सुस्थिर वास-स्थान दिया है।"

वृक् इन्दर की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से निहार रहा है। इन्दर की आँखों में चंचलता है। उसकी बात का ऐसा टेढ़ा अर्थ होगा, उसे ऐसी आशा नहीं थी। वृक् में महत्त्वाकांक्षा नहीं है। भल्ल के प्रति उसमें जो समर्पण-भाव है वह समस्त प्रश्नों के परे की बात है। वृक् भूल गया है कि भल्ल ने स्वयं ही अपने असमर्थ पिता को हटाकर एक दिन दल का नेतृत्व ग्रहण किया था। इतना अवश्य है कि भल्ल अब भी असमर्थ नहीं हुए हैं, लेकिन बीच-बीच में उन्हें जो मति भ्रम हो जाता है, वृक् क्या यह भी परिलक्षित नहीं कर पाता है?"

इन्दर ने पुनः कहा, "वृक्, मैं दूसरी बात कहना चाहता था। मैं कभी भल्ल का अनिष्ट नहीं चाहता।"

वृक् बोला, "इन्दर, तुम मेरे प्रिय सुहृद हो, इसलिए मैं क्रोध सवरण कर रहा हूँ। किसी दूसरे ने मेरे दलपति की संभावना की बात का उच्चारण किया होता तो उसी क्षण उसका मस्तक काट दिया होता। लेकिन तुम्हारी बहुत सारी दुष्टता स्वयं भल्ल तक क्षमा कर देते हैं। फिर भी एक बार और मेरे सामने यह शपथ खाओ कि उनके प्रति अनुगत रहोगे।"

इन्दर अभिमानी बालक की तरह धरती पर घुटनों के बल बैठ बुदबुदाया, "मैं भल्ल और तुम्हारे प्रति पूर्णतः अनुगत रहूँगा। भल्ल के

इच्छानुसार शूर का उद्धार करने के निमित्त किसी भी विपत्ति को वरण करने को प्रस्तुत रहूँगा।"

अब वृक् के मुखमंडल पर क्षीण हँसी तिर आयी। उसके बाद बोला, "शूर को बहुत दिनों से नहीं देखा है। वह एक प्रकार से बालक ही है, अकेले-अकेले क्या कर रहा है, कौन जाने !"

"हम शूर को लौटाकर ले आयगे। भल्ल पुनः उसका आलिगन करेंगे।"

वृक् बोला, "खैर, तुम हय के बारे में क्या कह रहे थे ?"

इन्दर ने उत्साहित होकर कहा, "तुम भल्ल को समझाओ जिससें कि वह हय-बलि निषिद्ध कर दें।"

"इससे क्या लाभ होगा ?"

"हयों का भक्षण न कर उन्हें दूसरे काम में लगाया जा सकता है। इतने सुन्दर प्राणी की हत्या न करना ही उचित है।"

"सुन्दर वस्तु क्या भक्षण के अयोग्य है ? मैं यह अवश्य ही स्वीकार करता हूँ कि यह प्राणी सुदर्शन होता है। इससे मेरी क्षुधा की लालसा तीव्र हो जाती है।"

"लेकिन वृक्, बहुतेरी ऐसी सुन्दर वस्तुएँ हैं जिनका हम खाद्य के रूप में उपयोग नहीं करते, जैसे पुष्प। हम पुष्प के रूप को देखते हैं और उसके फल खाते हैं। इस हय नामक पुष्प का फल गति है। गति ही हमारा भोज्य पदार्थ है।"

"ठीक-ठीक समझ नहीं सका।"

"इस पशु की गति और वेग को हम यदि उपयोग में लायें तो हम समस्त युद्धों में विजयी हो सकते हैं। इस प्रकार हमारे लिए और अधिक भोज्य पदार्थ आयेगा।"

"युद्ध से गति का कौन-सा सम्बन्ध है ? युद्ध में शक्ति के परीक्षण से जय या पराजय प्राप्त होती है। तुम क्या पलायन की बात कर रहे

हो ? उसमें सचमुच ही प्रवल गति की आवश्यकता पड़ती है। महावीर इन्दर पलायन की बात करेगा, यह तो मैं नहीं जानता था।"

"मैं पलायन की बात नहीं कर रहा था। आक्रमण के समय भी गति और वेग बड़ा ही सार्थक सिद्ध होता है। शत्रुओं को तैयार होने का अवसर न देकर यदि उन पर टूट पड़ें—"

"नहीं, इन्दर, किसी पशु की सहायता से युद्ध में जय प्राप्त करना मैं वीरों के उपयुक्त नहीं समझता। मैं अपने बर्छे पर ही निर्भर करता हूँ।"

"शत्रु यदि आँधी के वेग में तुम पर झपट पड़े तो तुम उस पर प्रत्याक्रमण कर सकते हो ?"

वृक् के अधरों के कोने में मुसकराहट तिर आयी। बोला, "नहीं कर सकूँगा ? क्यों न इसकी परीक्षा हो कर ली जाये। तुम हय की पीठ पर बैठ मेरी ओर आओ। देखूँ, मैं प्रतिरोध कर पाता हूँ या नहीं।"

इन्दर अपने वक्तव्य को प्रमाणित करने के लिए तत्काल राजी हो गया। वह बोला, "लड़ाई का एक पूर्वाभ्यास हो जाये। तुम अवश्य ही मेरी बात स्वीकार लोगे।"

हय का बंधन खोल इन्दर उसकी पीठ पर आरूढ़ हो गया। हय तीव्र गति से बहुत दूर निकल गया। एक स्थान पर पहुँच उसने हय को घुमाया। चिल्लाकर वृक् से कहा, "अब मैं आ रहा हूँ। तुम मुझे रोको तो सही।"

उपत्यका के ऊँचे भाग में इन्दर परम रूपवान घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है। उसके सिर पर घने बाल बिखरे हैं, मुखमण्डल की पतली दाढ़ी हवा में उड़ रही है। उसकी आँखों को देखने से लगता है, वह दुःसाहस की प्रतिमूर्त्ति है। आकाश के पेक्षापट पर वह घोड़े के साथ उछल पड़ा। उस दृश्य ने निसर्ग को और भी सुन्दर बना दिया।

वृक् अपने बर्छे को उठाकर चुपचाप खड़ा है। उसकी गरदन और

अधिक टेढ़ी हो गयी है। आँखों की दृष्टि स्थिर है, होठों पर मुसकराहट ज्यों की त्यों बनी है।

इन्दर जैसे ही कुछ डग आगे बढ़ा कि वृक् ने अपना बर्छा फेंका। बर्छा बहुत ही विपत्तिजनक ढङ्ग से इन्दर के माथे से ऊपर उड़ता हुआ चला गया। इन्दर ने यदि ठीक समय पर अपना सिर झुका न लिया होता तो बर्छा उसका सिर उड़ा कर ले गया होता।

इन्दर के शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी। तीव्र गति से आने के समय वह स्वयं को अप्रतिरोध्य समझ रहा था। लेकिन वृक् ने उसकी परवाह ही न की। वृक् का सामना करना सचमुच ही कठिन है। उसकी क्षमता अलौकिक ही कही जा सकती है। उसका लक्ष्य जिस प्रकार अचूक है, गति भी वैसी ही तीव्र है।

इन्दर लौटकर गया और बर्छे को उठाकर वृक् के पास चला आया।

वृक् ने हँसते हुए कहा, "क्या हुआ ?"

इन्दर का मुखड़ा म्लान हो गया। बोला, "एक मात्र तुम्हीं ऐस
कर सकते हो। और-और साधारण योद्धा इस प्रकार युद्ध नहीं क
सकते हैं।"

"मैं दूसरों की शक्ति के बारे में सोचकर युद्ध में सम्मिलित न
होता। अपनी शक्ति पर ही भरोसा रखकर मैं युद्ध करता हूँ। इ
अतिरिक्त मैं एक साधारण योद्धा हूँ, मेरी अपेक्षा तुम लोगों में से अ
अधिक वीर हैं।"

इन्दर अब कुछ नहीं बोला। वृक् में इतनी विनम्रता है कि
गुणों का अधिक उल्लेख करने से वह ऊब उठता है। अपने वक्त
वृक् के समक्ष प्रमाणित नहीं कर सका इसलिए उसका मन उदास हो
जब वृक् ही उसे समझ न सका तो भल्ल भला उसे क्या समझेगा

वृक् बोला, "मरुत्त का दल प्रायः एक पखवारे से इस अ
करने नहीं आया है। सुना है, उनके यहाँ खाद्य-पदार्थ का बहुत
है। वे लोग कैसे चुपचाप बैठे हैं ?"

इन्दर बोला, "तुम्हारे ही भय से उन लोगों ने आना बन्द कर दिया है। वे लोग तुमसे सबसे अधिक डरते हैं। प्रत्येक युद्ध में एक प्रकार से तुमने अकेले ही उन लोगों को पराजित किया है।"

"नहीं-नहीं; मेरी शक्ति ही क्या है! बात वैसी नहीं है। मुझे लगता है, अन्ततः वे भल्ल की मित्रता का प्रस्ताव मानने को सहमत हो जायेंगे। भल्ल की नीति की जय होगी।"

इन्दर इस बात से सहमत नहीं है। लेकिन उसने अब इसका विरोध नहीं किया।

थोड़ी देर बाद ही वर्षा होने लगी। घनघोर वर्षा। वृक और इन्दर छाजन की ओर दौड़ पड़े। यह वर्षा अब कितने दिनों तक लगातार होती रहेगी, कौन जाने! इस समय की वर्षा बहुत खराब होती है, थोड़ा-सा भीग जाये तो नाक से पानी बहने लगता है।

इन्दर ने दौड़ते हुए कहा, "यह असमय की वर्षा और आवश्यकता रहने पर अनावृष्टि मुझे असहनीय जैसी लगती है।"

वृक ने कहा, "क्या करोगे! आकाश से युद्ध करना तो कठिन है। देखो, तुम अपने धनुष-बाण से यदि मेघ को वेध सको—"

युवावस्था के अहंकार के कारण इन्दर को लगा, एक दिन वह हय दौड़ाता हुआ सचमुच ही वहाँ पहुँच जायेगा जहाँ आकाश भूमि का स्पर्श करता है—वहाँ वह आकाश से भी युद्ध करेगा।

एक दिन और एक रात तक लगातार वर्षा होती रही। इस समय घर के भीतर पड़ा रहना पड़ता है इसलिए शरीर में स्फूर्ति नहीं रहती, आहार के प्रति कोई रुचि नहीं रह जाती। रति-संभोग भी जैसे तृप्ति-हीन प्रतीत होता है।

नदी का पानी बढ़ जायेगा, इस आशंका से भल्ल को क्लेश का अनुभव होने लगा। बच्चे इस समय इतना चिल्लाते हैं कि टिकना कठिन हो जाता है। उनकी माताएँ भी वैसी ही हैं, उन्हें डाँटकर चुप नहीं रख सकते हैं!

भल्ल उठकर प्रवीणा के पास गया। शायद वह बता दे कि पानी बरसाना कब बन्द होगा।

प्रवीणा सोयी हुई थी। भल्ल ने जैसे ही झकझोरा, उसने आँख खोलकर देखा। आँखें लाल हैं। शरीर में भी यथेष्ट उत्ताप है।

भल्ल समझ गया, प्रवीणा बहुत अस्वस्थ है। भल्ल को देखकर प्रवीणा फुसफुसाकर बोली, "क्या है अर्हंत् ? लौट आये ?"

अर्हंत् भल्ल के जन्मदाता थे। बहुत दिन पहले मृत्यु हो चुकी है। प्रवीणा आँखों से गलत देख रही है। भल्ल को विश्वास हो गया कि प्रवीणा की आयु अब लम्बी नहीं है। यह तो सर्वविदित है कि आसन्न मृत्यु के पूर्व लोग मृत व्यक्तियों को अपनी आँखों से देखते हैं।

भल्ल प्रवीणा के निकट से दूर चला गया। उसने गरदन घुमाकर चारों ओर देखा। वह कभी किसी मृत व्यक्ति को देख नहीं पाता है। इड़ा ने बताया था, उसकी मृत्यु में अब देर नहीं है। इड़ा ने भूल से ऐसा बताया है। उसका शरीर अब भी ढेरों विपत्ति और दुख को वहन करने में समर्थ है। उसे कोई न कोई कीर्त्ति रखकर जाना है।

भल्ल ने आग्नेयगिरि के लावे से तैयार किये गये अपने बर्छे को उठाकर बाहर वर्षा में फेंक दिया। उसके बाद डग मापता हुआ दौड़ता हुआ गया और उसे उठाकर ले आया। दूरी थोड़ी-सी भी कम नहीं हुई है। इतने जोर से बर्छा और कौन है जो फेंक सकता है ? हो सकता है, वृक् फेंक दे, परन्तु वृक् का बर्छा इतना भारी नहीं है।

भल्ल ने स्वस्ति का निश्वास लिया। वह अब भी पूर्ण शक्तिशाली है। केवल छाती में बीच-बीच में थोड़ी-सी कँपकँपी का अनुभव होता है। वह वैसा कुछ नहीं है।

दूसरे दिन मध्याह्न वेला में वर्षा रुक गयी। आकाश उस समय भी बादलों से भरा था। भूखे पशुओं को चारणक्षेत्र में बिना ले गये काम नहीं चलेगा। पुरुषगण बाहर निकल आये। आजकल सीमान्त पर सदैव

केवल नारी और पुरुष के बीच देखने में आया है, पुरुष-पुरुष के बीच नहीं।

सभी भल्ल के आदेश की प्रतीक्षा में खड़े हैं। भल्ल दूर की ओर आँखें दौड़ाये चुपचाप खड़ा है। वह देखना चाहता है, इन दोनों व्यक्तियों के पीछे शत्रु की कोई पंक्ति है या नहीं।

मशालधारी दोनों व्यक्ति कई पग आगे बढ़कर खड़े हो गये। उसके बाद वे एक बार सामने की ओर और एक बार पीछे की ओर मुड़े। अर्थात् वे दिखाना चाहते हैं कि उनके पास कोई अस्त्र नहीं है। वे लोग बर्छा और तीर-धनुष रखकर आये हैं।

भल्ल ने हाथ उठाकर उन्हें और निकट आने का आवाहन किया। दोनों मशालधारी व्यक्तियों ने हाथ उठाकर कुछ कहा। इतनी दूर से यद्यपि उसकी बात सुनायी नहीं पड़ी लेकिन भल्ल को उसका तात्पर्य समझ में आ गया। आश्वासन मिलने पर ही वे आगे बढ़ सकते हैं।

उत्साह के अतिरेक से भल्ल स्वयं उनका स्वागत करने जाना चाहता था परन्तु कुछ सोचकर रुक गया। ऐसा करना ज्यादती होगी।

उन लोगों का दलपति मरुत्त स्वयं नहीं आया है। अतः इस ओर के दलपति होने के नाते भल्ल का स्वयं जाना उचित न होगा। मरुत्त ने अपने पुत्र कारु और कबीले के श्रेष्ठ वीर भामह को भेजा है। इन दोनों को प्रतिभू रखकर मित्रता के बंधेज की आलोचना की जा सकती है।

सम्मान के अनुसार भल्ल के पुत्र को ही भेजना युक्तिसंगत है। उसने वृक् को बुलाया।

वृक् सामने आ माथा झुकाकर खड़ा हो गया। भल्ल ने कहा, "वे लोग निरस्त्र होकर आये हैं। वृक्, तुम अपना अस्त्र रखकर उन लोगों के पास जाओ और आलिंगन कर उनके प्रति अपना सौभ्रात्र प्रदर्शित करो। स्मरण रखना, मरुत्त की गोष्ठी के लोग हमारे सनाभि (सगोत्र) हैं। किसी समय हम अलग-अलग हो गये थे। आज हम पुनः मिलने जा रहे हैं। इसका गौरव शत्रु पर जय प्राप्त करने से भी बढ़कर है। उन्हें

आदर के साथ यहाँ ले आओ। अपने साथ बलवान हवि को लेते जाओ।"

इन्दर ने वृक् के साथ जाना चाहा था। परन्तु मल्ल ने उसका चयन नहीं किया। मल्ल के सामने कुछ कहा नहीं जा सकता।

रा भागी-भागी आयी और इन्दर का हाथ दबाकर बोली, "वह रहा भामह। अब तुम अपनी प्रतिज्ञा का पालन करो।"

इन्दर बिना कुछ उत्तर दिये तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर निहारता रहा।

वृक् और हवि ने अपने अस्त्र भूमि पर रख दिये और धीर पग रख अरण्य की ओर बढ़ने लगे। उन्हें देखकर कारु और भामह कई पग आगे बढ़ आये।

मल्ल ने कई रमणियों को आदेश दिया, "तुम लोग अतिथियों के बैठने के लिए आसन बिछाकर रखो। उनकी परिचर्या के लिए खाद्य एवं पेय पदार्थ ले आओ।"

सभी उत्सुकता से दूर की ओर निहार रहे हैं। एकमात्र द्राखमा मल्ल का आदेश पालन करने कुटीर के भीर चली गयी। द्राखमा चली गयी थी इसलिए बाद वाले दृश्य को देख नहीं सकी।

वृक् और हवि पहाड़ के ऊपर की ओर थोड़ी दूर तक एक समतल स्थान पर गये और प्रतिपक्ष से थोड़ी दूरी बनाये रखकर खड़े हो गये। कारु और भामह पुनः कई पग आगे बढ़ आये। अब चारों व्यक्तियों ने अपने अस्त्रहीन हाथों को ऊपर उठा लिया।

उसी प्रकार हाथ रखे वे आमने-सामने बढ़ रहे हैं। एकदम सामने आ वे उसी स्थिति में चुपचाप खड़े हो गये।

वृक् के मुख से ही पहले शब्द बाहर निकले, "आप लोगों का कल्याण हो।"

उसके बाद उन्होंने एक-दूसरे का आलिंगन किया। आलिंगन-बद्ध

के बाद वृक् और कुछ कहने जा रहा था, परन्तु उसकी बात समाप्त सकी।

दूसरे ही क्षण आकस्मिक रूप में जो कुछ घटित हो गया उसे समझने ही कुछ समय बीत गया। यहाँ तक कि बलवान हवि तक समझ नहीं का कि वृक् ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है।

वृक् हाथ से छाती दबाये हाहाकार से मिले-जुले स्वर में जोरों से चिल्ला उठा।

हाँ, मुझे
साँप ने काट लिया
साँप पर कभी
विश्वास नहीं करो!...

वृक् के वक्षस्थल के मध्य भाग से रक्त की धारा बह रही है। वह धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा। हवि ने देखा, कारु और भामह पीछे की ओर मुड़ तीर-गति से भागे जा रहे हैं। हवि उनका पीछा करने के बदले यह देखने लगा कि आस-पास कहीं साँप है या नहीं।

भल्ल और अन्य योद्धाओं ने कुछ क्षणों की ही देर की थी। कारु और भामह को पलायन करते देख उनके मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। सभी एक साथ उस ओर दौड़ पड़े।

इन्दर एवं अन्यान्य योद्धा वृक् के पास आ एक पल उसकी ओर देखते ही घटना के बारे में समझ गये। उन्होंने अब देर नहीं की, अरण्य की ओर दौड़ पड़े।

कारु और भामह पकड़ में नहीं आये। वे बहुत ही पहले अरण्य अंधकार में अन्तर्धान हो चुके हैं। इन्दर के दल ने जैसे ही कुछ भी भाग में प्रवेश किया कि उन पर तीरों की बौछार होने लगी। शत्रु तैयार थे। इन लोगों की समझ में आ गया, इस युद्ध में निरर्थक शक्ति का अपव्यय होगा।

इन्दर के दल के वीरगण पीछे हट आये और अरण्य के बाह

बद्ध होकर खड़े हो गये। मरुत्त ने यदि दलबल के साथ आज ही आक्रमण करने की योजना बनायी हो—तो यहाँ की बस्ती तथा नारी-शिशु की रक्षा के निमित्त इन्दर के लिए यहाँ से प्रतिरोध करना युक्तिसंगत है।

भल्ल दौड़ता हुआ आया और वृक् के माथे को अपनी जांघ पर उठाकर रख लिया। इसके पहले ही वृक् ने अन्तिम सांस ले ली है। उसकी सफेद आँखें जैसे भल्ल की ओर ही निहार रही हैं।

भल्ल विह्वल हो गया है, उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकल रहा है। अपने प्रियतम पुत्र—गोष्ठी के वीरोत्तम वृक्—को भल्ल ने निरस्त्र स्थिति में मृत्यु का वरण करने के लिए विवश किया? मृत्यु के पूर्व वृक् अवश्य ही अपने पिता से घोर असन्तुष्ट हुआ होगा। कहीं पिता से बात-चीत न करना पड़े संभवतः इसीलिए वृक् ने शीघ्र ही अन्तिम साँस ले ली।

भल्ल को अपने जीवन में इतनी बड़ी पराजय का सामना नहीं करना पड़ा है। उसने शून्य दृष्टि से अरण्य की ओर निहारा। मरुत्त ने वीर-धर्म का इस प्रकार उल्लंघन किया? वृक् ने उनकी ओर मित्रता का निरस्त्र हाथ बढाया था। उन लोगों ने उसी बाहु को ग्रहण करने के बहाने उसे डँस लिया! उन लोगों ने सोचा है, लगातार कई युद्धों में भल्ल ने भाग नहीं लिया है और मित्रता का प्रस्ताव रखा है—इसका अर्थ है, भल्ल हीनबल हो गया है। इसीलिए वे इस चातुरी से यहाँ के श्रेष्ठ वीर वृक् की हत्या करके चले गये।

भल्ल ने देखा, संध्याकालीन सूर्य के रंग के जैसा एक छोटा अस्त्र वृक् की छाती में धँसा है। निरस्त्र होने का बहाना कर वे लोग इस मारक अस्त्र को छिपाये हुए थे। क्रोध, दुख और हताशा से भल्ल का शरीर काँपने लगा। उसके मुँह से एक भी शब्द बाहर नहीं निकला।

तब तक नारियाँ भी वहाँ पहुँच चुकी थीं। ब्राखमा वृक् के ऊपर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसका विलाप वातास को भी स्तब्ध कर रहा

सिर कटी हिरणी की तरह द्राखमा छटपट करने लगती है। कोई रोक नहीं पा रहा है।

द्राखमा भल्ल का तिरस्कार नहीं करती है वरन् अपने भाग्य को ही क्कारने लगती है। द्राखमा बार-बार कहती है, उसके जठर में निश्चय विष है। अन्यथा उसकी एक भी सन्तान दीर्घजीवी क्यों न हुई।

लोपा पत्थर की मूर्ति की नाईं एक ओर चुपचाप खड़ी थी। उसके हाथ में वृक् का बर्छा था। कुछ देर बाद वह झुककर शान्त भाव से द्राखमा से बोली, "देवी, तुम्हें बाद में भी शोक करने का अवसर प्राप्त होगा। मुझे अपने प्रियतम को अन्तिम बार छूने का अवसर दो।"

द्राखमा के हट जाने पर लोपा ने वृक् के मुँह पर अपने दोनों हाथ रख दिये। धीरे-धीरे उसे झकझोर कर बोली, "उठो वृक्, मेरी स्पर्श ने तुम्हारी जड़ता को बहुत बार दूर कर दिया है। आज तुम अब तक निद्रामग्न क्यों हो ? उठो, देखो, तुम्हारी लोपा तुम्हारे श्रेष्ठ अस्त्र बर्छे को लेकर आयी है, जो तुम गलती से छोड़कर चले आये थे। उठो, प्रति-शोध नहीं लोगे ? अपने शिशु पुत्र को गर्वित रखने के लिए तुम कीर्ति छोड़ नहीं जाओगे ?"

अचानक लोपा ज़ोर-ज़ोर से पत्थर पर माथा ठोंकने लगती है। उसे तत्काल पकड़ न लिया गया होता तो वह अपना माथा चूर-चूर कर देती। कई व्यक्ति उसे शक्ति का प्रयोग कर खींचते हुए ले जाते हैं।

भल्ल नीरव हो सब कुछ देख रहा था। अब वह वृक् के शरीर क उठाकर खड़ा हो गया। उसके मुख-मण्डल पर आश्चर्यजनक उदासीन है। उसने पदस्थिति के क्रम से गोष्ठी के प्रत्येक व्यक्ति के मुखमण्ड की ओर देखा। उसके मुँह में भाषा नहीं है। किसी ने कोई प्रश्न न किया। हालांकि एक नीरव प्रश्न वहाँ की वायु में तैर रहा है।

दो व्यक्तियों को छोड़कर उपत्यका के सभी लोग वहाँ उपस्थित इड़ा और कन्द इतना कुछ घटने पर भी कन्दरा के भीतर ही र हैं। इड़ा कलाकार है—किसी भी घटना से उसका ध्यान नहीं टूट

किसी कारणवश उस समय मल्ल को इड़ा का ही स्मरण हो आया। वह मृत सन्तान को अपने वक्ष पर ले धीरे-धीरे निशि गुहा की ओर बढ़ने लगा। सभी निःशब्द उसका अनुसरण करने लगे। युवा सैनिक वृन्द उस समय भी अरण्य के किनारे पहरे पर नियुक्त थे। निशि गुहा के बाहर खड़े हो मल्ल ने पुकारा, "इड़ा, इड़ा!"

इड़ा जैसे ही हाथ में मशाल थामे बाहर आयी, मल्ल ने अत्यन्त शान्त स्वर में कहा, "इड़ा, देखो, उन लोगों ने मेरे प्रियतम पुत्र की कैसे हत्या कर दी है!"

इड़ा ने मशाल से प्रकाश को केन्द्रित कर मल्ल के मुखड़े को भली-भाँति देखा। उसके बाद बोली, "महावीर वृक् की सुकीर्ति दीर्घजीवी होवे।"

एक मात्र इड़ा के मुखड़े पर ही शोक का कोई चिह्न प्रस्फुटित नहीं हुआ है। वह मृत्यु को स्वाभाविक रूप में ग्रहण कर सकती है।

मल्ल बोला, "और कोई भी पुरुष इतनी यंत्रणा सहकर नहीं मरा है—क्योंकि वह अस्त्रहीन था।"

इड़ा ने पुनः वृक् के मुखमण्डल की ओर निहारते हुए कहा, "उसकी मृत्यु आघात के साथ-साथ ही हुई है। उसे यंत्रणा का कोई बोध नहीं था।"

'मैं ही उसकी मृत्यु के लिए उत्तरदायी हूँ।"

"किसी जीवन या मृत्यु के लिए कोई व्यक्ति उत्तरदायी नहीं होता। प्रियजन की मृत्यु पर वैराग्य होना या आत्म-ग्लानि करना तुम्हें मल्ल, शोभा नहीं देता।"

इड़ा ने वृक् के वक्ष में धँसे अस्त्र को बाहर निकाल लिया। पहले उसकी स्वयं परीक्षा की। पशु की हड्डी या मिश्र धातु से वे लोग जिस प्रकार छुरी बनाते हैं उसी प्रकार का है, लेकिन वह बहुत ही तीक्ष्ण है और उसका रंग भी पूर्णतया नवीन है।

इड़ा छुरी को भल्ला के सामने रखकर बोली, "इस प्रकार का अस्त्र
ले देखा है ?"

"नहीं।"

"संभवतः इसके अग्रभाग में विष लगा हुआ था। भल्ल, सावधान
जाओ। मरुत्त को नये अस्त्र का पता चल गया है। वृक् पर उसका
प्रयोग कर तुम्हें चेतावनी दे गया। अब ही यदि तुम उन पर आक्रमण
कर उन लोगों की सारी वस्तुओं पर अधिकार न जमा लेते हो तो तुम्हें
भारी विपत्ति का सामना करना होगा। मैंने कहा था न, दूसरे के द्वारा
आविष्कृत अस्त्र से हम शक्तिशाली होंगे।"

भल्ल ने अब धीर परन्तु उदात्त स्वर में कहा, "शीघ्र ही मैं मरुत्त
का सवंश संहार करूँगा, इस संबंध में मन में किसी प्रकार का संशय
मत रखो। वज्र से चाहे आकाश विदीर्ण हो जाये, अग्नि पृथ्वी का ग्रास
कर ले, फिर भी मैं इस संकल्प से नहीं डिगूँगा। मैं पृथ्वी के अन्तिम
छोर तक मरुत्त का पीछा करता रहूँगा। इसके कारण यदि मेरे समस्त
पशु नारी और शिशुओं की भी मृत्यु हो जाये, तो हो। उसने सोचा था,
मैं कापुरुष हूँ, इसी से मित्रता की चाह कर रहा हूँ। उसने मेरी
शुभेच्छा का मूल्य नहीं चुकाया। मैं सर्वप्रथम उसके पुत्र की मृतदेह उसकी
छाती पर उछालूंगा। उसके सामने भामह को टुकड़ा-टुकड़ा कर काट
डालूंगा, उसके बाद अपने हाथों से गला घोंट कर उसे मारूँगा। अस्त्रा-
घात से वीरों की जैसी मृत्यु होती है, मैं उसे वह मरण नहीं मरने
दूँगा।"

महावीर भल्ल उस समय प्रज्वलित रुद्र जैसा ही भयंकर दीख
लगा। सभी निर्वाक् हैं, इड़ा तीक्ष्ण दृष्टि से भल्ल की ओर निहार र
है। उसी दृष्टि का अनुसरण कर भल्ल ने आक्रोश भरे स्वर में पू
"तुम क्या अब भी कहना चाहती हो कि मेरा आयुष्काल संक्षिप्त है

इड़ा ने उत्तर दिया, "भल्ल, मैं तो तुमसे कह ही चुकी हूँ कि जि
समय संक्षिप्त रहे उसके लिए उचित यही है कि उस समय का

सदुपयोग करे। तुम विलंब क्यों कर रहे हो? देवता तुम्हारे सहायक होवें।"

"तुम बता दो कि युद्ध-यात्रा के लिए कौन-सी तिथि सर्वोत्तम है। तुम देववाणी श्रवण कर सकती हो। तुम्हीं हम लोगों को निर्देश कर सकती हो।"

"तुमसे मैंने यहाँ का आयोजन करने को कहा था न ! तुम नदी बाँधने की झोंक में इतने तल्लीन हो गये थे कि यज्ञ की बात भुला बैठे।

"कल अपराह्न ही यज्ञ का प्रारंभ हो जायेगा। आज मेरे पुत्र का पारलौकिक कर्म होगा। इड़ा, तुम देवताओं से उसकी आत्म की सद्गति के लिए प्रार्थना करो।"

भल्ल वृक् की मृतदेह अपनी छाती पर रख लौटने लगा। एक स्थान पर अचानक ठिठक कर खड़ा हो गया और मृत संतान के मुखड़े की ओर निहार फुसफुसाकर कहा, "वृक् यदि संभव हो तो मुझे क्षमा कर देना।"

यज्ञ भूमि को गोलाकार घेरे सब बैठे है। बीच में अग्नि लहक रही है। भल्ल युद्ध यात्रा पर निकलने के बाद जब तक लौटकर नहीं आता है तब तक यह अग्नि प्रज्वलित रहेगी। बीच में कहीं वर्षा न होने लगे इसलिए छाजन की व्यवस्था की गयी है।

अग्नि के ईंधन के लिए पशुओं की चर्बी और घी प्रचुर परिमाण में है। तीन बछड़ों की हत्या की गयी है—अबकी पहले-पहल मास और फल-मूलों के साथ नीवार-कण भी यज्ञ पुरुष को समर्पित किया गया है।

मांस पकने की मीठी गंध के साथ मंत्रपाठ चल रहा है। एक वृद्ध

उठकर खड़ा हो गया और अपने पूर्व पुरुष से सीखी और कंठस्थ की हुई वँधी-वँधायी गत दुहराने लगा :

सर्वप्रथम हिरण्य गर्भ हुए थे
जन्म धारण कर वह भूतगण का
एक (मात्र) पति हुए थे
वह पृथ्वी, द्युलोक
और इसे (भूमि को) धारण किये
रहते हैं।
(उसी) किसी देवता की हम
हवि द्वारा परिचर्या करेंगे !

और एक दूसरा शुभ्रकेश और श्मश्रु मंडित पुरुष ने अग्नि को आहुति देकर कहा :

जो आत्मा को दान करते हैं
वल-दान करते हैं
सभी जिनकी आत्मा को
श्रद्धा के साथ ग्रहण करते हैं
देवतागण जिनकी
(आत्मा को श्रद्धा के साथ ग्रहण करते हैं)
आमरण रहती है जिसकी छाया
मृत्यु है जिनकी (छाया)
(उसी) किसी देवता की हम हवि द्वारा
परिचर्या करेंगे।

इसी प्रकार मंत्र पर मंत्र चलने लगा। वहुतों को इसका अर्थ समझ में नहीं आया। वहुत दिनों से सुनते आ रहे हैं इसीलिए कंठस्थ हो गया है। एक व्यक्ति सुरीले कंठ से उच्चारण करता है तो और-और लोगों को वाद वाले श्लोक का स्मरण हो आता है।

घृत और चर्बी की आहुति से चट-चट शब्द हो रहा है। धुआं कुंडली मार ऊपर की ओर चढ़ रहा है। पके लाल रंग के मांस की ओर शिशुगण लोभी जैसे निहार रहे हैं।

भल्ल एक स्थान पर चुपचाप बैठा है। उसकी दृष्टि इड़ा की ओर है। इड़ा थोड़ी दूरी बनाये आंख मूंदे बैठी है और तनिक हिल-डुल रही है। जैसे उसके मन और प्राण इस जगत् में न हों। बहुत दिनों से यत्न न होने के कारण इड़ा के बाल जटा की तरह हो गये हैं। उसकी त्वचा पर धूल का आवरण चढ़ गया है। वय होने पर भी उसके शरीर की बनावट बहुत अच्छी है। हाथ की उंगलियां लम्बी-लम्बी। गहरी भौंहें के नीचे लीलामयी आंखें। सुडौल स्तनों पर स्वेद के कण, जैसे अलक्तक से सजे हों।

अब अग्नि-स्तव का प्रारंभ हो गया है। जिसे जो भी कंठस्थ है, बोले जा रहा है। इस यज्ञ का कोई पुरोहित नहीं है क्योंकि अग्नि ही समस्त यज्ञों के प्रमुख पुरोहित हैं। तब हां, आजकल देखने में आता है, खड्गनाशा भग एवं स्लथगति मूसा स्वयं ही यज्ञ के समय प्रमुख भूमिका ग्रहण कर लेते हैं। यज्ञोपकरण के सम्बन्ध में वे ही निर्देश देते हैं।

अग्नि विषयक प्रथम मंत्र का सभी सम्मिलित रूप में उच्चारण करते हैं—

अग्नि यज्ञ के पुरोहित हैं एवं दीप्तिमान
अग्नि देवतागण के आह्वानकारी
ऋत्विक् एवं
प्रभूत रत्नधारी : मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ।

प्रत्येक यज्ञ के समय जन-अधिपति को स्वयं कुछ कहना पड़ता है। भल्ल वही बात सोच रहा था। वृक् की चिन्ता उसे बार-बार उदास कर देती है। वृक् के मुखड़े का स्मरण होते ही उसकी आंखों के सामने मरुत्त का मुखड़ा तैर आता है—और क्रोध से उसके लोमकूप में जलन

होने लगती है। वास्तव में आज वह देवताओं के प्रति अपने मन को तल्लीन नहीं कर पा रहा है—मरुत्त उसकी तल्लीनता को नष्ट कर देता है। शत्रु के बारे में तीव्रता से सोचने पर कभी-कभी वह प्रियजन से भी अधिक अपना हो जाता है। भल्ल जैसे मरुत्त की प्रत्येक गतिविधि यहीं से देख रहा है।

एक समय जब सब चुप हो गये तो भल्ल चकित हो गया। सभी उसी के वाक्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उसने खंखार कर कहना प्रारंभ किया :

तुम लोगों के समान ही मंत्र को उद्देश्य कर
मैं कह रहा हूँ
तुम लोगों के समान ही हवि के द्वारा
मैं होम कर रहा हूँ
तुम लोगों का संकल्प एक समान होवे
तुम लोगों का हृदय एक समान होवे
तुम लोगों का मन एक समान होवे
जिससे तुम लोगों का सुन्दर साहित्य (एकरूप)
हो सके !

यह कहकर भल्ल ने यज्ञ में हवि देते हुए चारों ओर आँखें दौड़ायीं। हृदय के अज्ञातस्थल से अचानक निकले हुए इन शब्दों के कारण उसे थोड़ा-बहुत गर्व हुआ। उसके बाद उसने कहा :

हे अग्नि, तुम पार्थिव देवताओं के
बीच प्रधान हो
तुम्हारी दीप्ति सूर्य के समान है
तुम जिस प्रकार पृथ्वी के केश रूपी
वन का ध्वंस करते हो
उसी प्रकार शत्रु-संहार में हमारी
सहायता करो

हे अग्नि, तुम सभी प्रकार
हमारे सहायक होओ।

मन्त्र के द्वारा स्तव पाठ करने के बाद सबने समवेत स्वर में 'अ-हन्' शब्द का उच्चारण किया।

इन्दर थोड़ी दूरी पर बैठ सोमपान करने में तल्लीन है। इसी बीच उसकी आँखें लाल हो चली हैं। यज्ञ आदि के सम्बन्ध में उसमें कोई उत्साह नहीं है। वह सोमरस को पहले ही हथिया कर उपयुक्त स्थान पर बैठ गया है।

उसके दूसरे हाथ में बछड़े की झुलसी हुई एक टाँग है। बीच-बीच में वह टाँग से मांस नोचकर खाता है, हड्डी चबाता है और सोमपात्र से घूंट लेता है। दूसरे-दूसरे लोग जब मंत्रोच्चार करते हैं, वह धीमे स्वर में व्यंग्यात्मक मंतव्य प्रकट करता है। आजकल उसे देवता की वन्दना सुनायी पड़ती है तो वह रुष्ट हो जाता है।

बीच-बीच में वह आँख उठाकर रा को खोजता है। रा अन्यान्य नारियों के साथ, थोड़ी दूरी रखकर यज्ञाग्नि में घी डाल रही है। अग्नि की आँच से उसका मुखमण्डल रक्तिम हो गया है। रा अभी अग्नि-शिखा जैसी लग रही है। वह सबसे कितनी अलग-थलग है, उसका रूप कितना सशब्द है, यह बात समझ में आ रही है।

इन्दर के मन में इच्छा होती है, रा से एक बार आँख मिलतीं और मिल जायें तो वह उसे इशारे से अपने निकट बुला ले। उसे एक बार छूने के लिए इन्दर के मन में तीव्र लालसा जग रही है। लेकिन रा इस ओर दृष्टि घुमा ही नहीं रही है। समग्र पुरुषों की इस प्रकार अवज्ञा करने की शक्ति रा को कहाँ से मिली?

प्रमत्त-अवस्था में इन्दर के मन में होता है, वह ऋभु क्यों नहीं हुआ! वह ऋभु होता तो रा उसे जीवन-भर अपने हृदय में स्थान दे देती। अकाल मृत्यु भी हो जाती तो वह अमर हो जाता। इस विषय में ऋभु की जो जीत हुई है इससे इन्दर का मन क्रोध से परिपूर्ण हो जाता है।

तभी इड़ा अचानक उठकर खड़ी हो जाती है। उसकी आँखें मुंदी। देखने से लगता है, उसमें बाहरी चेतना नहीं है। उसी स्थिति में ह नाचने लगती है।

उस समय मंत्रोच्चारण और चीत्कार और भी अधिक शब्दमय हो उठा। गर्ग संगीत शुरू करता है। कुछ नारी-पुरुष भी उठकर नृत्य में सम्मिलित हो जाते हैं। इस सुयोग से शिशु और लोभी पुरुष मांस चबाना शुरू कर देते हैं।

इन्दर पुनः रा पर अपनी दृष्टि टिकाता है। रा यदि नृत्य में भाग लेना चाहे तो वह दोड़कर उसका हाथ पकड़ लेगा। इन्दर नृत्य-कला में पटु नहीं है। फिर भी वह इसी बहाने कम से कम दो-चार बार तो रा का स्पर्श कर सकेगा।

नाचते-नाचते इड़ा अचेत होकर गिर पड़ी। धरती पर गिरने के पूर्व वह इतना ही कहती है, "तीन अहोरात्र के पश्चात्--"

भल्ल इड़ा के पास बैठकर बोला, "उसके बाद इड़ा, उसके बाद—"

इड़ा मानो असह्य यंत्रणा से कराह रही हो। उसकी आँखें तीव्र वेग से हिल-डुल रही हैं। वह हाँफती हुई अत्यन्त कष्ट के साथ बोली, "मिट्टी जब छाया विहीन हो जायेगी--"

भल्ल ने अपने मुखमंडल पर प्रसन्नता का भाव लाकर उसकी ओर ताका। देववाणी प्राप्त हो गयी। तीन दिन तीन रात के बाद ठीक मध्याह्न काल में ही युद्ध यात्रा का शुभक्षण है। अब कोई भय की बात नहीं रही।

सभी एक साथ उठकर खड़े हो गये और हो-हल्ला मचाना शुरू कर दिया। बहुत दिनों के बाद एक प्रबल युद्ध होने जा रहा है। महा भल्ल के विचार में परिवर्तन आ गया है, वह और अधिक सुख-स ले आयेगा। देवतागण भी प्रसन्न हैं, उन्होंने इड़ा के मुख से संदेश है। यह तो आनन्द का समय है। नारी और पुरुष एकाकार हो की तरह व्यवस्था करने लगे। कई व्यक्ति भूमि पर लेट गये।

इन्दर जहां था वहीं बैठकर सोम पीने लगा। देखने पर वह बहुत ऊबा हुआ लग रहा है। वह सोच रहा है उन लोगों को युद्ध करना है तो करे, वे मरना चाहें तो मरें। वह जानता है कि इस युद्ध में इन लोगों की पराजय निश्चित है। मरुत्त बुद्धि का जैसा खेल दिखा रहा है, भल्ल उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है। आडम्बर या हठ से युद्ध में जय प्राप्त नहीं किया जा सकता है। मरुत्त ने इन लोगों के दल के वीर श्रेष्ठ बृक् की हत्या कर दी है। वह अब की जाल बिछाकर पूरे दल को अरण्य के बीच खींचकर ले जायेगा। वह क्या इसके लिए तैयार नहीं है ?

इन्दर ने देखा, रा यज्ञस्थल छोड़कर चली जा रही है। इन्दर तत्क्षण सोमपात्र छोड़ उस ओर दौड़ पड़ा। उसकी आँखें लाल हैं, पांव लड़खड़ा रहे हैं। सोम लगने से दाढ़ी और छाती का रंग हरदिया हो गया है।

उसने लड़खड़ाते स्वर में पुकारा, "रा!"

रा ने सुनकर भी अनसुना कर दिया। वह उसी गति से आगे बढ़ने लगी। उसके चलने की गति में हस्तिनी, हिरणी और व्याघ्रिणी की गमन-भंगिमा एकाकार हो गयी है। कमल के भ्रम में उसके स्तनों पर भ्रमर आकर बैठ सकते हैं।

इन्दर ने उसके निकट आकर कहा, "तुम चली क्यों जा रही हो ?"

रा ठिठककर खड़ी हो गयी। भौंहों पर बल लाकर बोली, "और तुम सोमपात्र छोड़ इस ओर क्यों चले आये ?"

इन्दर दुष्टता की हँसी हँसकर बोला, "तुमसे तो बता ही चुका हूँ कि तुम्हें देखने पर मुझे अमृत से अरुचि हो जाती है। उस समय तुम्हारे अतिरिक्त और किसी वस्तु पर दृष्टि नहीं जाती।"

रा बोली, "अजी ओ भोजन चतुर, बातचीत करने में तो बड़े ही पारंगत हो गये हो। आजकल युद्ध-चर्चा के बदले काव्य-चर्चा करना शुरू कर दिया है ?"

"रा, काव्य के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। लेकिन त

ट जाते ही मूक भी प्रगल्भ हो जाता है। मेरे जैसे मनुष्य की भी ष्ट शक्ति वदल जाती है। थोड़ी देर पहले तुम अग्नि से भी अधिक ग्निमयी लग रही थी।"

"यह वात इसके पहले तुमने कितने व्यक्तियों से कहा है? तुम्हें सखियों का कोई अभाव है? तुम्हारी अन्यान्य सखियाँ कहाँ हैं?"

"यह सही है कि अन्यान्य सखियों की समय-समय पर मैंने नाना प्रकार की स्तुतियाँ की हैं। लेकिन यह बात मैंने किसी से नहीं कही है। विश्वास करो। इसके पहले इस प्रकार के आवेग का अनुभव नहीं किया था। तुम प्रेरणा के स्रोत जैसी लगती हो। तुम्हारे विरह, तुम्हारी प्रतिज्ञा ने तुम्हें और अधिक सौंदर्यमयी वना दिया है।"

"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं तुम्हें चाहता हूँ। यह तो वहुत सरल वात है। ध्यान से देखो, मेरे मुखमडल पर कोई ग्लानि नहीं है। अपने रूप का मुझे उत्तरा-धिकारी वना लो।"

"अपनी शपथ की वात तुम भूल गये?"

"ओह, वही भामह को पकड़कर ले आने की वात? कई दिनों से यही वात सोच रहा था। लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा है। आगामी युद्ध में मैं सम्मिलित नहीं होने जा रहा हूँ।"

"क्यों? सोम पी-पी कर तुमने अपना मस्तिष्क विकृत कर लिया युद्ध में सम्मिलित न होने का अर्थ जानते हो?"

"जानता हूँ। रा, मैं यों ही जर्जर हो गया हूँ। तुम मुझे अस्व और शय्याशायी वना दो।"

"छिः इन्दर! युद्ध से तुम वीतराग हो गये?"

"युद्ध करके क्या होगा?—केवल आक्रमण-प्रत्याक्रमण! इसके आओ, हम प्रेम में डूव जायें।"

रा अव विना कुछ वोले आगे वढ़ने लगी। इन्दर दौड़ता हुआ

और रा का हाथ पकड़कर बोला, "कहाँ जा रही हो ? मैं तुम्हें चाहता हूँ। मैं तुम्हें देखकर काम-मोहित हो गया हूँ।"

रा रूखे स्वर में बोली, "तुम मुझ पर बल-प्रयोग कर अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हो। पुरुष से नारी शारीरिक शक्ति में विजयी नहीं हो सकती, विशेषकर तुम्हारे जैसे शक्तिशाली व्यक्ति से।"

"नहीं, मैं बल-प्रयोग नहीं करूँगा।"

"तो फिर मेरी सम्मति नहीं है।"

इन्दर ने उसका हाथ छोड़कर कहा, "मेरे मित्र गर्ग का कहना है काव्य और नारी—ये दोनों स्वतः चले आयें तभी सुखकर होते हैं।"

"तुमसे बातचीत कर समय नष्ट करना नहीं चाहती। मैं चलती हूँ।"

"तुम मुझे इतना नापसन्द क्यों करती हो ?"

"तुम्हें थोड़ा-बहुत पसन्द करने लगी थी। आज तुम्हें देखकर पुनः घृणा होने लगी है।"

"इसका कारण ?"

"जो पुरुष युद्ध से मुँह मोड़ लेता है, अपनी गोष्ठी की विपत्ति के समय भी उदासीन रहता है, उससे कौन ऐसी नारी है जो घृणा नहीं करती ?"

"रा, मुझमें बहुत सारे दोष हैं। सोचा था, संभवतः कोई न कोई मुझे क्षमा कर देगा।"

"इस प्रकार का दोष रहने से कोई भी क्षमा नहीं करता।"

"अच्छा, मैं युद्ध पर जाऊँगा। सचमुच मैं अस्वस्थ तो हूँ नहीं, इसलिए शय्याशायी होकर पड़ा रहने का कोई अर्थ नहीं। जाना ही होगा। तब हाँ, पीछे की ओर रहूँगा। आवश्यकता पड़ने पर नारी और शिशुओं की रक्षा का दायित्व लेना होगा।"

"अर्थात् अधिक विपत्ति की संभावना रहेगी तो पीछे भाग आओगे।"

"तुम मुझ पर व्यंग्य कस रही हो ?"

"तुमने वीर पुरुषोचित बात जो कही ।"

अचानक इन्दर का मुखड़ा तमतमा उठा । इतनी देर से उसमें जो णिक जड़ता छायी हुई थी वह दूर हो गयी । वह चिबुक उठाकर र हँसी हँसा और बोला, "किसलिए युद्ध में जाऊँ, बता सकती हो ? मने भल्ल की शपथ नहीं सुनी है? वह अकेले ही मरुत्त, उसके पुत्र और शामह की हत्या करना चाहते हैं । फिर मैं क्या वहाँ झख मारने जाऊँ ?"

इन्दर का क्रोध देख रा को कौतुक का अनुभव हुआ । वह उसे और भी उत्तेजित करने के उद्देश्य से बोली, "तुम्हें रति परायण और सोमासक्त देख भल्ल तुम पर भरोसा नहीं कर सके ।"

इन्दर ने उद्धत स्वर में कहा, "मुझे अब भी कोई पहचान नहीं सका है । मैं भल्ल को भी....खैर रहने दो ।"

"तुम क्या कहने जा रहे थे ?"

"कुछ नहीं । मैं वृक को वचन दे चुका हूँ ।"

रा ने अब स्वयं ही इन्दर के बाहु पर अपना कर-कमल रख दिया । भे स्वर में बोली, "कुछ दिन पहले तक मैं भी भल्ल को बरदाश्त नहीं कर पा रही थी । लेकिन वृक की मृत्यु ने भल्ल की नपुंसकता दू कर दी है । ऋभु और वृक के हत्याकारी संपूर्ण मरुत्त-गोष्ठी को विना करने का यही सुअवसर है । इन्दर, अबकी तुम अपने शौर्य का प्रदर्श करो ।"

"भल्ल ने अपना शौर्य दिखाने का मेरे लिए कोई रास्ता नहीं दिया है ।"

"फिर भी दलपति को अन्तःकरण से सहायता करना तुम कर्त्तव्य है । वचन दो कि तुम करोगे ।"

"ऋद्धिवान पुरुष कभी किसी दूसरे के यशोविस्तार से प्रसन हो सकता । भल्ल हम लोगों के दलपति हैं, उनका आदेश अव

मानना चाहिए। लेकिन उन्होंने अकेले ही मुख्य-मुख्य शत्रुओं की हत्या की शपथ लेकर हमें नगण्य बना दिया है।"

"चाहे कुछ हो लेकिन शत्रुओं का विनाश करना ही हमारा उद्देश्य है।"

"मैं भामह का गला दबोचकर उसे ले आऊंगा और तुम्हारे चरणों पर पटक दूँगा—मैंने यही संकल्प किया था।"

"तुम उसे लाकर भल्ल के चरणों पर पटक दो, जिससे वह उसपर अन्तिम वार कर सकें।"

"रा, तुम नहीं जानती कि मेरा अहं कितना बड़ा है। यही कारण है कि देवताओं की स्तुति भी मैं सह नहीं पाता। मुझे लगता है कि मैं ही सबसे बड़ा हूँ।"

"फिर भी तुम इस युद्ध में भल्ल की सहायता करोगे, मुझे यह वचन दो।"

"अच्छा, तुम्हारे नाते वचन दे रहा हूँ।"

"विजय तुम्हारे मुखमंडल की शोभा-वृद्धि करे।"

इन्दर ने रा के अधरों पर अपनी एक उंगली रखकर कहा, "अब बातचीत नहीं। अब आओ। मुझे अपने रूप का संभोग करने दो।"

"रूप तुच्छ वस्तु है। अभी यह सब सोचने का समय नहीं है।"

"तुम समझ नहीं सकोगी। जिसके पास रहता है वह समझ नहीं पाता। तुम प्रेरणास्वरूपा हो। तुमसे प्रेरणा पाकर मैं और अधिक दुर्धर्ष हो सकता हूँ। मैं एक और नये विश्व की सृष्टि कर सकता हूँ।"

"नहीं।"

"इस युद्ध में यदि मारा गया तो एक भीषण अतृप्ति लेकर मरूंगा, यह बात जान लो।"

"फिर मैं भी जीवन-भर अतृप्त ही रह जाऊँगी।"

यह बात कहने में रा का कंठस्वर थरथराने लगता है। ऋभु के अतिरिक्त किसी और पुरुष के प्रति पहली बार उसके हृदय में हलचल

...द्रेक हुआ है। यह उपलब्धि उसे अत्यन्त लज्जित कर देती है। ...में उड़ते बादलों की तरह उसका मुखमंडल रक्तिम हो उठता है। ...र उन्मत्त आँखों से उस रूप को अपलक देखता है। दोनों चित्रपट ...अंकित जैसे दीखने लगते हैं।

दूसरे दिन प्रत्यूषकाल में ही इस उपत्यका में एक और भीषण उलट-फेर आ गया।

लोगों की नींद टूटने के पहले ही भल्ल नदी के किनारे चला आया था। कुछ दिनों से उसने शूर को देखा नहीं था। वृक् की मृत्यु के बाद शूर का उसे और अधिक स्मरण आता है। युद्ध-यात्रा के पूर्व वह अपने कनिष्ठ पुत्र को एक बार देखना चाहता है।

इसके अतिरिक्त शूर को सूचित करना होगा कि वह नदी बाँधने का कार्य स्थगित नहीं कर रहा है। आरब्ध कार्य समाप्त करके ही छोड़ेगा। युद्ध-यात्रा के कारण इस काम में विलंब होगा, बस इतना ही। मरुत का कटा हुआ मस्तक लाकर वह शूर को दिखायेगा। अहा, बेचारे को अपने ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु की बात की जानकारी नहीं है! जनाने की आवश्यकता भी नहीं है।

सूर्योदय के पहले का आकाश कोमल प्रकाश से परिपूर्ण हो उठा है... हवा सर्र-सर्र बह रही है। भल्ल ने जी-भर श्वास लिया। उसे ल... अहा, जीवन कितना सुन्दर है! पक्षियों का एक झुंड कलरव करता... नदी के दूसरे किनारे दूर खड़े पहाड़ की ओर उड़कर चला गया। ... को पुनः लगा, अहा, जीवन कितना स्वतंत्र है!

भल्ल बड़े-बड़े पत्थर गिरे असमाप्त सेतु के ऊपर आकर ख... गया। बर्छे को नीचे रख, दोनों हाथों को फैलाकर निद्र... ...को दूर किया। उसके बाद मुंह पर हाथ रख वह जोर से ...

वही है

गा, "शू""र"" दो-बार से अधिक पुकार नहीं सका। अकस्मात्
सका दम अटकने लगा। जैसे पृथ्वी की समस्त वायु का अन्त हो गया
से ऐसा ही प्रतीत हुआ। छाती के भीतर जैसे कोई आहत पक्षी दांत
काट रहा हो। भल्ल खड़ा नही रह सका, नीचे गिर पड़ा।

थोड़ी दूर और गिरता तो पानी में ही समा जाता। किसी प्रकार स्वयं को संभाल लिया। यह क्या हो गया! भल्ल को भय की अपेक्षा विस्मय ही अधिक हो रहा है। अपने शरीर के इस आचरण की उसे खोजने पर भी कोई व्याख्या नहीं मिली। भल्ल के भीतर इस प्रकार की असह्य पीड़ा है कि उसे पीड़ा का बोध ही नहीं हो रहा है। शरीर पूर्णतः अवश हो गया है। चेष्टा करने पर भी वह उठकर खड़ा नहीं हो सका। मात्र मस्तिष्क के ही कुछ अंश अभी सजग हैं। उसे लगता है कि उसकी छाती की रोमावली में दो चिट्टियां घूम-फिर रही हैं, उन दोनों को पकड़कर हटा दे, उसमें इतनी भी सामर्थ्य नहीं है। सहायता के लिए किसी को पुकारना चाहा। लेकिन उसका कंठ-स्वर रुद्ध हो गया है।

भल्ल का सिर पानी में लटका है। नदी की तीव्र धारा उसके सिर पर झपट्टा मारकर उसे पत्थर से टकराने के लिए विवश कर रही है। बहुत-बहुत चेष्टा करने पर भी वह अपने माथे को हटा नहीं सका। उसे अनुभव हुआ, यह नदी आज उससे प्रतिशोध ले रही है। उसने कहना चाहा, नदी, मुझे थोड़ा और समय दो। मैं पुनः लड़ने जा रहा हूँ।

भल्ल समझ नहीं रहा है कि उसका समय समाप्त हो चुका है।

भल्ल ने देखा, वृक् उसके माथे के पास आकर खड़ा हो गया है। उसे सन्तोष ही हुआ। उसका यह निर्भर योग्य पुत्र प्रत्येक विपत्ति के समय उसके पास पहुँच जाता है। उसने व्याकुल होकर पुकारा, "वृक्, वृक्, तू आ गया!"

वृक् ने धीरे-धीरे कहा, "पिताजी, मैं हाथ बढ़ा रहा हूँ, आप उठकर खड़े हो जाइये।"

भल्ल बोला, "मुझे पकड़कर खड़ा कर दो। खड़ा होते ही मैं सब-
छ कर पाऊँगा। मेरा बहुत-सारा काम बाकी पड़ा है।"

"यह रहा मेरा हाथ।"

"थोड़ा और आगे बढ़ आओ। मैं पकड़ नहीं पा रहा हूँ।"

"यह रहा, पकड़िये।"

"अयँ, किसी तरह पकड़ नहीं पा रहा हूँ, ऐसा क्यों ?"

"पिताजी, मेरा हाथ वायुमय है, इसीलिए आप उसे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं। इस वायुमय हाथ से अब मैं मनुष्य का उपकार नहीं कर पाता हूँ।"

भल्ल चिहुँक उठा। वह यह सब क्या सोच रहा है! वृक् अब जीवित नहीं है। उसे भल्ल स्वयं अपने हाथों से मिट्टी के तले सुला आया है। उसने मृत व्यक्ति को देखा। तब उसकी मृत्यु क्या निकट है ? इड़ा की बात ही सत्य होगी !

भल्ल का शरीर स्वेद से भर गया, आँखों के कोने में आँसू छल-
छला आये। सब कुछ छोड़-छाड़कर चले जाना होगा ? इसके लिए दुख
नहीं है, परन्तु एक भी शपथ पूर्ण नहीं हुई ! यह सेतु असमाप्त ही र
गया। दो दिन बाद महायुद्ध छिड़नेवाला था। अब कुछ नहीं हो पायेगा।
मरुत्त का रक्त देख भी नहीं सका।

भल्ल ने देखा, उसके पिता और प्रपिता की मूर्त्ति उसके पास आ
खड़ी हो गयी है। उसने अपनी आँखें मूँद ली और कहा, "चले जा
तुम लोग चले जाओ। मैं तुम्हें देखना नहीं चाहता। मैं जीवित र
चाहता हूँ। मेरी यह दुर्बलता दूर हो जायेगी। मैं पुनः उठकर
हूँगा, युद्ध में अपना पराक्रम दिखाऊँगा। एक ओर मरुत्त है और
और यह नदी। मैं दोनों की हत्या करूँगा। जो अपनी शपथ पूर्
करता वह नपुंसक है। मैं सबको दिखाऊँगा—आह, अभी यदि
सहायता करने पहुँच जाता !"

बार-बार पत्थर से टकराने के कारण अब उसके सिर से रक्त प्रवाहित हो रहा है। रक्त और आँसू नदी के पानी में मिल रहे हैं। अन्ततः उसे इस नदी के हाथों ही पराजित होना पड़ा !

उसने उठने की भरपूर चेष्टा की। परन्तु उसका शरीर तनिक भी न हिला। उसकी छाती के भीतर और बाहर जैसे असंख्य मुद्गरों की चोट लगी हो। आसपास कोई शत्रु नहीं है फिर भी कौन इस प्रकार का अत्याचार कर रहा है ? क्रमशः निस्तेज होते-होते एक ऐसा समय आया जब वह उदासीन हो गया। इड़ा की बात का स्मरण आया। इड़ा, तुम ठीक ही जानती थीं ! प्रतिषेध का कोई उपाय तुम नहीं जानतीं ?

भल्ल ने आँख उठाकर आकाश की ओर देखा। कच्ची धूप नीले आकाश को झुलसा रही है। अब उसे गोष्ठी या युद्ध की बात का स्मरण नहीं आया। पर्याप्त ऊँचाई पर एकल पक्षी को देखकर उसने सोचा, यह विहंग कितनी दूर जायेगा ?

उसकी आँखों से पुनः आँसू की दो बूँदे लुढककर कपोल की ओर आते-आते एक स्थान पर ठिठककर खड़ी हो गयीं। इसके पहले ही उसकी अन्तिम साँस निकल चुकी थी।

उस निर्जन नदी तट पर भल्ल की मृत देह बहुत देर तक पड़ी रही। कहीं से तीन फतिंगे आकर उसके मुँह पर चक्कर लगाने लगे। कोई-कोई फतिंगा उसकी पलकों का आकार स्पर्श करता है और फिर उड़कर चला जाता है।

भल्ल पर पहले-पहल लइला की दृष्टि पड़ी। वह प्रत्येक प्रत्यूषकाल शूर को देखने की आशा में नदी के किनारे आती है। प्रारंभ में उसने सोचा कि भल्ल सोया हुआ है और इसीलिए उसे बहुत देर तक नहीं पुकारा। उसके बाद जैसे ही निकट पहुँची, आर्त्त चीत्कार करने लगी।

एक-एक कर दो व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने से उपत्यका के लोग हतप्रभ हो गये। धाराशायी महाद्रुम की तरह भल्ल को पाकर कोई भी

ऐसा न था जो अपनी रुलाई रोक सके। वृक् की मृत्यु के बाद वहाँ के लोगों ने चीत्कार नहीं किया था। उस समय भल्ल का स्तब्ध शोक देखकर सभी नीरव हो गये थे। अब बहुत सारे पुरुष भी अनाथ नारी की तरह विलाप करने लगे।

इड़ा ने पहले ही की तरह इस बार भी शोक प्रकट नहीं किया। उसने अस्फुट स्वर में इतना ही कहा, "इतनी जल्दी ?"

पुरुषगण धीरे-धीरे शान्त हो गये। उन लोगों की आँखों में आशंका की काली छाया है। शोक की अपेक्षा शंका की ही मात्रा अधिक है। नारियाँ द्राखमा को सँभालती हैं। बहुत-सी नारियाँ भल्ल के शिथिल शरीर का चुम्बन करने लगती हैं।

इन्दर थोड़ी देर बाद नीचे उतरा। पिछली रात अधिक मात्रा में सोम पी लेने के कारण उसके स्नायु शिथिल हो गये थे और वह देर तक सोता रहा था। उसकी आँखें अब भी लाल हैं। इस अप्रत्याशित घटना से उसके हृदय में बहुत बड़ा आघात लगा है। किसी समय उसने भल्ल की हत्या की बात मन ही मन सोची थी, इसलिए वह असीम अनुताप का अनुभव कर रहा है।

इन्दर ने न तो चिल्ला-चिल्लाकर विलाप किया और न ही आँसू बहाये, वह भल्ल के चरणों के पास बहुत देर तक निस्पन्द बैठा रहा। भल्ल को इसके पहले ही नदी के पत्थर पर से उठाकर तटभूमि पर लाकर सुला दिया गया है।

कुछ देर बाद इन्दर ने एक लम्बी साँस ली और भल्ल का बर्छा अपने हाथ में लिए उठकर खड़ा हो गया। उसके बाद गंभीर स्वर में बोला, "मृत्यु इस उपत्यका में अशोभनीय रूप में बार-बार आ रही है। अब हम मृत्यु पर अत्याचार करेंगे। अग्नि क्षुधार्त्त हो गयी है, हम उसके लिए खाद्य-पदार्थ लाकर देंगे। अभी केवल शोक करने का समय नहीं है। तुम लोग मेरी बात सुनो। महावीर भल्ल के इस बर्छे

को अब मैं ग्रहण कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है, तुम लोग इस पर आपत्ति नहीं करोगे।"

इन्दर ने जैसे ही कहना शुरू किया, सभी चुप हो गये। संक्षिप्त भाषण के बाद इन्दर बर्छा हाथ में थामे तनकर खड़ा हो गया। उसके बाद हल्का-फुल्का शोरगुल मच गया।

भीड़ चीरता हुआ बलवान हवि आया और बोला, "इन्दर, तुम इस प्रकार की बात मत करो। सर्वगुण संपन्न भल्ल की अनुपस्थिति में उनके जीवित पुत्र शूर को ही दलपति बनने का अधिकार है। शूर को यदि हम लौटाकर नहीं ला पायेंगे तो फिर चुनाव तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

इन्दर बोला, "शूर यहाँ नहीं है। और मैं चुनाव नही मानता।"
"तुम चुनाव को मान्य न समझोगे तो कुलगोष्ठी का कोई तुम्हे स्वीकार नही करेगा।"

"यह उत्तराधिकार दण्ड मेरे हाथ में है।"

"शक्ति-परीक्षण के बिना यह किसी को प्राप्त नहीं होता। स्वयं भल्ल को भी प्राप्त नहीं हुआ था।"

"प्रिय मित्र हवि, तुम क्या मुझसे शक्ति-परीक्षण करना चाहते हो? तुम्हारे पुत्र को अनाथ देखकर मेरे मन में कष्ट पहुँचेगा।"

"इन्दर, तुमने यह बात इसलिए कही कि तुम्हे पुत्र नही है। तो फिर मैं जो कह रहा हूँ, सुनो। तुम्हारी जननी को सन्तान विहीन करना मेरा भी अभिप्राय नहीं है।"

"मेरी जननी अनेक पुत्रवती है। तुम्हारी सन्तान को एक ही पिता है।"

उस समय खड्गनाशा प्रवीण धेय दोनो हाथो को उठाकर बोला, "हे वीरद्वय, तुम लोग शान्त होओ। मृत दलपति की सक्षम सन्तान की अनुपस्थिति में निर्वाचन की प्रथा ही प्रचलित है। हमारे पूर्व पुरुष ऐसा ही करते आये हैं। मेरा कहना है, अभी तुरन्त निर्वाचन हो जाये।"

यह सुनते ही वहुतों ने चिल्लाकर कहा, "यही हो, यही हो।"

इन्दर ने ठहाका लगाते हुए कहा, "निर्वाचन का परिणाम यदि मेरे मनोनुकूल नहीं होगा तो मैं उसे नहीं मानूंगा।"

इन्दर के इस प्रकार के उद्धत वाक्य से सभी विस्मित हो उठे। भल्ल और वृक् दोनों विनीत थे। इसलिए वीरों को इस प्रकार की वाहवाही सुनने का वहुत दिनों से अभ्यास नहीं है। कई विज्ञ स्त्री-पुरुष इन्दर को समझा-बुझाकर शान्त करने की चेष्टा करते हैं। इन्दर बार-वार सिर हिलाता है। वह समझने को तैयार नहीं है। वृक् को उसने अनुगत रहने का जो वचन दिया था, उसे पालन करने को अब वह तैयार नहीं है।"

तभी इड़ा ने तीक्ष्ण स्वर में डाँटते हुए कहा, "अरे मूर्खो, यह क्या कोई निर्वाचन का समय है ? सिर पर विपत्ति के वादल मँडरा रहे हैं और तुम लोग आत्म-कलह कर रहे हो ? भल्ल की मृत्यु का समाचार पाते ही मरुत्त अपने दल के साथ आक्रमण करेगा। अभी हम वहुत-कुछ शक्तिहीन हैं। आत्म-कलह से और भी शक्तिहीन हो जायेंगे।"

दीर्घवाहु उपात्त ने कहा, "परन्तु निर्वाचन हमारी प्राचीन प्रथा है। उसे अस्वीकार करना क्या अपराध नहीं है ?"

इड़ा ने कहा, "इस दुःसमय में निर्वाचन करने से कलह वढ़ जायेगा। प्रवीणा से क्या तुम लोगों ने सुना नहीं है कि पहले जब हम दूसरी उपत्यका में रहते थे तो इसी प्रकार का कलह छिड़ जाने के कारण गोष्ठी दो भागों में विभक्त हो गयी थी ? तभी से हम मरुत्तों से अलग हुए हैं। तुम लोग पुनः गोष्ठी को विभक्त करना चाहते हो ?"

"लेकिन इन्दर चुनाव मानने को तैयार क्यों नहीं हो रहा है ?"

"इन्दर वीर होने के वावजूद दुर्मुख है। दक्ष रहने के वावजूद असंयत है। इस कारण वहुतेरे लोग उसे पसन्द नहीं करेंगे। लेकिन इससे नेतृत्व योग्य हाथ में नहीं जायेगा। हमें अभी मृदुभाषी और सज्जन अधिपति की आवश्यकता नहीं है। हमें अभी एक दुःसाहसी व्यक्ति चाहिए। सुनो, सभी प्राचीन प्रथाएं हमारा उपकार नहीं करतीं। यदि

ऐसा होगा तो नयी प्रथा का जन्म कैसे होगा ? मैं एक बात कहूँ, तुम लोग मानोगे ?"

इड़ा की बात की सहज ही उपेक्षा नही कर सकती है स्वयं भल्ल उससे परामर्श लेता था। यज्ञ के समय देवता उसकी आत्मा में प्रवेश करते हैं। विज्ञ लोगों ने कहा, "इड़ा, तुम्हीं कोई रास्ता बताओ। कहीं महामति भल्ल की मृत देह के समक्ष ही रक्तपात न होने लगे।"

इड़ा बोली, "मेरा प्रस्ताव है, जब तक शूर लौटकर नही आता है, तब तक इन्दर उसका प्रतिनिधित्व करे। शूर ही हमारी गोष्ठी का न्यायसंगत दलपति है। वह जब तक लौटकर नही आता है, हम सभी इन्दर के द्वारा प्रदर्शित रास्ते पर चलेंगे। वह विपत्ति से हमारी रक्षा करेगा। शूर यदि किसी दिन लौटकर आयेगा तो इन्दर अपना दायित्व उसे सौंप देगा।"

कुछ लोगों ने पूछा, 'इन्दर क्या इस प्रस्ताव से सहमत है ?"

इन्दर ने उत्तर दिया, "तुम लोग सुन लो, शूर यदि लौट आता है या हम नदी के पार पहुँच जाते हैं तो मैं यह बर्छा शूर के हाथ में थमा दूँगा। और, अपनी मृत्यु के पहले, शूर के अतिरिक्त और किसी को नही दूँगा। मेरी यह बात सत्य की तरह अखंड और अविभाज्य रहेगी। तुम लोग यह भी सुन लो, भल्ल ने जो शपथ खायी थी, उसे मैं पूरा करूँगा। मरुत्त की हत्या कर मैं उसका गोधन तुम लोगों के लिए ले आऊँगा और भामह को वन्दी बनाकर यहाँ ले आऊँगा।"

तभी व्राखमा अपने प्रियतम की मृत देह से अलग हटकर आयी और इन्दर का आलिंगन करते हुई बोली, "इन्दर, तुम मेरे पुत्र के समान हो। शूर और तुम्हें मैं एक समान मानती हूँ। शूर की अनुपस्थिति मे तुम अपने महापिता भल्ल की प्रतिज्ञा पूर्ण करो। तुम इसी प्रकार मुझे सतोष दो।"

उस समय बहुतेरे लोग इन्दर की जयध्वनि करने लगे। इड़ा ने आगे बढ़कर इन्दर के माथे को सूँघते हुए कहा, "तुम दीर्घजीवी होओ।"

इन्दर अपने स्वभावोचित अहंकार के साथ बोला, "मैं दीर्घजीवी होना नहीं चाहता। मैं अपनी कीर्त्ति रखकर जाना चाहता हूँ।"

इड़ा बोली, "आज से मैं तुम्हारा नाम इन्द्र रख रही हूँ। तुम वृद्धश्रवा होओ (तुम्हारी कीर्त्ति की बहुतों के द्वारा प्रशंसा की जाये)। जो हमारा वध करना चाहता है तुम वध को उसी की ओर फेंक दोगे। शत्रुगण नीच हैं, उनके धनुषों में लगी डोरी टूट जाये, यही मेरी कामना है।"

इड़ा के बाद और भी बहुतेरे लोग चिरकाल से चले आ रहे नियम के अनुसार कंठस्थ श्लोकों के द्वारा दलपति की वन्दना करने लगे। इन्दर का मन यह सब सुनने की ओर नहीं लगा है। उसने हाथ उठाकर कहा, "आज से दो दिन बाद मध्याह्न में युद्धयात्रा पर निकलने की बात थी। मैं और सात दिन का समय ले रहा हूँ। नवम दिन ठीक उसी समय हम युद्ध यात्रा पर निकलेंगे। इस संबंध में किसी को कोई दूसरा विचार रखना नहीं चाहिए।"

भीड़ चीरकर वह बलवान हवि के पास आया और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला, "प्रिय बंधु, मन में किसी प्रकार का द्वेष नहीं रखना। युद्ध की प्रणाली के संबंध में मैंने नयी योजना बनायी है। इसीलिए नेतृत्व मैं अपने हाथों में ले रहा हूँ। इस काल में तुम्हारी सहायता की विशेष आवश्यकता है। इससे पहले के युद्धों में वृक् ने जिन दायित्वों का निर्वाह किया था, अब वह सब दायित्व तुम्हारा है।"

हवि ने इन्दर के बाहु का स्पर्श करते हुए कहा, "गोष्ठी ने जबकि तुम्हें अस्थायी दलपति के रूप में स्वीकार कर लिया है तो जब तक शूर लौटकर नहीं आता है, तब तक मैं तुम्हारे आदेश का पालन करता रहूँगा।"

उसी क्षण से इन्दर में एक बहुत बड़ा बदलाव आ गया। वह कुरु-गोष्ठी के योद्धाओं को नये ढंग की युद्ध-कला सिखाने में ही व्यस्त रहने

लगा । अब वह सोमपायी लुब्ध इन्दर कहाँ भागा गया ! वह सदा प्रसन्न रहता है । सबको आदेश देता है और स्वयं सबसे अधिक परिश्रम करता है ।

अपने चुने हुए योद्धाओं को उसने अश्व-संचालन की शिक्षा दी । भल्ल की अन्त्येष्टि का भार नारियों पर सौंप कर उसने उसी क्षण से यह सब प्रारंभ कर दिया है । कई व्यक्तियों से उसने शस्त्र-अस्त्र और चमड़े के कुछेक जालों का निर्माण कराया । उसके बाद पहाड़ की कतारों में जो सब काँटे मिलते हैं, उन काँटों को भी इकट्ठा किया ।

मरुत-गोष्ठी के हाथ में नया अस्त्र आ गया है, इसलिए उसे प्रत्येक दृष्टि से तैयार होकर रहना होगा । वृत्र के वक्ष में जो छुरी धँसी थी, उसे इन्दर ने अपने पास रख लिया है । बीच-बीच में वह उसका परीक्षण करता है । छुरी यद्यपि बहुत ही कोमल है, परन्तु मजबूत नहीं लग रही है । पत्थर की चोट बर्दाश्त नहीं कर पाती है लेकिन आक-स्मिक आघात करने के लिए यह अस्त्र बहुत ही कार्यकारी है ।

आशा की एक बात है कि मरुत की गोष्ठी में अब पशुबल अधिक नहीं है । इसके अतिरिक्त उनके पास घोड़े का अभाव है । यहाँ घास का कोई अभाव नहीं है । कई दिनों तक मरुत-गोष्ठी को यदि घेर कर रखा जाए तो उसका परिणाम अच्छा होगा । दूसरा अभाव है कि अधिक दिनों तक युद्ध-संचालन करना इन्दर के वश की बात नहीं है । उसकी इच्छा नहीं है कि आँखों को मूँद के [illegible] प्राण खोएँ । उसने सुना है, मरुत् स्वयं की एक [illegible] पर आक्रमण करता है । लेकिन वह शिशु [illegible] के लिए करता है । [illegible] की उसने शिक्षा नहीं दी है । इन्दर के आगे [illegible] और [illegible] देखना की । [illegible] कोई [illegible] न देखें । [illegible] बाँध कर भागेंगी । अब शान्ति से [illegible] रहेगा ।

निर्धारित तिथि में सवेरे से ही इन्दर युद्ध के लिए प्रस्तुत है। मध्याह्न का सूर्य जब माथे के ऊपर आयेगा और छाया अन्तर्हित हो जायेगी, वे लोग उसी समय अरण्य में प्रवेश करेंगे। इन्दर हरे रंग के हय की पीठ पर आरूढ़ हो सब कुछ की निगरानी कर रहा है। उसकी आँखें चमक रही हैं। सवेरे से ही वह अपने शरीर में उत्ताप का अनुभव कर रहा था इसीलिए उसने अपने कपाल और बाहु पर अगरु का प्रलेप लगाया है। उसके सैनिक गण हाथों में अस्त्र लिए किसी भी क्षण यात्रा पर निकलने को उत्तेजित हैं। इन्दर ने उन्हें युद्ध-प्रणाली का निर्देश दिया।

प्रथम पंक्ति में इन्दर स्वयं और हय-वाहिनी रहेगी। और-और युद्धों में दलपति साधारणतः सैनिकों के मध्य भाग में रहता था, इन्दर ने उस नियम को बदल दिया। शत्रु दृष्टि की परिधि में आ जायेंगे तो पहला आघात वह स्वयं करेगा।

दूसरी पंक्ति में धनुर्धर रहेंगे। उनके तीरों के अग्रभाग में विष लगा दिया गया है। प्रत्येक धनुष में नयी प्रत्यंचा लगी हुई है। इन दो पंक्तियों के पीछे इन्दर ने एक ऐसे दल को रखा है जो योद्धा नहीं, अस्त्र-वाहक हैं—आगे की पंक्तियों के योद्धाओं का अस्त्र समाप्त हो जायेगा तो वे तुरन्त पहुँचा आयेंगे। इनके पास बड़े-बड़े जाल, काँटेदार झाड़ियाँ और खाद्य पदार्थ हैं। साथ ही साथ वे एक ही निमिष में सैकड़ों मशाल जला सकते हैं। आज इन लोगों ने नाम मात्र का आहार किया है और चुल्लू भर सोम पिया है। दो-चार व्यक्तियों ने अधिक सोपान करने का लोभ दिखाया था, इस पर उन्हें इन्दर का तिरस्कार सहना पड़ा।

इनमें से सभी समर में निर्भीक रहने वाले हैं परन्तु बहुत दिनों से इन लोगों ने अरण्य के भीतर प्रवेश कर युद्ध नहीं किया है। अरण्य से बाहर आ, उपत्यकावासी हो जाने के बाद, जंगल में आत्मरक्षा का कौशल वे लोग बहुत कुछ भूल चुके हैं। बार-बार इन्हें विरक्त कर और अन्ततः प्रलोभन दिखाकर जंगल के बीच खींचकर ले जाना ही मरुत्त

का उद्देश्य रहा है। उन्मुक्त प्रान्तर में आकर इन्हें युद्ध में पराजित करने की मरुत्त को शक्ति नहीं है। मरुत्त के पास लोकबल की कमी है।

इन्दर कपाल पर हाथ रख सूर्य के दर्शन कर रहा है। गर्ग आकर उसके पास खड़ा हो गया। उसे देखकर इन्दर बोला, "गर्ग, तुम पर युद्ध का फलाफल निर्भर करता है। तुम्हारी सिंगाध्वनि में तनिक भी भूल हो जाये तो हम संकटग्रस्त हो जायेंगे।"

गर्ग बोला, "मैं युद्ध में निहत होने के पूर्व अपने सिंगा को हाथ से अलग नहीं होने दूँगा। मैं मारा जाऊं तो तुम दूसरी व्यवस्था कर लेना।"

इन्दर ने गंभीर स्वर में कहा, "युद्ध आरंभ होने के पहले ही मृत्यु की आशंका मत करो। उससे स्नायु असतर्क हो जाता है।"

गर्ग बोला, "हमें आशा है, तुम जयी होगे। लेकिन तुम्हारे मन में क्या तनिक भी दुविधा नहीं है?"

"दुविधा किस बात की? जय या पराजय दोनों चरम स्थिति हैं। मैं दोनों में से किसी एक को वरण करने के लिए प्रस्तुत हूँ। तब हाँ. जब तक चरम स्थिति में नहीं पहुँच जाऊँगा, मैं रुकूँगा नहीं, यह निश्चित है।"

"देवता हमारे सहायक हों!"

"गर्ग, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं देवताओं पर निर्भर नहीं करता। मैं पुरुषार्थ पर भरोसा करता हूँ। याग-यज्ञ के समय देवताओं का नाम सुनने में अच्छा लगता है। यह युद्ध है। अंगिरा, तुम और बहुत से लोगों ने देवताओं के नाम से जिन सुललित काव्यों की रचना की है—वह सब सुनने में सुखदायक है, बाकी कुछ भी नहीं।"

गर्ग ने अपने मित्र को मीठी झिड़कियाँ सुनायीं, "छिः इन्दर, इस प्रकार की बात उच्च स्वर में नहीं कहा करो। मैं जानता हूँ, तुम महत्वाकांक्षी हो, किन्तु साधारण लोग दैवी शक्ति पर ही भरोसा करते हैं। मैं तुम्हें केवल इस बात का ही स्मरण दिलाने आया हूँ कि तुमने मात्र

कौशल के वर्णन में ही इतना समय व्यतीत कर दिया। शुभारंभ पूर्व देवार्चना के शब्द का एक बार भी उच्चारण क्यों नहीं कर रहे ? इससे सैनिकों में सर्वदा देवता के प्रति रोष की एक आशंका बनी रहेगी।"

इन्दर ने सिर उठाकर कहा, "उन लोगों से कहो कि देवता के बदले मुझ पर भरोसा करें। उन लोगों का पतन या श्रीवृद्धि मेरे हाथ में है।"

"इन्दर, तुम क्या देव द्वेषी हो गये हो ?"

"नहीं बंधु, मैं मात्र आत्मशक्ति का विश्वासी हूँ।"

"खैर, इन बातों पर हम बाद में विचार करेंगे। अभी शुभ कार्य के पहले नियमों को भंग मत करो, मेरा यही अनुरोध है।"

इन्दर बोला, "जाओ, जिन-जिन आचारों का तुम्हें पालन करना है, जाकर करो। शीघ्र ही समाप्त कर आओ क्योंकि अब अधिक विलंब नहीं है।"

गर्ग सैनिकों के बीच खड़ा होकर स्वस्तिवाचन करने लगता है। सभी नतजानु हो सिर झुकाकर उसे सुनते हैं और दुहराते हैं। पूरे अंचल में एक गुनगुनाहट गूंजने लगती है।

छाया देखकर इन्दर जब यात्रारंभ का संकेत देने जा रहा था त रा दौड़ती हुई उसके पास आयी। रा अपने वक्ष पर कवच और पाँ में पादुका धारण कर आयी है। हाथ में एक बर्छा है।

रा श्वास रोककर बोली, "इन्दर, मैं भी युद्ध में सम्मिलित ह चाहती हूँ। मुझे अपने साथ जाने दो।"

इन्दर बोला, "कुरुगोष्ठी के पुरुष क्या इतने हीनवीर्य हो गये नारियों से सहायता लें ?"

"किसी युग में नारियाँ भी पुरुषों के साथ रणांगण में जाती

"उस समय मैं नहीं था। यह मेरा युग है, मैं बाहुबल से तु के लिए सम्पदा लाकर तुम्हें समृद्ध करूँगा।"

"मुझे रोको मत। मैं अपने हाथ से ऋभु-हरण का प्रतिशोध लेना चाहती हूँ।"

"आसुरिक नारियाँ ही हाथ में रक्त लगाती हैं। तुम्हें यह शोभा नहीं देगा। तुम स्वार्थी की तरह केवल ऋभु के बारे में सोचती रहती हो। हम समग्र गोष्ठी की ओर से प्रतिशोध लेने जा रहे हैं। तुम चिन्ता मत करो, भामह को मैं पकड़कर तुम्हारे लिए लेते आऊँगा। यदि जीवित नहीं, तो छिन्न मस्तक अवश्य ही।"

रा ने फिर कहा, "मैं तैयार होकर आयी हूँ, मुझे ले चलो।"

इन्दर ने अब क्रोध में आकर उसे डाँटते हुए कहा, "हटो, देर हो रही है।"

अब विलंब न कर इन्दर ने संकेत किया। उसके बाद ही अपने हरदई घोड़े को दौड़ा दिया। वाहन और आरोही दोनों जैसे सूर्य की किरणों की दीप्ति के साथ एकाकार हो गये।

आरण्य के भीतर प्रवेश करने में कोई इतस्ततः न करे इसके लिए इन्दर अरण्य के प्रान्तर में पहुँचने पर एक बार भी न रुका। वह सबसे पहले तीर की गति से भीतर धँस गया।

ईशान कोण में बादल का एक टुकड़ा बहुत देर से जमा हुआ है। इन्दर को भय लग रहा था कि कहीं यह टुकड़ा सूर्य को ग्रसित कर ले तो प्रत्येक क्षण छाया मँडराती रहेगी—छायाहीन युद्धारंभ का क्षण नहीं आयेगा। ऐसी स्थिति में बहुतेरे लोग युद्ध यात्रा की तिथि आगे टाल देंगे। लेकिन इन्दर को अब उस क्षण की भी देर बरदाश्त नहीं हो रही है। वह जैसे मृत्यु के लिए छटपटा रहा है। इन लोगों के अरण्य में प्रवेश करने के कुछ देर बाद ही धूप समाप्त हो गयी और छाया फैल गयी।

अरण्य के भीतर थोड़ी दूर तक धँसने के बाद भी मरुत्-गोष्ठी की ओर से प्रतिरोध की। कोई व्यवस्था देखने को नहीं मिली। इन्दर ने अपनी पंक्ति की गति में तनिक भी न्यूनता न आने दी और सामने की

ओर अग्रसर होने लगा। दो पंक्तियाँ थोड़ी दूर पीछे रह गई हैं। लेकिन दलपति के निकट पहुँचने के लिए वे लोग भी प्राणपण से दौड़ते रहे हैं।

और कुछ दूर जाने के वाद इन्दर ने अपने वाहन की रास खींच ली। सामने एक विशाल नहर खुदी हुई हैं। इन्दर ने हाथ उठाकर सबसे रुकने को कहा। नहर एक मनुष्य के बराबर चौड़ी होगी। देखने पर लगता है, कुछ ही दिन पूर्व इसका निर्माण किया गया है।

इन्दर ने लाँघकर उस नहर को पार किया। उसके सुशिक्षित तेजस्वी हय के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है। इन्दर अकेले ही आगे बढ़कर देख आया कि सामने और कोई वाधा है या नहीं। उसका दुस्साहस और-और लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है।

परिदर्शन के पश्चात् इन्दर ने हाथ उठाकर संकेत किया और गर्ग सिंगा वजाने लगा। इन्दर पहले ही आदेश दे चुका था कि सिंगा ध्वनि होते ही सैन्य-वाहिनी दो भागों में विभक्त होकर दाहिने और वायें फैल जायेगी ! शत्रु यदि प्रवल आक्रमण करे तो भी किसी को पीछे हटना नहीं है—वाद में संकेत किये जाने पर वे पुनः एक स्थान पर इकट्ठे होंगे।

कुछ वाहिनी के सैनिकों ने बायें और दाहिने वढ़कर देखा कि नहर वहुत दूर तक विस्तृत नहीं है। लगता है, प्रतिपक्ष अपनी योजना के अनुसार अपना कार्य अभी पूरा नहीं कर सका है। अतः वे लोग दो छोर से नहर पार कर एक स्थान पर इकट्ठे हुए।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक और नहर दिखायी पड़ती है। यह उससे भी छोटी है। इसे पार करने में अधिक विलम्ब नहीं लगता है। लेकिन मरुत्त की रणनीति ठीक-ठीक समझ में नहीं आती है।

लम्बे समय तक दौड़ते रहने के कारण सैनिक गण थक कर चूर हो गये हैं, फिर भी इन्दर ने उन्हें विश्राम करने की अनुमति नहीं दी। वह चिल्लाकर कहता है, "आज हम निशाकाल में मरुत्त के भस्मीभूत

गृह के निकट बैठ उन्हीं लोगों का गोधन पकाकर खायेंगे और विश्राम करेंगे। चलो, अब देर नहीं है।"

बलवान हवि ने उसके निकट आकर कहा, "इन्दर, तुम ऐसे पथ पर अग्रसर हो रहे हो जहाँ से लौटा नहीं जा सकता।"

इन्दर ने कहा, "विजय न प्राप्त करने पर लौटने का सुयोग मैं रखना नहीं चाहता। चलो हवि, यदि हम पराजित हो जायेंगे तो भी उत्सव मनाते-मनाते मृत्यु को वरण करेंगे।"

इतना कहते ही इन्दर के वक्ष में एक तीर आकर धँस जाता है। कोई वृक्ष पर छिपकर बैठा है और उसी ने तीर छोड़ा है। तीर इन्द्र के आधे वक्ष को बेधकर झूलने लगा। इन्दर एक निमिष के लिए ठिठक कर खड़ा होता है। उसके बाद वह दंभ के साथ एक ठहाका लगाता है।

इन्दर तीर को बाहर खींच लेता है और उसका परीक्षण करता है। जिस प्रकार की चमकती हुई वस्तु से निर्मित छुरी से विद्ध होकर वृक् ने अन्तिम साँस ली थी, इस तीर की नोंक भी उसी वस्तु की है। लेकिन यह जरा टेढ़ी हो गयी है। इन्दर अवहेलना के साथ उसे दूर फेंक देता है। उसकी हय वाहिनी का प्रत्येक सदस्य चमड़े के वर्म के नीचे स्लेटी पत्थर लगाकर आया है। मरुत का यह अस्त्र उस साधारण स्लेटी पत्थर को भी बेध नहीं सका है।

इन्दर अपने योद्धाओं की दूसरी पंक्ति को वृक्षारोही शत्रुओं से युद्ध करने के लिए नियुक्त का प्रथम पंक्ति के साथ आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद वे लोग मरुत की पदातिक वाहिनी पर झपट पड़ते हैं। इन्दर की गदा क्षण-क्षण वज्र की तरह गरजने लगती है। प्रत्येक आघात से एक न एक शत्रु का मस्तिष्क अवश्य ही चूर-चूर हो जाता है। उसकी हय-वाहिनी प्रतिपक्ष की पहली पंक्ति को तहस-नहस कर देती है। इसी बीच दूसरी और तीसरी पंक्ति आ जाती है। वे लोग विरोधी दल के धनुर्धारियों की ओर कँटीली झाड़ियाँ फेंक देते हैं और उन्हें जा फँसा लेते हैं।

इन्दर की युद्ध-प्रणाली में एक क्षण के विराम की गुंजाइश नहीं है। ...की हय-वाहिनी अनवरत चारों ओर घूम-फिर रही है। किसी भी ...ण वे लोग अस्त्र बदल लेते हैं और मशाल फेंक-फेंक कर शत्रुओं के ...र में आग लगा देते हैं। शिशु और नारियों के चीत्कार से शत्रु पक्ष के ...द्धा हतप्रभ हो जाते हैं।

एक ही पहर में पता चल गया कि इन्दर के दल की जय सुनिश्चित है। मरुत्त की गोष्ठी के योद्धाओं की संख्या इन लोगों की तुलना में बहुत कम है। उन लोगों की युद्ध की तैयारियाँ भी अधूरी ही थीं— इतने शीघ्र आक्रमण होगा, इस बात की उन्हें आशंका नहीं थी।

इन्दर भामह को चारों ओर खोज रहा था। असल में वह भामह को पीछे छोड़कर आगे निकल आया है। भामह वृक्ष पर चढ़कर तीर छोड़ रहा था। उसी स्थिति में वह प्रबल शौर्य के साथ युद्ध करता है। —सके बाद उसका तीर समाप्त हो गया तो वह वृक्ष से ही कुरुगोष्ठी के योद्धा की पीठ पर कूद पड़ता है। उसके हाथ से मुद्गर छीन वह मातंग की तरह शत्रु का विनाश करने लगता है। उसका प्रतिरोध करे, वैसी शक्ति किसी में नहीं थी। वह मुद्गर घुमाता हुआ अपने गृह... की रक्षा करने आ रहा था। बलवान हवि ने दूर से उसके पैर पर वा... किया और वह अचानक गिर पड़ा। उस समय बहुत से सैनिक उसे घे... लेते हैं। बलवान हवि जैसे ही उसे मारने के लिए अस्त्र उठाता है ... इन्दर की दृष्टि उस पर पड़ती है। उसने चिल्लाकर कहा, "उस... हत्या मत करो। उसकी हत्या मत करो।"

इन्दर अपना वाहन दौड़ाता हुआ भामह के सामने आया। भ... उस सुयोग से लाभ उठाकर खाली ही हाथ उसकी ओर दौड़ प... इन्दर ने जाल फेंककर उसे बन्दी बना लिया। भामह ने जाल ... की भरपूर चेष्टा की परन्तु वह सफल नहीं हो सका। वह क्रुद्ध प... तरह चिल्लाने लगा।

मरुत्त का भी पता नहीं चल रहा था। घोर संकट देखकर ...

"हम कभी एक ही गोष्ठी के थे, यह बात सोचकर अपने सगे की हत्या मत करो।"

"तुम्हारी मृत्यु हमारे हाथ ही निश्चित थी।"

इन्दर ने प्रारम्भ में मरुत्त के वक्ष में बर्छा भोंककर उसके रक्त को देखा! उस पर भी इन्दर का क्रोध जब शान्त न हुआ तो अस्त्रों से बार-बार आघात कर उसका शरीर छिन्न-भिन्न कर दिया। उसके बाद मरुत्त के निस्पन्द शरीर को खड़ा कर सिंह की नाईं जय-निनाद करने लगा।

इन्दर का उस समय का भयंकर रूप उसके दल के लोगों से भी नहीं देखा गया। किसी-किसी ने अपना मुंह छिपा लिया। महावीर मरुत्त की कैसी वीभत्स परिणिति हुई! बाद में बहुतों ने इस दृश्य के संबंध में नाना प्रकार की कहानियाँ गढ़ीं—इन्दर ने मरुत्त को 'रोओ नहीं, रोओ नहीं' कहते हुए उसकी देह को सैकड़ों टुकड़ों में विभक्त कर दिया और उन्हें सात दिशाओं में फेंक दिया।

मरुत्त के पुत्र कारु और उसके भ्राताओं का पता नहीं चला। इन्दर ने बहुत देर तक खोज-पड़ताल की। मरुत्त-पुत्रों के बदले इन्दर को दूसरी सम्पदा हस्तगत हुई। घूमते-घूमते उन्हें एक गुफा दिखायी पड़ी। गुफा का द्वार अत्यन्त प्रशस्त था और भीतर घोर अंधेरा। ऐसी अज्ञात गुफा में असीम निर्भीकता के साथ दुःसाहसी इन्दर के अतिरिक्त कौन प्रवेश कर सकता है!

जलती हुई मशाल ले उसने अकेले ही उस गुफा के भीतर प्रवेश किया लेकिन मशाल बुझ गयी। अंधेरे में यथेष्ट दूरी पर गुफा के भीतर उसे अनगिन जलती हुई आँखें दिखाई पड़ीं और निश्वासों का शब्द सुनायी पड़ा। वहाँ से बहुत दूर किसी स्थान पर झर-झर पानी गिर रहा है।

अंधेरे में कोई आगे बढ़कर आता है और छुरी से इन्दर के वक्ष पर

वार करता है। इन्दर के कठिन वर्म से टकरा कर छुरी टूट जाती है। इन्दर गला टीपकर उसे मार डालता है।

उस गुफा में मरुत्त का व्यक्तिगत संरक्षक वन प्रायः पवान्न चुनी हुई गायें छिपाकर रखे हुए था। गायें धवल वर्ण की मेद पुष्ट और दुधारू थीं। इन्दर जब उन गायों को ज्यों ही लेकर आता है, हर्ष-ध्वनि होने लगती है।

शीत ऋतु जिस प्रकार वृक्षों को पत्र शून्य बना देती है, इन्दर ने उसी प्रकार शत्रुओं का सवंश विनाश कर दिया।

मरुत की गोष्ठी के गृह सुसज्जित और सुदृश्य हैं। इनके पास जीवन-यात्रा के उपकरण भी अधिक मात्रा में थे। एक प्रकोष्ठ में उस चमकती हुई वस्तु की अस्त्र-निर्माणशाला का भी पता चला। इसका प्रारंभ कुछ दिन पहले ही किया गया था।

विजयी दल के बहुत से लोगों ने सोचा था, इस बस्ती पर अधिकार कर वे लोग वहीं बस जायेंगे। लेकिन इन्दर ने प्रयोजनीय पशु, सुरा और अस्त्रों को हटाकर बाकी सब कुछ ध्वंस करने का आदेश दिया। विशाल अंचल में आग की लपटें दहक उठीं। शिशुओं को पटक-पटक कर मार डाला गया और नारियों को वन्दी बना लिया गया। चारों ओर असंख्य मृत देह बिखरी हुई थी। शत्रु दल के जिन योद्धाओं को जाल में आबद्ध किया गया था, इन्दर ने उनकी हत्या करने से मना किया। उसका हाथ-पैर बाँधकर साथ ले जाने का आदेश दिया।

गर्ग ने आकर इन्दर से पूछा, "तुम भी भल्ल की तरह दयालु हो गये। शत्रु-सैनिकों को जीवित रखना चाहते हो?"

इन्दर बोला, "नहीं, मैं भल्ल की तरह महान् नहीं हूँ। इनके संबध में मैंने दूसरी योजना बनायी है।"

"लेकिन ये लोग हमारे खाद्य-पदार्थ का ध्वस करेंगे।"

"नहीं, ये लोग हमारे खाद्य-पदार्थ का उत्पादन करेंगे।"

कुरुगोष्ठी की जिन नारियों को मरुत्-गोष्ठी के सैनिक अपहरण

करके ले गये थे उनमें से कुछेक अब भी जीवित हैं। अपने प्रियजनों को देखकर वे रोने लगीं। यहाँ आने पर उनके सन्तान हुई थीं। उन संतानों को मारने के समय उन्होंने शोक प्रकट नहीं किया।

लेकिन इन्दर के लिए सबसे बड़ा आश्चर्य यहाँ प्रतीक्षा कर रहा था। विजय-उत्सव मनाने के निमित्त योद्धाओं को आदेश दिया कि शत्रुओं के लूटे गये सोम-भण्डार का अब वे पान करें। स्वयं भी एक सोमपात्र होंठों से लगाये हुए हैं। मरुत्-गोष्ठी का सोम उन लोगों के जैसा तेज नहीं है इसलिए वे तेजस्विता के साथ कैसे युद्ध कर सकते हैं—इन्दर परिहास के साथ गर्ग से इस प्रकार का कथोपकथन कर रहा था कि अचानक उसकी दृष्टि टिकी की टिकी रह गयी। उसे जैसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा है।

उद्धार की हुई नारियों के बीच से एक शीर्णकाय पुरुष की उस ओ
आगे बढ़कर आया। हाथ उठाकर बोला, "भ्राता इन्दर, तुमने असंभ
को भी संभव बना डाला।"

ऋभु! ऋभु जीवित है! यह तो असंभव है!

इन्दर में जो पहली प्रतिक्रिया हुई वह यह कि वह क्रोध से
उठा। उसे इच्छा हुई कि सोमपात्र फेंक दे और तत्क्षण ऋभु की
कर डाले। ऋभु के जीवित रहने का अर्थ है—अपने शत्रुओं की
की है।

सोमपात्र फेंक देने के बावजूद इन्दर ने स्वयं को संयत कर
क्योंकि उसके मन में दूसरा ही विचार कौंध चुका था। वह रा को
है, ऋभु की हत्या करने से उसके पथ की बाधा दूर हो जायेगी
यह घटिया रास्ता है। यह स्वार्थ-सिद्धि का हीन उपाय है। द
नाते वह ऋभु को अनायास ही मृत्यु दण्ड दे सकता था, ले
क्योंकि रा को चाहता है इसलिए ऐसा नहीं कर पायेगा।
घृणा छिपाकर किसी तरह कहा, 'नहीं ऋभु, दरअसल असंभ
तुमने बनाया है!"

ऋभु आभार-प्रदर्शन करने और भी निकट चला आया। लेकिन तब तक इन्दर का युद्ध-विजय का गौरव तिक्त हो चुका था।

अब लौटने की बारी है। इन्दर के जो-जो सैनिक मारे गये हैं, उनकी मृत देहों को छोटी नहर में समाधिस्थ कर दिया गया। आहतों को लोग ढोकर ले जाने लगे। शत्रुओं की मृत देहों को खुले स्थानों में भेड़िये, चील और गिद्धों के खाने के लिए छोड़ दिया गया।

बन्दियों को सामने रख, विजयी सैन्य वाहिनी आनन्दोल्लास मनाती हुई आगे बढ़ रही है। लुटे गये सोम के लिए परस्पर छीना-झपटी कर रहे हैं। कुछ लोगों की दृष्टि सद्योप्राप्त गायों की ओर है कि कहीं उनमें से कोई छिटककर दूर न चली जाये।

इन्दर स्वयं भामह पर निगरानी रख आगे बढ़ रहा है। रा को यह उपहार दे इन्दर उसका मनोरंजन करेगा, कुछ देर पहले तक इस विचार से उसे उष्णता का अनुभव हुआ था। अब उसका कोई मूल्य न रहा। रा ऋभु को पुनः प्राप्त करने जा रही है। ऋभु यद्यपि पहले के ऋभु की प्रेतच्छाया जैसा प्रतीत होता है लेकिन व्यक्ति तो वही है। अब रा को भामह की कौन-सी आवश्यकता है? फिर भी इन्दर शपथ की रक्षा करने के निमित्त उसे ले जा रहा है।

जाल में फँसा भामह बहुत-कुछ पशु जैसा ही दीख रहा है। उसके अधरों के कोने में रक्त निकलकर सूख गया है। उसका विशाल शरीर रोओं से भरा है। सिर पर घने बाल हैं।

एक ऐसा समय आया कि भामह ने मोठे स्वर में कहा, "इन्दर, तुमने मेरी हत्या करने से मना क्यों किया? बन्दी होने की अपेक्षा मृत्यु का वरण करना ही मैं अधिक पसन्द करता हूँ।"

इन्दर मुस्कराकर बोला, "तुम्हें प्रसन्न करूँ, इसके लिए मैं उतावला नहीं हूँ। अभी लम्बा समय बाकी पड़ा है।"

भामह ने इन्दर की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर कहा, "युद्ध में जय-पराजय तो मनुष्य की नियति है। नियति के नियम के कारण ही हमारा

कुछ नष्ट हो गया। इस पर व्यंग्य करने की कोई आवश्यकता नहीं।
वक्ष पर अस्त्र से आघात कर मुझे यदि मार दिया जाता तो मैं वीरों
लिए निर्धारित धाम में प्रवेश कर सकता था।"

"वह धाम तुम्हारे योग्य नहीं है। तुमने कापुरुष की तरह वृक् की
या की है।

"मैंने उसके वक्ष पर ही आघात किया था। शक्ति की प्रतियोगिता
कम हो तो युद्ध में छल का सहारा लेना नियम विरुद्ध नहीं है। इन्दर,
तुम्हारा भाग्य तुम पर प्रसन्न है। हमें यदि और सात अहोरात्र समय
मिल जाता तो युद्ध में हमारी विजय होती। हम लोगों के ताम्रअस्त्र
का निर्माण हो रहा था।"

इन्दर ने अवज्ञा के साथ कहा, "वे सब अस्त्र हैं या खिलौने? एक
भी तीर मेरा वक्ष वेध नहीं सका। सुनो भामह, मैं न तो भाग्य पर
भरोसा करता हूँ और न छल का सहारा लेता हूँ। मैं मेधा और बाहुबल
पर भरोसा रखता हूँ।"

"विजयी हुए हो इसलिए अभी आत्म-प्रशंसा कर लो। इसके पहले
हम तुम्हें अर्ध-धनुर्धर के रूप में भी नहीं गिनते थे। हम केवल भल्ल
और वृक् को महत्त्व देते थे। आये दिन भल्ल दुर्बल हो गये थे—"

इन्दर ने टोका, "भल्ल कभी दुर्बल नहीं हुए थे। महानता का अर्थ
दुर्बलता नहीं है। उन्होंने मित्रता का बार-बार प्रस्ताव रखा लेकिन तुम
लोगों ने उनके प्रस्ताव को क्यों नहीं माना?"

"दो मानव गोष्ठियों में मित्रता होती हो—ऐसा कभी किसी ने सु
है? जो लोग दुर्बल हो जाते हैं वही मित्रता की याचना के बहाने तैया
करने का समय लेना चाहते हैं। भल्ल यदि दुर्बल नहीं हुए हैं तो
इस युद्ध में सम्मिलित क्यों न हुए?"

इन्दर ने भल्ल की मृत्यु का समाचार छिपा रखा। बाहु ठोंक
...ंग के साथ कहा, "इस साधारण युद्ध के लिए भल्ल के आने की

"भामह, अब क्षोभ से लाभ ही क्या ? नियति को ही स्वीकार कर लो।"

"मैंने कारु से कहा था, मरुत्त की हत्या कर वह स्वयं दलपति बन बैठे। उसे साहस नहीं हुआ। संभवतः उसने सोचा था, सुयोग मिलेगा तो मैं भी उसकी हत्या कर डालूँगा। उन दोनों की हत्या करना ही संभवतः मेरे लिए उचित था। हमारे सैनिकों को विश्वास था कि मरुत्त को दैवी शक्ति प्राप्त है। भल्ल ने हमारे वन्दियों को मुक्त कर दिया था, उसके वारे में भी उन लोगों का विचार था कि ऐसा मरुत्त के दैवी प्रभाव के कारण किया गया है। आधा पेट भोजन करते-करते वे लोग दिन-दिन दुर्वल हो गये, लेकिन विश्वास नहीं छोड़ा। यहाँ खाद्याभाव न होता तो तुम हमारे सैनिकों को इतनी सरलता से परास्त नहीं कर पाते।"

"वृक् को तुम कापुरुष की तरह हत्या नहीं करते तो हम तुम्हारे घरों में आग लगाने नहीं आते।"

"तुम लोग मेरे साथ कैसा वर्ताव करना चाहते हो ?"

"तुम्हारे गले में मजवूत तंतु वाँध तुम्हें हम पशु के समान घुमायेंगे।"

"छिः, इन्दर ! पराजित शत्रु को अपमानित करना वीरों का धर्म नहीं है।"

"तुम्हें यह पसन्द नहीं आया ? तो फिर रा के चरणों को पखारने का जल लाने के कार्य में तुम्हें नियुक्त करूँगा।"

"रा कौन है ?"

"जिसके प्रियतम सुदर्शन ऋभु को तुम अपहरण करके ले आये थे।"

"मैं निजी कारणवश कभी किसी मनुष्य से ईर्ष्या नहीं करता। मैंने केवल शत्रुओं का विनाश किया है।"

"हमारी कुरुगोष्ठी के लोगों में व्यक्तिगत क्रोध और प्रतिहिंसा अधिक मात्रा में है।"

"इन्दर, तुमसे मेरी प्रार्थना है कि अपने हाथ से मेरा प्राण ले लो। मुझे अपमान के कीचड़ में ठेल मत दो।"

"भामह, तुमने क्या यह देखा नहीं है कि वनैला हाथी जब कीचड़ में फँस जाता है तो वह कितने कौतुक का दृश्य होता है? तुम्हारे साथ वैसा ही कौतुक करने की हमारी अभिलाषा है।"

भामह का सिर चकराने लगा। जोरों से सिर हिलाकर बोला, "नहीं, तुम ऐसा नहीं कर पाओगे।"

उसने जैसे ही जाल तोड़ने की चेष्टा की कि इन्दर ने अपने लम्बे बर्छे से उसको कोंच दिया और रक्त निकलने लगा। हँसते-हँसते कहा, "अधिक उछल-कूद मत मचाओ। ऐसा करोगे तो भी मैं तुम्हें जीवित ही रखूँगा, तब हाँ, पंगु बने रहोगे।"

भामह विकट स्वर में चिल्ला उठा, "नहीं कर सकोगे, किसी भी स्थिति में ऐसा नहीं कर पाओगे।" उसने दौड़ना शुरू कर दिया।

भामह का हाथ बँधा है, कमर से सिर तक जाल से घिरा है, वह कितनी दूर जा ही सकता है? इन्दर हय दौड़ाते हुए उसके पीछे भागा और शीघ्र ही उसे पकड़ लिया। भामह के बालों को मुट्ठी से पकड़ वह दाँत पीसते हुए बोला, "अरे पामर, मैं इतनी सहजता से तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।"

मुँह से इन्दर ने यद्यपि ऐसा कहा परन्तु उसका शरीर इतना काँप रहा था जैसे वह अभी तुरन्त उसकी हत्या कर डालेगा। भामह के प्रति उसमें जो इतना आक्रोश है, इसका कारण वह स्वयं नहीं समझ पा रहा है। रा कौन-सा उपहार पाकर अधिक परितृप्त होगी—भामह को या ऋभु को? यह गजदेही मल्ल ऋभु को पकड़ कर ले गया था तो उसकी हत्या क्यों न की? ऋभु को जीवित रखने के कारण ही भामह के प्रति उसका क्रोध और भी तीव्र हो रहा है।

भामह ने छटपटाते हुए कहा, "तुमने दस योद्धाओं को अपने साथ

"भामह, अब क्षोभ से लाभ ही क्या ? नियति को ही स्वीकार कर लो।"

"मैंने कारु से कहा था, मरुत की हत्या कर वह स्वयं दलपति बन बैठे। उसे साहस नहीं हुआ। संभवतः उसने सोचा था, सुयोग मिलेगा तो मैं भी उसकी हत्या कर डालूंगा। उन दोनों की हत्या करना ही संभवतः मेरे लिए उचित था। हमारे सैनिकों को विश्वास था कि मरुत्त को दैवी शक्ति प्राप्त है। भल्ल ने हमारे वन्दियों को मुक्त कर दिया था, उसके बारे में भी उन लोगों का विचार था कि ऐसा मरुत्त के दैवी प्रभाव के कारण किया गया है। आधा पेट भोजन करते-करते वे लोग दिन-दिन दुर्बल हो गये, लेकिन विश्वास नहीं छोड़ा। यहां खाद्याभाव न होता तो तुम हमारे सैनिकों को इतनी सरलता से परास्त नहीं कर पाते।"

"वृक् की तुम कापुरुष की तरह हत्या नहीं करते तो हम तुम्हारे घरों में आग लगाने नहीं आते।"

"तुम लोग मेरे साथ कैसा वर्ताव करना चाहते हो ?"

"तुम्हारे गले में मजबूत तंतु बाँध तुम्हें हम पशु के समान घुमायेंगे।"

"छिः, इन्दर ! पराजित शत्रु को अपमानित करना वीरों का धर्म नहीं है।"

"तुम्हें यह पसन्द नहीं आया ? तो फिर रा के चरणों को पखारने का जल लाने के कार्य में तुम्हें नियुक्त करूंगा।"

"रा कौन है ?"

"जिसके प्रियतम सुदर्शन ऋभु को तुम अपहरण करके ले आये थे।"

"मैं निजी कारणवश कभी किसी मनुष्य से ईर्ष्या नहीं करता। मैंने केवल शत्रुओं का विनाश किया है।"

"हमारी कुलगोष्ठी के लोगों में व्यक्तिगत क्रोध और प्रतिहिंसा अधिक मात्रा में है।"

"इन्दर, तुमसे मेरी प्रार्थना है कि अपने हाथ से मेरा प्राण ले लो। मुझे अपमान के कीचड़ में ठेल मत दो।"

"भामह, तुमने क्या यह देखा नहीं है कि वनैला हाथी जब कीचड़ में फँस जाता है तो वह कितने कौतुक का दृश्य होता है? तुम्हारे साथ वैसा ही कौतुक करने को हमारी अभिलाषा है।"

भामह का सिर चकराने लगा। जोरों से सिर हिलाकर बोला, "नहीं, तुम ऐसा नहीं कर पाओगे।"

उसने जैसे ही जाल तोड़ने की चेष्टा की कि इन्दर ने अपने लम्बे बर्छे से उसको कोंच दिया और रक्त निकलने लगा। हँसते-हँसते कहा, "अधिक उछल-कूद मत मचाओ। ऐसा करोगे तो भी मैं तुम्हें जीवित ही रखूँगा, तब हाँ, पंगु बने रहोगे।"

भामह विकट स्वर में चिल्ला उठा, "नहीं कर सकोगे, किसी भी स्थिति में ऐसा नहीं कर पाओगे।" उसने दौड़ना शुरू कर दिया।

भामह का हाथ बँधा है, कमर से सिर तक जाल से घिरा है, वह कितनी दूर जा ही सकता है? इन्दर हय दौड़ाते हुए उसके पीछे भागा और शीघ्र ही उसे पकड़ लिया। भामह के बालों को मुट्ठी से पकड़ वह दाँत पीसते हुए बोला, "अरे पामर, मैं इतनी सहजता से तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।"

मुँह से इन्दर ने यद्यपि ऐसा कहा परन्तु उसका शरीर इतना काँप रहा था जैसे वह अभी तुरन्त उसकी हत्या कर डालेगा। भामह के प्रति उसमें जो इतना आक्रोश है, इसका कारण वह स्वयं नहीं समझ पा रहा है। रा कौन-सा उपहार पाकर अधिक परितृप्त होगी—भामह को या ऋभु को? यह गजदेही मल्ल ऋभु को पकड़ कर ले गया था तो उसकी हत्या क्यों न की? ऋभु को जीवित रखने के कारण ही भामह के प्रति उसका क्रोध और भी तीव्र हो रहा है।

भामह ने छटपटाते हुए कहा, "तुमने दस योद्धाओं को अपने साथ

ले मुझे वन्दी वनाया है। तुम अकेले द्वैरथ में आते तो मेरा सामना नहीं कर सकते थे।"

इन्दर ने अवहेलना के साथ कहा, "इसके लिए हड़वड़ी की क्या आवश्यकता है? तुममें अव भी यदि युद्ध करने की अभिलाषा है तो एक दिन मैं उसे भी पूरा कर दूँगा।"

फिर भी इन्दर भामह को वन्दी वनाकर नहीं ले जा सका। एक वार और सुयोग मिलते ही भामह हाथ छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ। इन्दर उसे पकड़े कि इसके पहले ही वह खड़े पहाड़ से नीचे कूद पड़ा। गड्ढे के वहुत नीचे भामह के विशाल शरीर के गिरने का शब्द हुआ। उसका शरीर चूर-चूर हो गया है, इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं।

गड्ढे के इतने नीचे उतर भामह की देह के वचे टुकड़ों की खोज करना अभी सम्भव नहीं है। भामह का कटा हुआ मस्तक भी ले जाना सम्भव नहीं हो सका।

इन्दर उस गड्ढे के किनारे एक क्षण तक चुपचाप खड़ा रहा। दूसरे-दूसरे योद्धा खेद प्रकट करने लगे कि उन्हें अपने हाथ से भामह की हत्या करने का सुयोग नहीं मिला। ऋभु इन्दर के पास आकर वोला, "यह अच्छा ही हुआ। शत्रु को जीवित नहीं रखना चाहिए। जीवित रहता तो भामह कव क्या कर वैठता, कौन जाने!"

इन्दर ने मोठे स्वर में कहा, "मैं उसे वन्दी वनाकर रा को भेंट करने जा रहा था। खैर, दुख की कौन-सी वात है, तुम्हें लिये जा रहा हूँ।"

युद्ध में जय प्राप्त कर लौट आने के वाद इन्दर का यश धूप की किरणों की तरह चारों ओर फैल गया है। अव वह मात्र दलपति नहीं,

वह इस गोष्ठी का प्रभु और परित्राता है। उसे देखते ही लोगों के मन में एक साथ भय और श्रद्धा का उद्रेक होता है।

उसके स्वभाव में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है। अब उसमें चंचलता और कौतुकप्रियता देखने को नहीं मिलती है। वास्तव में उसकी मानसिक स्थिति को समझना अब कठिन हो गया है। कभी वह बहुत दयालु हो जाता है और कभी बहुत ही निष्ठुर। कभी दानी बन जाता है और कभी उसकी भौहें तन जाती हैं। वह प्रसन्न होता है तो बहुत कुछ बाँट देता है। लेकिन जब तब झुंझला उठता है। लोग उसे देखते हैं तो उसकी स्तुति करने लगते हैं।

कभी किसी ने इतना बड़ा युद्ध जीता हो, ऐसा स्मरण नहीं आता। उसने शत्रुओं को न केवल पराजित किया है वरन उनकी बस्ती को उजाड़ दिया है, उनकी सारी सपत्ति का हरण कर लिया है और उनकी शक्ति नष्ट कर डाली है। पीछे के अरण्य से अब आक्रमण की कोई आशंका नहीं है। मरुत्त के जो पुत्र भाग गये हैं, वे कहीं दूसरी जगह ही बस्ती बसाने चले गये हैं।

इन्दर ने लूटी हुई संपत्ति का गोष्ठी के लोगों के बीच बंटवारा कर दिया। बन्दी योद्धाओं को दास बना लिया। जिन शुभ्रवर्ण गायों का इन्दर ने एकमात्र अपनी चेष्टा से उद्धार किया था, उन्हें भी उसने अपने उपभोग के लिए नहीं रखा। इन गायों को पाकर लोग बहुत हो प्रसन्न हैं। इन गायों के स्तनों से अमृतधारा की तरह दूध गिरता है। पहले यहाँ की गायों का रंग लाल था। लाल रंग की गाय कैसे सफेद दूध देती है, यह आश्चर्य की बात थी। अब उषा की किरण जैसे स्निग्ध रंग की गायों को देखकर उनकी आँखों को शीतलता का अनुभव होता है।

इन्दर ने पुनः प्रचुर मात्रा में सोम पीना शुरू कर दिया है। सोम के प्रति उसकी आसक्ति को लोगों ने अब उसके अधिकार के रूप में ही स्वीकार लिया है। अब स्थिति यहाँ तक आ गयी है कि लोग जब अपने घरों में सोम तैयार करते हैं—सोमलता पीसकर उसमें गाढ़ा दूध

या वार्लो मिलाकर पात्र में ढालते हैं—तो उसे एक बार इन्दर के नाम से समर्पित कर देते हैं। इन्दर का नाम लिये विना कोई सोम नहीं पीता। इस वात का पता चलने पर इन्दर प्रसन्न होता है। हर व्यक्ति इन्दर से अनुरोध करता है कि वह उसके घर पर सोमपान करे। इन्दर वीच-वीच में सहमत हो जाता है और वे अपने को धन्य समझते हैं।

इन्दर भल्ल की तरह यज्ञ के संवंध में कृपण नहीं है। उसके आदेश पर जव तव यज्ञ का आयोजन होता है। यह उसके लिए उत्सव का एक अंग है। यज्ञ के उपलक्ष्य पर जो काव्य-चर्चा होती है उसका भी वह रसास्वादन करता है। युद्ध-यात्रा के पूर्व भल्ल ने जो अग्नि जलायी थी वह अव भी प्रज्वलित है। यज्ञ के अवसर पर पुराने लोग नये-नये स्तोत्र की रचना कर उसे सुनाते हैं। इस युद्ध को लक्ष्य वनाकर इन्दर के नाम से भी कई पद्यों की रचना की गयी है। इन्दर के मनोरंजन के लिए कवि सुदास ने उन पद्यों का स्वर संयोजन किया है और उन्हें वह गा कर सुनाता है :

हे इन्द्र,
जो सनाभि (सगोत्र) और जो वाह्य (अगोत्र)
हमें उपक्षीण करते हैं
महान् द्युलोक के समान
तुम स्वयं उनके वल को तिरोहित
करते हो।
अन्यान्य लोग निकृष्ट हैं
उनके धनुषों पर आरोपित निकृष्ट
प्रत्यंचा टूट जाये।
एक दूसरा व्यक्ति कहता है :
हे इन्द्र,
हम तुम्हें चाहते हैं
हमने तुमसे सख्य प्रारंभ किया है

पुण्य के पथ से तुम
हमारा समस्त पाप
अतिक्रम करा दो
दो।
और-और लोग निकृष्ट हैं
उसके धनुषों पर आरोपित
निकृष्ट प्रत्यंचा
छिन्न-भिन्न हो जाये।

इन्दर को प्रसन्न करने के लिए कवियों के बीच नये-नये स्तव रचने की इसी प्रकार की प्रतियोगिता चलने लगती है।

पहले इन्दर इस प्रकार की स्तुतियों पर ध्यान नही देता था। अब देवताओं के बदले उसी के नाम पर स्तव रचे जाने के कारण उसके अहकार को संतोप प्राप्त होता है। अब वह आडम्बर और विलासिता पसन्द करता है।

उसके मन में जो अहंकार था कि दैवी करुणा के बदले वह स्वयं अपने कर्मो का प्रभु होगा, वह बहुत कुछ संनप्ट हो चुका है।

अब वह रा से एकान्त मे मिलने की चेप्टा नही करता। कभी-कभी रा से उसकी आँखें टकरा भी जाती हैं तो वह अपना मुंह घुमा लेता है। युद्ध से लौटने के बाद उसने पहले दिन रा से कहा था, "मैं वचन की रक्षा नही कर सका, भामह को नही ला सका। संभवतः उसकी आवश्यकता भी नहीं थी। मैं उससे भी अधिक मूल्यवान उपहार ले आया हूँ।"

ऋभु को देख रा विह्वल हो उठी थी। अपने यौवन के स्वप्न से उसने जिस ऋभु को पाला-पोसा था, यह ऋभु वैसा नहीं है। यह शीर्ण-काय, कोटर में धँसी आँखों वाला व्यक्ति ऋभु अवश्य हो है परन्तु एक बदला हुआ मनुप्य।

ऋभु ने कंपित स्वर में कहा था, "रा मैं लौट आया हूँ।" रा को उसकी ओर हाथ बढाने में दुविधा का अनुभव हुआ।

र ने कहा था, "रा, अब तुमसे मेरी कोई माँग नहीं है।"
कह कर वह मुँह घुमाकर चला आया था। उसका मन अभि-
जैसा था लेकिन वह किससे अभिमान करे!
न्दर में अब रथ चलाने का एक नया व्यसन उत्पन्न हुआ है।
ऋभु ने इन्दर के लिए एक नया शकट बना दिया है। इन्दर
में दो घोड़ों को जोतता है। घर्घर शब्द करता हुआ रथ चलता है।
सब के मन में भय जगने लगता है।
रथ पर चढ़ने का अधिकार उसने अपने आप तक सीमित नहीं रखा
। मरुत्त की तरह वह इस प्रकार की भूल नहीं कर सकता है। और-
और लोग भी अपने इच्छानुसार रथ का निर्माण कर सकते हैं। इन्दर
और-और लोगों से रथ चलाने की प्रतियोगिता कराता है। लेकिन वैसा
एक भी व्यक्ति नहीं है जो इन्दर को पराजित करने की बात सोच सके।
बलवान हवि तक ने इन्दर की श्रेष्ठता मन-ही-मन मान ली।
ऋभु और उसके दो भाई सदैव इन्दर की सेवा करने को तत्पर
रहते हैं। ऋभु को किसी प्रकार का आदेश देने में इन्दर को दुविधा
होती है। ऋभु का स्वास्थ्य अब बहुत कुछ सुधर गया है। फिर भी
उसके मन में सदैव एक भय का भाव बना रहता है। कई वर्षों तक दास
बने रहने के कारण वह उस मनोभाव से मुक्त नहीं हो पा रहा है। वह
दूसरे का आदेश पालन करना ही पसन्द करता है। इन्दर सोचता है,
अभी ऋभु जिस प्रकार उसे प्रसन्न रखने की चेष्टा करता है, कभी वह
मरुत्त को निश्चय ही इसी प्रकार प्रसन्न रखने की चेष्टा करता होगा।
यहाँ तक कि वहाँ रहने के समय उसने नये-नये शिल्प-कर्म जो सी
थे, उनकी चर्चा छिड़ने पर वह मरुत्त की भी प्रशंसा करने लगता
शिल्पियों का स्वभाव ऐसा ही होता है।
मरुत्त के योद्धाओं को इन्दर ने दास के रूप में बदल डाला है
उनसे निष्ठुरतापूर्वक काम लेता है। मकई और बालों के शस्य-उ
पर उसने अधिक जोर दिया है। वह समझ गया है कि मात्र प

के खाद्य पर निर्भर नहीं किया जा सकता। किसी भी समय पशुओं में महामारी फैल सकती है। खाद्याभाव के कारण ही मरुत्त की गोष्ठी पूर्ण तत्परता के साथ युद्ध नहीं कर सकी। अतः खाद्य का भंडार भरा हुआ रहना ही चाहिए।

दासों को खाद्य-उत्पादन कार्य में नियुक्त करने के कारण उसकी गोष्ठी में युवकों को पर्याप्त अवकाश मिल जाता है। अब वे लोग युद्ध-प्रशिक्षण और शरीर-गठन में अधिक समय लगाते हैं।

मरुत्त की उपत्यका में आक्रमण करने पर उसे जिन नये प्रकार के ताम्र अस्त्रों का पता चला था, दासों से वह उस प्रकार के अस्त्रों का भी निर्माण कराता है। ऋभु भी इस काम में सहायता करता है। मरुत्त ने बहुत ही सूक्ष्म अस्त्रों का निर्माण कराया था, इन्दर उस प्रकार की सूक्ष्मता नहीं चाहता। वह चाहता है कि अस्त्र कठिन और सुदृढ़ हो। जिनके पास बाहुबल रहता है, वे कठिन अस्त्र ही पसन्द करते हैं। कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि इन्दर पुनः एक विशाल युद्ध की तैयारियाँ कर रहा है, यद्यपि उस प्रकार के किसी युद्ध की सभावना नहीं है।

शूर लौट आये तो उसके हाथ में दलपति का भार सौंप देने की बात है। लेकिन अब कोई शूर के उद्धार या खोज करने की बात नहीं सोचता। सबको समझ में आ गया है कि इन्दर के जैसा निर्भीक नेतृत्व करने की किसी में सामर्थ्य नहीं है। इसके अतिरिक्त शूर बहुत दिनो से दिखायी नहीं पड़ा है, वह कहाँ है, कौन जाने! भल्ल की मृत्यु के बाद ही नदी बाँधने की योजना स्थगित कर दी गयी है। पत्थर के कई बड़े टुकड़े अब भी नदी में सिर उठाये खड़े हैं।

एक दिन रा ने आकर इन्दर को शूर का स्मरण दिलाया।

इन्दर उस समय पहाड़ की ऊँचाई पर एक वृक्ष के नीचे एकाकी लेटा हुआ था। उसकी दृष्टि आकाश की ओर टिकी है। निकट रखे सोम-पात्र से वह बीच-बीच में घूंट लेता है। आकाश मे हसों की पंक्तियाँ उड़ रही हैं। पंक्तिबद्ध हंस कभी माला और कभी विशाल पुष्प का

आकार धारण कर लेते हैं। इन्दर उनकी शोभा देखने में ही व्यस्त नहीं है क्योंकि वह कवि नहीं है—यह दृश्य उसके मन में कुछ और ही विचार जगा रहा है।

उसके मुखड़े पर छाँह पड़ी तो उसने मुड़कर देखा। कई लता-गुल्मों को हाथ में थामे रा खड़ी है।

उसने एक लंबी साँस लेकर कहा, "कहो वरवर्णिनी, कैसी हो ?"

रा बोली, "महाबली इन्द्र यहाँ अकेले क्यों लेटे हैं ?"

"संगिनी लाऊँ कहाँ से ?"

"हे अभीष्टवर्षी इन्द्र, तुम्हें संगिनी का कौन-सा अभाव हो सकता है ? या फिर अरुचि जग गयी है ? यह तो जैसे अग्नि को अजीर्ण रोग होने जैसी बात है !"

"तुम तो मुझे इन्दर कहकर संबोधित किया करती थी। मैं फिर इन्द्र कैसे हो गया ?"

रा ने स्वतः स्फूर्त हास्य के साथ कहा, "बाप रे, अब क्या तुम्हें साधारण व्यक्ति की तरह नाम लेकर बुलाया जा सकता है ! अब तुम यहाँ प्रधान एवं राजा हो, अब तो तुम्हारा कोई न कोई भारी-भरकम नाम होना ही चाहिए। इड़ा ने तुम्हें यह नाम दिया था। अब लोग तुम्हें इसी नाम से पुकारते हैं।"

"तुम इस नाम से न भी पुकार सकती हो।"

"किस अधिकार के बल ?"

"अच्छा, तुम्हें जो मर्जी हो उसी नाम से पुकारो। तुम अचानक इस ओर क्यों चली आयी ?"

"तुम्हें देखकर नहीं आयी हूँ। औषधि खोजने आयी थी।"

"ऋभु के लिए। ऋभु को वापस पाकर तुम संतुष्ट हो न ?"

"संतुष्ट न होने का कौन-सा कारण हो सकता है ?"

इन्दर हँस पड़ा। हँसते-हँसते उसने एक घूंट सोम पिया। मुँ पोंछकर पुनः हँसने लगा।

रा बोली, "इस प्रकार का कौतुक कर तुम मेरा अपमान करना चाहते हो ?"

इन्दर उठकर बैठ गया। हँसी रोककर बोला, "नहीं-नहीं; मुझे पुरानी याद आ गयी थी। शैशव-काल में ऋभु और मैं एक साथ खेला करते थे। अब वह मेरा सम्मान करता है। मेरे सामने माथा ऊँचा कर खड़ा तक नहीं होता। किसी समय मैं तुम्हारा कृपाकांक्षी था, अब तुम मुझे इन्द्र कहकर सबोधित करती हो। उस दिन देखा, यज्ञ के समय तुम भी मेरी स्तुति में स्वर मे स्वर मिला रही हो। यह सब क्या कौतुक की बात नहीं है ?"

"खैर, इस बहाने ही सही, तुम्हारे मुखमंडल पर कम से कम हँसी तो देखने को मिली। आये दिन तुम्हें किसी से हँसते नही देखा था।"

"रा, काल बडा निष्ठुर होता है।"

"तुम्हारे लिए वह निष्ठुर नहीं है। तुम्हें ख्याति और कीर्ति दी है।"

"मेरी ख्याति और बढेगी। मैं बहुत बड़ी कीर्ति की स्थापना करूँगा। लेकिन मैं जिसके लिए प्रार्थी हूँ, वह मुझे प्राप्त नहीं होगा। लोग मुझे और भी दूर ठेल देंगे।"

"तुम तो ख्याति और कीर्ति ही चाहते थे।"

"मेरे ललाट पर यह दाग देख रही हो न ? एक दिन धक्का देकर तुमने मुझे गिरा दिया था। मुझे युद्ध में भी कभी कोई चोट नही लगी थी। एक मात्र तुमने ही मुझे चोट पहुँचाया है। फिर भी मैं तुमसे किसी वस्तु की मांग नही कर पाऊँगा। मेरे हृदय में सत्य के समान अभिमान जगा हुआ है।"

रा जरा अनमनी जैसी हो गयी। जिस ऋभु को उसने अपने सपने में पाला-पोसा है, वह ऋभु लौटकर नहीं आया, जो लौटकर आया है वह एक अति तुच्छ साधारण व्यक्ति है, हीनता का शिकार। फिर भी रा अभी उसका परित्याग नहीं कर सकती है। करेगी तो उसकी इतने दिनों की प्रतीक्षा का कठोर व्रत मिथ्या सिद्ध हो जायेगा।

किसी एक विचित्र कारणवश वह इन्दर पर क्रुद्ध हो गयी। इन्दर उसने बल-प्रयोग का सहारा लेने से मना किया था। इन्दर उसी त को मान कर चल रहा है। इसीलिए उसे क्रोध हो रहा है। इन्दर ा उसे अब छीन नहीं सकता? उसने इन्दर को और अधिक आघात हुंचाने के उद्देश्य से कहा, "तुमने कहा था कि शूर को लौटा कर ले ाओगे, वह बात भूल बैठे? दलपति पद के लिए तुममें बहुत लोभ है? ब तुम वह स्वच्छन्द पुरुष नहीं रहे। और और लोग भय के कारण म्हें इस बात का स्मरण नहीं दिलाते। लेकिन मैं तुमसे नहीं डरती हूं।"

इन्दर बोला, "एक-एक देश से एक-एक व्यक्ति को लौटा लाना ही मेरा काम है?"

"लेकिन तुम शपथ भूल चुके हो। अब तुम स्तुति-लोभी हो गये हो।"

"नहीं, मैं शपथ नहीं भूला हूं। मैं दूसरी ही बात सोच रहा था। तुम ऊपर अंतरिक्ष की ओर ध्यान से देखो।"

रा ने अपनी भौंहें उठाकर आकाश की ओर देखा। उसका मुख-मण्डल धूप में झिलमिला रहा है। सुनहले बाल वक्ष और पीठ पर बिखरे हैं। डमरू जैसी पतली कमर पर उसका एक हाथ टिका है।

रा बोली, "हंसों की पंक्ति कितनी सुन्दर है! जैसे वे स्वर्ग के कण्ठ-हार हों।"

इन्दर बोला, "वे बहुत ऊँचाई से उड़कर चले जाते हैं। कभी यहाँ नहीं रुकते।"

"क्यों, तुम क्या उन्हें बाण से बिद्ध करना चाहते हो?"

"नहीं। तुमने क्या इस पर ध्यान दिया है कि प्रत्येक शीत ऋतु के पूर्व इस प्रकार के सहस्रों हंस सूर्योदय के देश की ओर उड़कर चले जाते हैं?"

"केवल शीत ऋतु के पूर्व ही जाते हैं?"

"हां, शीत के प्रारंभ में उड़कर चले जाते हैं और शीत समाप्त होने पर लौट आते हैं। कई दिनों से वे अविराम उड़ते चले आ रहे हैं। अर्थात् पुनः शीत ऋतु का आगमन हो रहा है। हिमपात और तिमिर आंधी पुनः हमें घर के भीतर बन्दी बना देगी। हम निश्चेष्ट हो जायेंगे। हमारे क्षुद्र स्वार्थ और कलह में वृद्धि होगी। हमारे पशु उपयुक्त खाद्य के अभाव में दुबले हो जायेंगे।"

"प्रत्येक शीत ऋतु मे हमारी यही स्थिति हो जाती है।"

"होती तो है अवश्य, परन्तु पक्षी हमें नयी सीख दे रहे हैं। कहीं न कहीं ऐसी भूमि और ऐसे जलाशय हैं, जो शीत ऋतु में भी कष्टदायक नहीं हैं। पक्षी वहां विश्राम करने जाते हैं। हम क्या वहां नहीं जा सकते ?"

"हमें पक्षियों के जैसे डैने नहीं हैं।"

"हममें नया पथ निर्माण करने की सामर्थ्य है।"

"तुम किरातों से युद्ध करने की बात सोच रहे हो ?"

"नहीं। किरातों से युद्ध करने से निरर्थक शक्ति का ह्रास होगा। दूसरी बात यह है कि वे हमें छेड़ने नहीं आते। हमें सामने की ओर पथ तैयार करना होगा। इस पहाड़ के पार जो देश है, वहां शीत ऋतु में भी पक्षियों को जाने में भय नहीं लगता। उसी सुन्दर देश में मुझे जाने की इच्छा है।"

"तुम अकेले जाओगे ?"

"रास्ते का निर्माण हो जायेगा तो सभी जा सकेंगे।"

"मैं भी नये देश में जाना चाहती हूँ।"

"तुम वहाँ जा कर प्रसन्न होगी ?"

"सोचने के साथ ही मुझमें सिहरन जगने लगती है। हम नये देश जायेंगे, नयी भूमि में विचरण करेंगे—इससे बढ़कर आनन्द और क्या हो सकता है। हे इन्द्र, तुम हमें शीघ्र ही ले चलो। हमें आनन्द प्रदान करो।"

किसी एक विचित्र कारणवश वह इन्दर पर क्रुद्ध हो गयी। इन्दर
उसने वल-प्रयोग का सहारा लेने से मना किया था। इन्दर उसी
ात को मान कर चल रहा है। इसीलिए उसे क्रोध हो रहा है। इन्दर
या उसे अव छीन नहीं सकता? उसने इन्दर को और अधिक आघात
पहुँचाने के उद्देश्य से कहा, "तुमने कहा था कि शूर को लौटा कर ले
आओगे, वह वात भूल वैठे? दलपति पद के लिए तुममें वहुत लोभ है?
अव तुम वह स्वच्छन्द पुरुष नहीं रहे। और ओर लोग भय के कारण
तुम्हें इस वात का स्मरण नहीं दिलाते। लेकिन मैं तुमसे नहीं डरती
हूँ।"

इन्दर वोला, "एक-एक देश से एक-एक व्यक्ति को लौटा लाना ही
मेरा काम है?"

"लेकिन तुम शपथ भूल चुके हो। अव तुम स्तुति-लोभी हो गये
हो।"

"नहीं, मैं शपथ नहीं भूला हूँ। मैं दूसरी ही वात सोच रहा था।
तुम ऊपर अंतरिक्ष की ओर ध्यान से देखो।"

रा ने अपनी भौंहें उठाकर आकाश की ओर देखा। उसका मुख-
मण्डल धूप में झिलमिला रहा है। सुनहले वाल वक्ष और पीठ पर
विखरे हैं। डमरू जैसी पतली कमर पर उसका एक हाथ टिका है।

रा वोली, "हंसों की पंक्ति कितनी सुन्दर है! जैसे वे स्वर्ग के कण्ठ
हार हों।"

इन्दर वोला, "वे वहुत ऊँचाई से उड़कर चले जाते हैं। कभी य
नहीं रुकते।"

"क्यों, तुम क्या उन्हें वाण से विद्ध करना चाहते हो?"

"नहीं। तुमने क्या इस पर ध्यान दिया है कि प्रत्येक शीत
के पूर्व इस प्रकार के सहस्रों हंस सूर्योदय के देश की ओर उड़कर
जाते हैं?"

"केवल शीत ऋतु के पूर्व ही जाते हैं?"

इन्दर बोला, "हे कल्याणी, तुमसे पहले ही कह चुका हूँ, मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो तुम्हारे लिए अदेय हो। तुम्हारे आनन्द वर्धन के लिए ही मैं नये पथ का संधान करूँगा।"

उसी दिन मध्याह्न काल में इन्दर शस्य खेत के पास आकर खड़ा हुआ। बहुत दिनों से वह इधर नहीं आया है। मरुत्त की उपजाति के दास ही यहाँ सब प्रकार का काम करते हैं—इसलिए पहरेदार दासों की रखवारी करते रहते हैं।

वृक् के उस पालतू भेड़िये को आजकल वृक् कहकर ही पुकारते हैं। अब वह अत्यन्त निरीह हो गया है, उसके गले में रस्सी बँधी नहीं रहती। सिसकारी देने पर वह दौड़ता हुआ चला आता है। संकेत करते ही मारे गये पशु को मुंह में लेकर पहुँचा जाता है। वह इन्दर के पास आ लाड़-प्यार पाने के लिए शब्द करने लगा।

भेड़िए को देखकर इन्दर को स्मरण हो आया, यह तो बस उस दिन की ही बात है जब वह यहाँ वृक् के निकट खड़ा था और वृक् उसका खेल देख-देखकर हंस रहा था। अब न तो वृक् जीवित है और न भल्ल— अभी वह राजाधिराज की तरह रथारोही होकर यहाँ खड़ा है। उसने एक लंबी साँस ली। प्रभुत्व में भी ग्लानि का भाव रहता है।

इन्दर को देखते ही सभी दास काम बन्द कर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनमें से जो प्रमुख था वह इन्दर की वन्दना करने लगा। इन्दर यद्यपि उन लोगों से अधिक काम लेता है परन्तु वे इस बात को समझते हैं कि इन्दर की कृपा से हो जीवित हैं। युद्ध में यदि मृत्यु का वरण करना पड़ता तो और ही बात थी। लेकिन साधारण समय में कोई मरना नहीं चाहता।

यह बात भी उनकी समझ में आ गयी है कि इन्दर ने उन लोगों की गोष्ठी को रीढ़ की हड्डी तोड़ दी है। एक अलग गोष्ठी के रूप में वे अब कभी उठकर खड़े नहीं हो सकते। इन्दर यदि सहारा नहीं देता तो उनके लिए कोई ठौर नहीं रह जाता। पहले यहाँ दास-प्रथा नहीं थी। बन्दियों

की हत्या करना ही एक मात्र नियम था। कुरुगोष्ठी के बहुतेरे लोग, उन्हें डराते रहते हैं। केवल इन्दर की कृपा के कारण ही वे जीवित बचे हुए हैं।

वे हाथ जोड़कर कहने लगे, "हे इन्द्र, आप सर्वभूत-नेता और पितरों के परित्राता हैं, आप हमें प्राण-वायु प्रदान करते हैं।"

"हे इन्द्र, आप सर्व ऐश्वर्यवान् एवं अन्नसमूह के स्वामी हैं। आपके अनुग्रह के कारण ही हमें अन्न प्राप्त होता है। अतएव हम सभी प्रकार उत्कृष्ट रूप से स्तव करते हैं।"

इन्दर कुछ देर तक चुपचाप खड़ा हो यह सब सुनता रहा। मरुत्-गोष्ठी का यह सब स्तुति-संगीत यहाँ की गोष्ठी के समान सुललित नहीं है। समझ में आ जाता है कि इन लोगों ने अधिक शब्द-चर्चा नहीं की है।

उसने हाथ उठाकर कहा, 'हे मरुद्गण, तुम लोग निर्भय होओ। शीत ऋतु आ गयी है, आज से तुम्हें शस्य के खेत में परिश्रम नहीं करना होगा। तुम लोगों की नारियों को हमने अलग रखा है—आज से तुम्हारे साथ रहने की अनुमति दे रहा हूँ। इसके बाद यदि तुम लोग मेरे प्रत्येक कार्य में मेरी सहायता करोगे तो मैं तुम्हें मित्र के रूप में स्वीकार करूँगा। तुम लोग यहाँ अलग ही वास-गृहों का निर्माण करोगे और मर्यादा के अनुसार धन का अंश पाओगे।"

मरुतों ने इन्दर की बात सुन सहमति प्रकट की। और उसके बाद एक-एक कर इन्दर के सामने नतजानु हो उसके प्रति निष्ठा-ज्ञापन करने लगे। मरुत्-गोष्ठी और कुरुगोष्ठी पूर्णतया एकाकार हो गयीं। एक प्रकार से इतने दिनों के बाद भल्ल की इच्छा पूरी हुई। लेकिन वह यह सब देखकर नहीं जा सका।

जिस पहाड़ का शिखर बहुत दिनों से झुका हुआ है, इन्दर एक दिन नी गोष्ठी के समस्त युवजन और मरुतों को लेकर वहाँ आ धमका । के बाद उसने एक असंभव प्रस्ताव रखा—इस शिखर को तोड़ देना ।

सभी विमूढ़ की तरह इन्दर की ओर निहारने लगते हैं । इन्दर ने ष्ट रूप में बताया, "मैं चाहता हूँ कि हमारी सम्मिलित चेष्टा से यह र्वत विदीर्ण हो जाये । यह बृहत् प्रस्तर स्तूप लुढ़केगा तो सीधे नदी में गिरेगा । तब यह नदी बँध जायेगी और इस प्रकार भल्ल की प्रतिज्ञा पूर्ण होगी । हमारे लिए नया रास्ता खुल जायेगा । वह नया रास्ता हमें दिगंत के उस पार ले जायेगा । वहाँ हमारे लिए नवीनतम सुख-समृद्धि प्रतीक्षा कर रही है ।"

कुरुगोष्ठी मौन में डूबी रही । मरुतों में से एक ने कहा, "हे इन्द्र, आप यह क्या कह रहे हैं ? पर्वत का एक दूसरा नाम अचल है । उसे कभी हटाया जा सकता है ? प्राचीन कहावत है, प्रकृति पर जो वस्तु जहाँ है, वहीं रहेगी; क्योंकि जो नहीं है, केवल वही संचरणशील है ।"

इन्दर बोला, "हे मरुत्, यह सब केवल मिथ्या काव्य है । अवकाश के विनोद के लिए यह सब सुनने में कोई बुरा नहीं लगता । मैं तुम लोगों को परिश्रमी रूप में ही जानता हूँ ।"

गर्ग ने कहा, "इन्दर, मैं भी मरुतों की बात का समर्थन करता हूँ । पवित्र भूमि पर आघात करने की बात तुम कैसे कर रहे हो ? जो पत्थर जुड़ा हुआ नहीं है, उसे हटाना अलग बात है । लेकिन तुम तो प्रकृति को विकृत करने की बात कर रहे हो । यदि इस पर्वत-शिखर को विचूर्ण किया ही जायेगा तो फिर वह यहाँ क्यों है ? ये पर्वत, नदी और अरण जो जहाँ हैं, सबके सब पूर्वनिर्दिष्ट हैं ।"

इन्दर ने कहा, "लेकिन मनुष्य का भविष्य पूर्वनिर्दिष्ट नहीं है गर्ग, मैं तुम्हारे जैसा ज्ञानी नहीं हूँ लेकिन इतना अवश्य समझता हूँ अपनी आवश्यकता के लिए मनुष्य जल, थल और अन्तरिक्ष में क्रा

ला सकता है। मनुष्य प्रकृति की सन्तान है, साथ-साथ उसका भोक्ता भी। सूर्यदेव उषा की सन्तान हैं साथ-साथ उषा उनकी स्त्री भी है।"

"तुम देवता से मनुष्य की तुलना कर रहे हो ?"

"देवता क्या चाहते हैं, मैं नहीं जानता। लेकिन मनुष्य क्या चाहता है, मैं जानता हूँ। शीत की असह्य अविराम हवा में मैं इस गोष्ठी की रक्षा करूँगा। हमें बहुत दूर जाना है।"

उसके बाद वह मरुतों की ओर मुड़कर बोला, "मुझे पता है कि खनन कार्य में तुम लोग निपुण हो, इसलिए तुम लोगों से सहायता की माँग कर रहा था। युद्ध करने के लिए तुम लोगों ने अरण्य के बीच पहाड़ में नहर खोदी थी। अतः भूमि को आघात पहुँचाने की दुहाई मत दो।"

और कोई किसी प्रकार की आपत्ति करे कि इसके पूर्व ही इन्दर अपने हाथ में खनित्र लेकर बोला, "सबसे पहले मैं ही श्रम करने जा रहा हूँ। तुम लोग मेरी सहायता करो।"

पर्वत का शिखर झुक आने से उसके एक किनारे एक गड्ढा बन गया था। इन्दर वहीं उछलकर पहुँचा और मिट्टी खोदने लगा। उस समय एक-एक कर कई व्यक्ति आये और सहायता करने लगे। बाकी जो लोग असमंजस में थे, वे भी दूर नहीं रह सके।

उसके बाद प्रत्येक दिन खनन-कार्य चलने लगा। उनके पास सामानों की इतनी कमी है कि पत्थर काटना युग-युगों के काम जैसा लगता है। लेकिन इन्दर का हठ ही उन लोगों के लिए सबसे अधिक शक्तिशाली अस्त्र बनकर सहायता करने लगा।

बीच-बीच में लगता है, इस प्रयास में सफलता का विचार रखना पागलपन है। परिश्रान्त हो कोई काम रोक देता है तो उसके पास आकर काम करना शुरू कर देता है। प्यास बुझाने के लिए उसने प्रचुर सोम की व्यवस्था कर दी है। सोम पीने से नये उत्साह का संचार होता है। मरुद्गण सोम को इसके पूर्व अमादक रूप में ही पीते थे एवं कृष-

। के लोगों को पवित्र सोमपान के बाद लड़खड़ाते पाते तो मन ही उनसे घृणा करते थे। अब वे लोग भी इस सोम का आस्वादन कर [illegible]-धीरे इसकी ओर आकर्षित होने लगे हैं। चारों ओर 'और सोम दो, [illegible]र सोम दो' शब्द होने लगता है। और सोमपान के बाद श्रान्ति [illegible]हीन हो वे पुनः गड्ढा खोदने लगते हैं।

इसी प्रकार एक पखवारा व्यतीत हो गया। इस बीच तीव्र हवा चलने लगी है। इन्दर आजकल मशाल जलाकर रात के समय भी काम चालू रखता है। शिखर के एक किनारे का गड्ढा अब यथेष्ट प्रशस्त हो गया है। जहाँ-जहाँ बलुआ पत्थर या मिट्टी मिल रही है, वहाँ लोग सुरंग खोद रहे हैं।

उपत्यका की कोई नारी इस ओर नहीं आती है। इस पहाड़ के नीचे लोगों का चलना-फिरना भी वर्जित है। केवल इड़ा प्रारम्भ में आपत्ति करने आयी थी। पत्थर काटने के शब्द से उसकी तल्लीनता में बाधा पड़ती है। इन्दर ने उसका ललाट चूमकर उसे समझा-बुझाकर लौटा दिया है।

पहाड़ के मध्य भाग में सुरंग खोदने के फलस्वरूप अब नाना प्रकार की अज्ञात वस्तुएं दिखायी पड़ती हैं। वहाँ पत्थर विविध वर्ण के हैं। श्रमिकों के हाथ की मशाल से एक प्रकार के हरे रंग के भंगुर पत्थर में आग लग जाती और धुआं उठने लगता है। पट-पट शब्द करती हुई व[illegible] अग्नि क्रमशः फैल जाती है। श्रमिक गण डर कर उस कन्दरा से भ[illegible] आये।

यह देखने के लिए कि बात क्या है, इन्दर स्वयं मशाल हाथ में [illegible] सुरंग के भीतर घुसा। उसने देखा, अग्नि क्रमशः प्रबल होती जा [illegible] है और पर्वत के मध्य भाग में भीषण शब्द हो रहा है। एक [illegible] विपत्ति की संभावना से इन्दर का वक्ष कंपित हो उठा। तो प्रकृति[illegible] सचमुच जीवन्त है और क्रुद्ध हो उठी है? वह क्या अपनी गोष्ठी [illegible] [illegible] बुला ले आया? वह तत्काल कन्दरा से भागकर चला [illegible]

उसने चिल्लाकर और लोगों से कहा, "तुम लोग मशाल फेंक दो। उसके बाद चलो, हम शीघ्र ही समतल की ओर चले जायें।"

बहुत देर तक उस पर्वत में शंका उन्मेषक शब्द होते रहे। झुके हुए शिखर के एक अंश को उन लोगों ने अत्यन्त क्षीण बना दिया है। बाद में भीतर किसी जलने वाले पदार्थ में आग लग जाने के कारण, कुछ देर बाद ही एक बहुत बड़ा उलट-फेर घटित हो गया।

दसों दिशाओं को प्रचण्ड निनाद से कँपाते हुए विस्फोट हुआ। इस प्रकार का शब्द किसी ने कभी नहीं सुना था। लगा, पृथ्वी के ध्वंस का समय उपस्थित हो गया है। सभी मृत्यु-भय से आकुल हो इन्दर की ओर निहारते हैं। इन्दर ही उन लोगों के लिए सुख-समृद्धि ले आया है—आज इन्दर की बुद्धि के कारण ही उनके जीवन का अन्त होगा। नारी और शिशुओं के क्रन्दन की एकतानता वायु को चिन्दी-चिन्दी कर देती है।

इन्दर पत्थर की मूरत की तरह एक ओर एकाकी खड़ा है। उसकी दृष्टि इस जलते पर्वत के शिखर की ओर टिकी है। उछलते पत्थर के ढोंके किसी भी समय उसे चोट पहुँचा सकते हैं।

रा दौड़ती हुई आयी और बोली, "इन्दर, हट जाओ। गुफा के भीतर चलो।"

इन्दर ने कहा, "देखो, ध्वंस का यह दृश्य कितना सुन्दर है!"

"यह क्या सौन्दर्य देखने का समय है? किसी भी क्षण तुम आहत हो सकते हो।"

"यदि इस गोष्ठी के सभी लोगों को मृत्यु का वरण करना है तो सबसे पहले मैं ही मरूँगा।"

दूसरे ही क्षण पुनः एक विस्फोट हुआ। पर्वत का शिखर टूट कर नदी के पानी में जाकर गिर पड़ा। बात यहीं तक सीमित नहीं रही। उस विस्फोट के धक्के से और भी बहुत सारे पत्थर छिटक कर गिर

पड़े। इधर-उधर से अविराम पत्थर गिरने लगे। लगता है, प्रकृति के राज्य में सचमुच ही एक बड़ा बदलाव आने लगा है।

शिखर जब नदी में गिरा तो पानी इतना ऊँचा उछल पड़ा जैसे आकाश का स्पर्श कर रहा हो। वर्षा की धारा के समान उस पानी ने उपत्यका के सभी लोगों को भिगो दिया। पशु-पक्षी आर्त्त-स्वर में चीत्कार करने लगे। बच्चे माँ की गोद में मुँह छिपाकर काँपने लगे।

प्रारम्भ में इन्दर की समझ में नहीं आया कि इतना कुछ घटित हो जायेगा। भय से विह्वल मनुष्य हाथ जोड़कर देवता का स्मरण करने लगे। इन्दर उनके बीच चुपचाप खड़ा रहा।

कई दिनों के बाद जब धीरे-धीरे सब कुछ शान्त हो गया तो देखा गया, भल्ल की दूसरी प्रतिज्ञा भी पूर्ण हो चुकी है, नदी दो भागों में विभक्त हो चुकी है। नदी को एक ओर बाधा पाकर पानी क्रोध से फुँफकार रहा है। दूसरी ओर सीमा लाँघकर पानी आगे बढ़ रहा है। वहाँ अनेक प्रकार की मछलियाँ और जलज प्राणी बाहर निकल आये हैं।

गर्ग इन्दर के पास आ धीरे-धीरे बोला, "तुमने वरुण देवता के शरीर पर आघात पहुँचाया है। इसकी परिणिति क्या होगी ?"

इन्दर बोला, "अपने पथ की खोज के लिए मैंने नदी को बाँध दिया है। तुम्हीं ने तो कहा था, देवताओं की इच्छा के बिना कोई काम नहीं होता। अतः इसमें भी देवताओं की सम्मति है। आज से वरुण और मेरी मित्रता की गाथा गायी जायेगी।"

"गर्ग बोला, "इन्दर, मुझे भय लग रहा है।"

"अपनी दृष्टि को स्वच्छ करो तभी तुम भय से मुक्त हो सकोगे।"

निकट ही अंगिरा का पुत्र सव्य खड़ा था। इन्दर ने बुलाकर पूछा, "क्यों सव्य, तुम्हें भी क्या भय लग रहा है ?"

सव्य ने मुग्ध भाव से इन्दर की ओर निहारते हुए कहा, "नहीं।"

उसके बाद उसने कहा "हे इन्द्र, तुमने शब्द करते हुए वायु तथा शोषक एवं परिपाककारी सूर्य के मस्तक पर जल की वर्षा की है। तुम

परिवर्तन रहित शत्रु विनाश में रत हो। तुमने आज जो काम किया है इससे पता चलता है कि तुमसे बढ़कर और कौन हो सकता है!"

इन्दर बोला, "फिर मैंने भूल नहीं की है। अपनी गोष्ठी की मैंने रक्षा की है। तुम लोग उल्लास क्यों नहीं मना रहे हो?"

प्राकृतिक विपर्यय का वहीं अन्त नही हुआ। दो दिन से बाधा प्राप्त नदी तुमुल गर्जन करने लगी। वह शब्द असंभव जैसा लग रहा था। प्रकृति मनुष्य के सामने कभी पराजय स्वीकार नहीं करेगी। कभी-कभी ऐसा लगने लगा कि वह खंडित नदी पर्वत शिखर को हटाकर पुनः एकाकार हो जायेगी। टूटे हुए पहाड़ के सेतु पर जाने का किसी को साहस नहीं हो रहा था।

तीसरे दिन यहाँ के लोगों ने एक ओर विशाल दृश्य को प्रत्यक्ष बना दिया। नदी अचानक मुड़ गयी। इस ओर की उपत्यका का अंश पर्याप्त ऊँचा रहने के कारण नदी बायीं ओर मुड़ गयी। उसके बाद वह ढालू स्थानों को खोजती हुई आगे बढ़ने लगी। वहाँ नदी अर्ध वलयाकार हो पुन. दाहिनी ओर मुड़ गयी, शूर के द्वारा खोजे गये शस्य के खेतों को बहाती हुई उस पार के पहाड़ को धक्का देने लगी।

जल और स्थल की लड़ाई चलने लगी। उस पार का पहाड़ आकार में यद्यपि बहुत विशाल था, परन्तु उसका एक भाग दुर्बल था। नदी ने उस स्थान को खोज निकाला। कई दिनों तक अविराम पहाड़ टूटता रहा। उसके बाद देखने में आया, उस पहाड़ के मध्य भाग में भी पानी बँधा हुआ पड़ा था। इस तेजस्विनी नदी की धारा उस धारा में फिसल कर गिर पड़ी—उसके बाद पहाड़ के बीच से रास्ता बनाकर पुनः बहने लगी।

प्रारम्भ में इन्दर ही भूतपूर्व नदी का सेतु पार कर अश्व दौड़ाता हुआ दूसरी ओर चला गया। अभी-अभी बने दृश्य का अवलोकन कर वह पुनः लौटकर चला आया। कौतूहल में डूबी भीड़ के सामने हाथ उठाकर बोला, "नयी नदी के किनारे से होकर बहुत अच्छे रास्ते का

निर्माण हो गया है। उसी रास्ते का पकड़ हम शूर को खोज में निकलेंगे। और, हम उस देश में चले जायेंगे जहाँ सरदियों में पक्षी चले जाते हैं। वहाँ ऊष्मा और आराम है।"

तैयारी में कुछ समय लगाने के बाद मानव की यह गोष्ठी नये देश की खोज में निकल पड़ी। सबसे आगे इन्द्र अपने दो अश्वों से चलने वाले रथ पर है, उसके बाद उसके अश्वारोही सैनिक, उसके बाद मरुत्-गण और सबसे अन्त में नारी और शिशु। पीछे से आक्रमण होने की सम्भावना नहीं है, अतः वे सामने की किसी विपत्ति की परवाह नहीं करते। उसके हाथ के कांस्य और ताम्र निर्मित अस्त्र सूर्य की रश्मि में झिलमिला रहे हैं।

बहुत दूर जाने के बाद स्मरण आया, इड़ा और कन्द उनके साथ नहीं आये हैं। अन्तिम समय में उन्हें बुला लाने का किसी को स्मरण नहीं रहा।

इन्दर ने चार अश्वारोहियों को उन्हें लाने भेज दिया। अश्वारोही निश्चित समय पर लौट आये। उन्होंने सूचना दी, इड़ा नहीं आयेगी। उसने झिड़कियाँ सुनाकर उन्हें विदा कर दिया है। अपना शिल्प-कर्म अधूरा रख वह देवलोक भी जाना नहीं चाहती। इड़ा ने अभी भल्ल की प्रतिकृति बनाकर समाप्त की है। कन्द भी इड़ा को छोड़कर कहीं नहीं जायेगा।

उस उपत्यका में बस यही एक जोड़ा मानव रह गया। और ये लोग शूर को खोजते-खोजते आगे बढ़ने लगे।

दिन-भर ये लोग रास्ता चलते रहते हैं, रात के समय अग्निकुंड तैयार कर सोने जाते हैं, उनके साथ पर्याप्त शस्त्र और पशु है, खाद्य पदार्थ की कोई कमी नहीं है। नदी उन्हें पथ दिखाती हुई जा रही है। लगातार बहुत दिनों तक यात्रा का यह क्रम चलता रहा।

इस प्रकार वे हिन्दुकुश पर्वत पारकर एक नये देश में चले आये। दूर समतल भूमि पर एक नगर का दृश्य देख वे ठिठककर खड़े हो गये।

रथ पर खड़े हो इन्दर ने आदेश दिया, "तुम लोग सिंगा और भेरी बजाओ। योद्धागण रण हुंकार करें! हम तस्करों के नाई पराये धन का अपहरण करना नहीं चाहते। हम शक्ति का परीक्षण करना चाहते हैं।

इन्दर देखना चाहता है, इस अनजान राज्य के अधिवासियों में कितनी प्रतिरोधात्मक शक्ति है। रथ और अश्व पर आरूढ़ होकर वे युद्ध करते है या नही।

कुछ देर तक तुमुल निनाद करने के बाद भी उस ओर से कोई प्रतिक्रिया नही हुई। तब इन्दर केवल अपनी अश्वारोही वाहिनी और मरुतों को साथ ले और बाकी लोगों को प्रतीक्षा करने का आदेश दे, आँधी के वेग से आगे बढ़ गया। मरुत्गण स्वभाव से ही तीव्र गति से चलने वाले होते है। वे लोग प्राय: अश्वारोहियो के साथ ही चलने लगे।

नगर के निकट पहुँचने पर भी प्राणहीन जैसा वातावरण दीख रहा है। चारों ओर कीचड़। थोड़ी दूर और आगे बढने पर यहाँ-वहाँ कई मृत पशु और शिशु दीख पड़ते हैं। प्राकृतिक ध्वंस का दृश्य चारों ओर फैला है।

कुछ दिन पूर्व नयी नदी की बाढ़ ने भयंकर दृश्य उपस्थित कर दिया है। इस आकस्मिक बाढ़ से न केवल घर-बार ही डूब गये थे, वरन शस्य नष्ट हो गया था और गाय आदि पशु मारे गये थे। अभी पानी यद्यपि कम हो गया है पर घर-घर में हाहाकार मचा हुआ है।

बाढ़ के धक्के से नगरी का अवरोध-प्राचीर टूट गया है। इन्दर दल-बल के साथ वहां घुस गया। दोनों ओर गृहों की पंक्ति है, बीच में चौड़ा रास्ता। लेकिन कहीं उन्हें कोई सबल पुरुष दिखायी नही पड़ा—कुछेक नारी और बूढ़ों का असुन्दर मुखड़ा दिखायी पड़ा।

इन्दर और उसके सहचरों ने कभी इस प्रकार के

लिया। लेकिन वे अच्छी तरह प्रतिरोधात्मक युद्ध नहीं कर सके। उनमें मनोबल नाम मात्र का भी नहीं था। पुरुषों की एक श्रेणी ऐसी प्रतीत हुई जो युद्ध-विद्या जानता ही नहीं।

युद्ध अत्यन्त संक्षेप में हुआ। इन्दर ने उनकी सेना को घेर लिया। एक अत्यन्त ही वृद्ध पुरुष, जो देखने में पुरोहित जैसा लगता था, कांपता हुआ इन्दर की ओर आया और दुर्बोध भाषा में कुछ कहने लगा।

इन्दर ने कठोर स्वर में पूछा, "शूर कहां है ?"

वृद्ध ने उस बात का कोई उत्तर न दिया और पुनः दुर्बोध भाषा में कुछ कहने लगा। वह स्वस्तिवचन है या अभिशाप, कुछ समझ में नहीं आया।

उसके बाद इन्दर ने देखा, योद्धाओं के बीच एक वर्तुलाकार विशालकाय व्यक्ति खड़ा है। उसके गले मे विविध प्रकार के उज्ज्वल पत्थरों का हार है, सिर पर पंख खुंसे हैं। यही व्यक्ति संभवतः इन लोगों का दलपति है। इस प्रकार के शूकराकृत्ति व्यक्ति को ही इन लोगों ने दलपति बनाया है, यह देखकर इन्दर को हँसी आयी।

उस दलपति ने धरती से अस्त्र उठाकर उच्च स्वर में कुछ कहा।

उसकी भाषा न समझने पर भी संकेत देखकर इन्दर ने अनुमान लगा लिया वह युद्ध के लिए उसका आह्वान कर रहा है। पराजित होने पर भी दोनों पक्ष के दलपतियों के बीच द्वन्द्व युद्ध होना संभवतः इनके यहां की प्रथा है।

इन्दर रथ से नीचे कूद पड़ा। अधरों पर व्यंग्य की हँसी ले उसके समान ही अस्त्र लेकर उसकी ओर बढ़ गया।

लेकिन इन्दर ने जितनी सरलता से उसे पराजित करने की बात सोची थी, उतनी सरलता से वैसा नहीं कर सका। इस नगराधिराजपति की देह यद्यपि स्थूल और सौष्ठवहीन है लेकिन उसमें आश्चर्यजनक शक्ति है। इन्दर के समान उसमें स्फूर्ति नहीं है परन्तु बीच-बीच

वह इन्दर पर असि से ऐसा आघात करता है कि इन्दर सँभाल नहीं । रहा है। इन्दर क्षिप्रता के साथ मुड़-मुड़कर उस पर आघात करने ा सुयोग खोज रहा है।

अचानक उस दलपति के एक प्रवल आघात से इन्दर का अस्त्र उसके हाथ से गिर पड़ता है। दलपति अपना विशाल शरीर ले इन्दर की ओर झपट रहा है।

मात्र कुछ क्षणों के लिए इन्दर स्वयं को विवश अनुभव करता है। उसके वाद हवि को अपनी सहायता के लिए झपटते देख वह सजग हो उठता है। आक्रोश से उसका प्रत्येक लोमकूप जलने लगता है। वह इन्द्र है—दूसरे की सहायता से वह अपने प्राणों की रक्षा करेगा? हवि के हाथ से अस्त्र छीन वह प्रतिपक्ष के दलपति की ओर दौड़ पड़ता है।

कुछ देर के वाद नगराधिपति परिश्रान्त हो पीछे हटने लगता है और थोड़ी देर वाद दौड़कर भागने लगता है। इन्दर उसका पीछा करते हुए वहुत दूर तक चला गया। वह नदी के किनारे पहुँच नदी में तैरते एक शकट-काष्ठ के ऊपर चढ़ने की चेष्टा कर रहा था। उसके पूर्व ही इन्दर ने जल के किनारे उसकी हत्या कर दी। उसने मृत्यु के पहले इन्दर की ओर घृणा की दृष्टि से देखते हुए कहा, "वर्वर!"

यह वात सुनकर इन्दर ने उसकी आँख पर आघात किया। स्वेद से लथपथ शरीर ले इन्दर लौट आया और अपनी वाहिनी को नगर लूटने का आदेश दिया। उस समय भी वह क्रोध से काँप रहा था। इस कुत्सित मनुष्य के हाथों वह पराजित हो सकता था, यह सोचकर उसका क्रोध दुगुना हो गया। क्रोध ही उसकी तेजस्विता है। वार-वार व: चिल्लाने लगा, "ध्वंस करो। सव कुछ ध्वंस कर डालो।"

गर्ग ने आकर उसे वाँहों में भर लिया। इन्दर का कंपित शरी देख वह कहने लगा, "शान्त होओ, शान्त होओ। युद्ध समाप्त हो चु

है। सबने हमारी अधीनता स्वीकार कर ली है। तुम सोम पात्र धारण करो और थोड़ी देर विश्राम करो।"

इन्दर ने कहा, "इन पराजित वन्दरों को बाँधकर पहले मेरे चरणों के पास पटक दो। अन्यथा मैं शान्त नहीं हो पाऊंगा।"

विपक्ष के सैनिकों को बन्दी बना लिया गया, उसके बाद वह सोम-पान करने लगा।

गर्ग ने उससे कहा, "इन्दर मैं पूरी वस्ती का भ्रमण कर आया। इन लोगों का कृतित्व सचमुच आश्चर्य में डालने वाला है। हम लोगों ने कुछ दिन पूर्व ही शस्य-बीजों को खाद्य-पदार्थ के रूप में आविष्कृत किया है, लेकिन ये लोग बहुत दिनों से इसका उपयोग करते आ रहे हैं। वे लोग इस शस्य को उपजाते हैं। उन लोगों के परिधान पर तुमने ध्यान दिया है? एक प्रकार की सूक्ष्म वस्तु से ये लोग सर्वांग ढँककर रखते हैं—इस प्रकार की वस्तु हमने कभी नहीं देखी है। इन लोगों का आवास-स्थल सुनिश्चित और शृंखलाबद्ध है। जहाँ तक भौतिक वस्तुओं का प्रश्न है, ये लोग बहुत ही उन्नत हैं, परन्तु युद्ध के मामले में ये लोग इतने अनाड़ी क्यों हैं? आत्मरक्षा में अक्षम। इन लोगों की भाषा भी वन्दर जैसी है।"

इन्दर बोला, 'आत्मरक्षा के लिए ये लोग बाहुबल या मेधा पर निर्भर करने के बदले पूजा-अर्चना करने बैठे थे, यह तुमने देखा नहीं? इन ऐश्वर्यों ने उनमें कापुरुषता ला दी है। दूसरी बात है, इनके सभी पुरुष योद्धा नहीं हैं। एक दल अस्त्र का उपयोग करता है और दूसरा दल केवल रत्न और माला धारण करने वाला है—और उन्हीं लोगों का शरीर परिपुष्ट है। ये लोग पाप में डूब गये थे और हमीं लोगों के हाथ से ध्वंस होना इनकी नियति थी।"

"हम लोगों ने इन्हें पराभूत किया है। अब इनके गृह को हमीं लोग उपयोग में लायेंगे।"

"गर्ग, मेरी ऐसी इच्छा नहीं है। कीचड़ से भरी इस नगरी को देखते ही मुझे घृणा होने लगी है। इस पाप-पंकिल नगरी में वास करने की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं है। हम उन्मुक्त प्रान्तर में दारु निर्मित कुटीर में ही वास करेंगे। इसके अतिरिक्त तुमने और एक बात पर ध्यान दिया है? आकाश में हमने जिन पक्षियों को उड़ते देखा था वे उतरकर यहाँ नहीं आये हैं। अर्थात् इससे भी सुरम्य भूमि सामने कहीं है। हम वहीं जायेंगे।"

तभी एक व्यक्ति ने एक स्वर्णमूर्त्ति लाकर इन्दर को दिखलायी। मूर्त्ति देखकर इन्दर चौंक पड़ा। पहचानने में असुविधा नहीं हुई, वह शूर के कटे मस्तक की प्रतिमूर्त्ति थी।

इन्दर ने उदास स्वर में कहा, "फिर हमें शूर का भी पता चल गया।"

दूसरे ही क्षण वह अट्टहास कर उठा। लेकिन उसकी आँखों में आँसू का आभास था। शूर को वह सचमुच ही प्यार करता था।

गर्ग बोला, "आज से तुम्हीं हमारे शूर हो।"

श्रुतकक्ष नामक एक व्यक्ति बोला, "हे इन्द्र, तुम वीरों को ही चाहते हो। तुम शूर हो, तुम धैर्यवान् हो, तुम्हारा मन सभी के आराधना के योग्य है।

"हे शूर इन्द्र, हे वज्रवान, नदीगण जिस प्रकार उदकस्थान का वर्धन करते हैं, उसी प्रकार हम स्तोत्रधारा प्रवृद्ध प्रत्येक दिन तुम्हारा वर्धन करते हैं।"

गर्ग बोला, "आज से तुम बिना किसी उपबंध के हमारे राजा हो। मैं भी तुम्हें अब इन्दर कहकर सम्बोधित नहीं करूँगा। तुम सबके इन्द्र हो।"

इन्द्र बोला, "हम शीघ्र ही इस नगरी से बाहर चले जायेंगे। एक दल हमारी नारी और शिशुओं को जाकर ले आये। पराजित सैनिकों

के बीच जो लोग स्वस्थ हैं, उन्हें दास के रूप में उपयोग में लाने के लिए बन्दी बना लो। बाकी समस्त वृद्ध और शिशुओं की हत्या कर दो—ये लोग हमारे पीछे रहेंगे अतः इनकी वंश-वृद्धि हम नहीं चाहते। यहाँ की नारियां कुरूप हैं, हमारे भोग के लिए उपयोगी नहीं होंगी—अतः उन्हें भी जीवित रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

उसके बाद नगरी में एक वीभत्स तांडव होने लगा। बहुत सारे घरों को नष्ट कर दिया गया, बहुत-सी शिल्प-सामग्रियां तोड़-फोड़ दी गयी। इन्द्र के आदेश पर सैनिक प्रत्येक गृह के भीतर प्रवेश कर लोगों को बाहर खींच लाये और नृशंसता से उनकी हत्या करने लगे। एक गृह में तेरह नारी-पुरुष और शिशु थे, तेरहों की हत्या कर दी गयी। जिस कुएँ के पास जाकर शूर ने दो नारियों को अंग-प्रक्षालन करते देखा था, ठीक उसी स्थान पर दो नारी और दो पुरुष थे, [illegible] अस्त्रों का आघात होने से दो व्यक्ति वहीं वेदी पर लुढ़क पड़े। [illegible] व्यक्तियों ने भागना चाहा, बलवान हवि ने उन्हें बर्छे से [illegible] फेंक दिया।

इन्दर बोला, "रा, इन रत्नों से शृंगार करने से तुम्हारा रूप और अधिक विकसित हो जायेगा।"

रा ने लम्बी साँस ली और कहा, "मैं किसके लिए शृंगार करूँ?"

"सबके लिए। रूप तो इस पृथ्वी की सामग्री है।"

"इन्दर, तुम मेरी ओर निहारते क्यों हो? तुम मुझसे विमुख हो।"

"इसलिए कि कहीं मुझमें दुर्बलता न आ जाये। रा मैं जानता हूँ, तुम्हें मैं प्राप्त नहीं कर पाऊँगा।"

रा निकट चली आयी, इन्दर के बाहु का स्पर्श करके बोली, "तुम्हें मेरी आँखों में कुछ दिखायी नहीं पड़ता?"

इन्द्र ने काँपते स्वर में कहा, "स्वयं को देख रहा हूँ। मेरा मुखड़ा उनमें कितना दुर्बल दीख रहा है! यदि कोई मेरा यह मुखड़ा देख ले तो मेरे आदेश का पालन नहीं करेगा। रा, इस धरती पर एकमात्र तुम्हीं हो, जिसके समक्ष मैं दुर्बल हूँ।"

रा ने स्नेह के साथ इन्द्र के भाल पर हाथ रखा।

इन्द्र बोला, "मैं अपना सब कुछ तुम्हें दे सकता हूँ। फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम मेरी नहीं हो।"

इन्द्र और कुछ नहीं बोला। वहाँ से दौड़कर चला आया।

और-और द्रव्यों का भी उसने लोगों के बीच वितरण कर दिया। वह दानी है। जो बहुदर्शी, वृद्ध, पुजारी और कवि हैं और लूटने में अक्षम, वे लोग इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए विविध प्रकार का स्तुति-वचन कहने लगे। इन्द्र ने भी हँसते हुए उनके दोनों हाथों में रत्न अलंकार भर दिये।

इसके बाद इन्द्र अपनी सेना के साथ पूर्व दिशा की ओर बढ़ने लगा। उसकी यात्रा कई दिनों तक चलती रही। रास्ते में उसने बहुत से नगर और जनपदों को ध्वस्त कर दिया। काल जिस प्रकार वस्त्र को जीर्ण

वना देता है, इन्द्र के प्रताप से भी उसी प्रकार नगर और दुर्ग उत्पन्न होने लगे ।

आगे बढ़ते-बढ़ते वे लोग एक दूसरी नदी के किनारे उपस्थित हुए। यह नदी शान्त है, पानी मीठा। यहाँ की हवा बहुत स्वच्छ है। वृक्ष फलवान हैं और भूमि उर्वर। यहाँ विश्राम करने के लिए उन लोगों ने वास-स्थान का निर्माण किया। देवी-स्वरूपा उस नदी का नाम उन्होंने सरस्वती रखा।

उसी सरस्वती नदी के तीर पर एक जनपद का गठन हुआ। वहाँ कमनीय नारियाँ पुरुषों को प्रेरणा देती हैं। पुरुष पशु-पालन और भूमि-कर्षण करते हैं। यज्ञ कुंड के चारों ओर बैठकर शान्ति और आत्मिक उन्नति के लिए देवताओं से कामना करते हुए गीत गाते हैं। अपने पराक्रम के बल उन लोगों ने स्थानीय विभिन्न मानव गोष्ठियों को अपने अधीन कर लिया है। उनकी श्रेष्ठता प्रमाणित हो चुकी है। जो इन्द्र उन लोगों के लिए ऐश्वर्य और समृद्धि ले आया, धीरे-धीरे उस पर अलौकिकता का आवरण चढ़ने लगा। अग्नि और वरुण के तुल्य उपकारी रूप में उसकी पूजा होने लगी।

जिन काव्य और संगीतों को वे अपने साथ ले आये थे, इस नयी भूमि में आने पर उसका और अधिक विकास हुआ। अपनी सम्पन्न कल्पना से वे नये-नये चमत्कार और देव-देवियों का सृजन करने लगे। नदी को भी सरस्वती के नाम से देवी के रूप में अभिहित किया गया। कवियों के कारण उनके रूप और चरित्र का भी विकास हुआ। और मनुष्यों के श्रेष्ठ गुणों का समन्वय कर उन्होंने एक परमेश्वर का निर्माण किया। मानव की मेधा की जटिलता के कारण उसकी संज्ञा क्रमशः जटिल होती गयी।

संध्यावेला में उनके यज्ञस्थल में सोम से लड़खड़ाते स्वरों में उन इस प्रकार का सुन्दर गीत सुनायी पड़ता है :

यह सब वर्तमान
एवं जो कुछ भूत या भविष्य है
वह पुरुष ही है
वह अमृत के अधिपति हैं
क्योंकि वह अन्न के द्वारा अधिरूढ़ हैं।
उनकी महिमा इतनी अधिक है
वह इसकी अपेक्षा अधिकतर हैं
समस्त भूत और एक अंश
ओर वह अंश हैं—
जो अमृत है, जो द्युलोक···